जुलाई 2017 प्रथम पक्ष

जैन प्रकाश

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का पाक्षिक मुखपत्र

पृष्ठः 52 मूल्यः 7:00 रुपये

वर्षावास 2017 की हार्दिक शुभकामनाएँ

RNI NO. - 2123/57
Date of Posting 07/08/2017
at Lodhi Road, H.O. New Delhi-110003
जुलाई 2017, प्रथम पक्ष

Postal Regn. No. DL(ND) 11/6156/2015-16-17
U(C) 66/2015-17 Licenced to Post
Without Pre-Payment
Date of Printing 04 July 2017

स्व. श्री वसंतलाल जी छाजेड जैन

श्री. विमलबाई जी छाजेड जैन

जीवन प्रकाश योजना आधार स्तम्भ

स्व. श्री वसंतलाल जी छाजेड जैन एवं श्रीमती विमलबाई छाजेड जी जैन

अहमदनगर (महाराष्ट्र)

राजस्थान के नागौर जिले से स्व. प्रतापमल जी छाजेड का परिवार महाराष्ट्र के अहमदनगर जिले में बालमटाकली नाम के कसबे में बस गया। इस परिवार के स्व. दीपचंद जी छाजेड का नाम दूर–दूर तक पहचाना जाने लगा। स्व. श्री दीपचंद जी छाजेड जैन के द्वितीय पुत्र स्व. श्री सुवालाल जी जैन वकील बने और अहमदनगर जिले के शेवगाव और पाथर्डी तहसील में वकालत करने लगे। स्व. श्री सुवालाल जी जैन के तीन पुत्र और दो पुत्रियाँ थीं। स्व. श्री बसंतलाल जैन जी, स्व. ॲड. श्री प्रेमसुख जी जैन, श्री विजयकुमार जी जैन, स्व. सौ. चंचलबाई जी जैन और सौ. जोत्सना जी जैन।

स्व. श्री बसंतलाल जी जैन ने अहमदनगर शहर में निट प्रिंट्स नाम से प्रिटिंग के व्यवसाय में अपना सिक्का जमाया। आगे चलकर उनके सुपुत्र श्री विनय जी जैन, उनकी पत्नी सौ. कविता जी जैन तथा उनके दोनों सुपुत्र श्री विनित जी जैन और विपुल जी जैन ने महाराष्ट्र के चुनिंदा प्रिंटिंग व्यावसायियों में ऊंचा स्थान प्राप्त किया है। श्री विनय जी आज महाराष्ट्र मुद्रण परिषद्, मुंबई के उत्तर विभाग के सचिव, एम.एम.पी. कॉलेज ऑफ प्रिंटिंग एण्ड रिसर्च, पनवेल के सचिव, मातोश्री वृद्धाश्रम, अहमदनगर के सचिव एवम् पूर्णवादी नागरी सहकारी बैंक, बीड़ के एडवाईज़र के रुप में कार्यरत हैं। स्व. वसंतलाल जी की सुपुत्री डॉ. वर्षा जी जैन (DM) पुणे में ही वैद्यकीय क्षेत्र में कार्यरत है। आपके पति डॉ. सुहासजी (DM) कार्डियोलॉजी में महाराष्ट्र में परिचित व्यक्तित्व है। स्व. श्री वसंतलाल जी के दूसरे सुपुत्र स्व. वर्धमान जी का ऑकस्मिक देहांत हो गया था। उनके पुत्र श्री वरुण जी पुणे में पेंट और खान–पान व्यवसाय में कार्यरत हैं। स्व. श्री प्रेमसुख जी के सुपुत्र डॉ. संजय जी मुंबई में मशहूर आर्युवेदाचार्य हैं। समूचे महाराष्ट्र में आपको मैडिकल कॉलेज में अतिथि व्याख्याता के रुप में बुलाया जाता है। दूसरे पुत्र एड. श्री मदनलाल जी ने पुणे शहर में वकालत में अपना नाम रोशन किया है और तीसरे पुत्र श्री गणेशजी पुणे में ही बिल्डिंग कंस्ट्रक्शन का कारोबार बड़ी लगन से सँभाल रहे हैं।

श्रीयुक्त विजय श्री पाथर्डी के राजनीति में एक मशहूर नाम है। आप नगर अर्बन शेडयूल्ड बैंक के कई वर्ष संचालक और चेयरमैन पद पर विभूषित रह चुके है। भाजपा के वरिष्ठ कार्यकर्त्ताओं में आपका नाम बड़े आदर से लिया जाता है। आप पाथर्डी की सुविख्यात शिक्षा संस्था श्री तिलोक जैन ज्ञान प्रसार मंडल के गत कई वर्षों से विश्वस्त और पदाधिकारी हैं। श्री विजयकुमार जी की धर्मपत्नी सौ. शकुंतलाजी पाथर्डी नगरपालिका की नगराध्यक्षा भी रह चुकी है। आपके बड़े पुत्र श्री विवेक जी पाथर्डी में खान–पान व्यवसाय में अग्रगण्य है। आपके दूसरे पुत्र डॉ. दीपकजी पुणे में वैद्यकीय क्षेत्र में कार्यरत है। श्री विजयकुमार जी की सुपुत्री सौ. हर्षाजी पुणे में ही शिक्षा क्षेत्र में अच्छा काम कर रही है। आपके दो स्कूल भी चिंचवड़, पुणे में चल रहे हैं।

स्व. वसंतलाल जी की धर्मपत्नी सौ. विमलबाई तथा स्व. श्री प्रेमसुख जी की धर्मपत्नी सौ. लीलाबाई अपने बेटों, बहुओं पोते–पोतियों और परिवार के सभी सदस्यों को मार्गदर्शन करते हुए धर्मकार्य में लिप्त रहती है। छाजेड़ परिवार महाराष्ट्र के विविध क्षेत्रों में राजकीय, सामाजिक, शैक्षणिक, धार्मिक और सेवाभावी कार्य में हमेशा अग्रसर रहता है। श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस की जीवन प्रकाश योजना के आधार स्तम्भ बनने पर छाजेड़ परिवार को हार्दिक बधाई एवं धन्यवाद।

मोहनलाल चोपड़ा जैन (राष्ट्रीय अध्यक्ष) डॉ. अशोककुमार एन.पगारिया जैन (राष्ट्रीय महामंत्री) महेन्द्र बोकरिया जैन (राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष) संजय बोथरा जैन (अध्यक्ष-जीवन प्रकाश योजना) लादुलाल बाफना जैन (मंत्री-जीवन प्रकाश योजना)

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस
प्रधान कार्यालय : जैन भवन, 12, शहीद भगतसिंह मार्ग, गोल मार्किट, नई दिल्ली-110001

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस (रजि.) के लिए सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक डॉ. अशोककुमार एन. पगारिया जैन द्वारा जय भारत प्रिंटिंग प्रेस, 1526, वेस्ट रोहतास नगर, शाहदरा, नई दिल्ली से मुद्रित एवं जैन भवन, 12-शहीद भगतसिंह मार्ग, नई दिल्ली- 110 001 से प्रकाशित

श्रमण संघीय एवं जैन कॉन्फ्रेंस की आध्यात्मिक, सामाजिक गतिविधियाँ

जैन प्रकाश

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का पाक्षिक मुखपत्र

श्रमणसंघ निर्देशः जैन धर्म प्रचारकः, समाजोन्नतये नित्यं, जैन प्रकाश उद्यतः।
स्थानकवासिजैनानां कॉन्फ्रेंसनामविश्रुता, समाजोत्थानकार्येषु संस्थेयमस्ति तत्परा।।

वर्ष-60 | अंक-13 | जुलाई 2017 | प्रथम पक्ष | 07-08 जुलाई | मूल्य एक प्रति 7 रुपये

प्रधान सम्पादक
अशोककुमार एन. पगारिया जैन
सम्पादन सहयोगी
शेर सिंह जैन
बालचंद खरवड़ जैन

केन्द्रीय कार्यालय

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस
नई दिल्ली
जैन भवन
12, शहीद भगत सिंह मार्ग
गोल मार्केट, नई दिल्ली-110 001
दूरभाषः 011 - 23363729, 23365420
फैक्स : 011 - 23344380
E - mail
aissjc1906@gmail.com
Website
www.jainconference.org

जैन कॉन्फ्रेंस की आजीवन सदस्यता हेतु शुल्क

संस्थागत	रु. 750/-
व्यक्तिगत	रु. 1000/-
पति-पत्नी के लिए	रु. 1500/-
जैन प्रकाश हेतु आजीवन सदस्यता	
12 वर्ष	रु. 1000/-

अनुक्रमणिका

सम्पादकीय	श्री अशोककुमार एन. पगारिया जैन	07
अध्यक्षीय उद्‌गार	श्री मोहनलाल चोपड़ा जैन	09
तीनों लोकों का राज्य...	पू. श्री शिव मुनि जी म.	10
गुरु के प्रति श्रद्धा...	पू. डॉ. श्री पुष्पेन्द्र मुनि जी म.	16
जिनकी सेवाओं ने किया...	पू. श्री वरुण मुनि जी म.	17
आत्म गौरव और नियति...	पू. डॉ. प्रमोदकुंवर जी म.	18
किसान का आत्म विश्वास...	पू. श्री युगल निधि कृपा श्री जी म.	20
आगामी चातुर्मास के शुभ...	श्री मनोहर काँठेड जैन	22
राजस्थान प्र.पू. गुरुमाता...	श्री सुशील कुमार सुराणा जैन	23
स्वतंत्रता का आनंद	डॉ. दिलीप धींग	24
चातुर्मास महापर्व	श्री प्रफुल्ल कुमार सी कोटेचा	26
उपाध्याय पू. श्री केवल....	श्री अशोक कुमार जैन	27
मैट्रिकोत्तर छात्रवृत्ति	श्री संदीप भण्डारी जैन	28
भगवान महावीर मैमोरियल....	श्री राजीव जैन सीए	30
चातुर्मास आत्मकल्याणक	सौ. शुभांगी मनोजकुमार कात्रेला	33
महिला शाखा द्वारा आयोजित गतिविधियाँ		35
समाचार प्रकाश		36
शोक समाचार		48

सम्पादक एवं जैन कॉन्फ्रेंस का लेखक के विचारों से सहमत होना अनिवार्य नहीं है। कृपया मौलिक विचार ही प्रेषित करें। किसी लेखक या पुस्तक से ली गई सामग्री का आभार अवश्य प्रकट करें। लेख एक पृष्ठ तक सीमित रखें तथा अपना नाम, पता एवं मोबाईल नंबर अवश्य लिखें। समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र नई दिल्ली होगा।

श्रमण संघीय पदाधिकारी मुनिराजों के नाम

श्रमण संघ के चतुर्थ पट्टधर युग प्रधान, आगम अतिधन्वा,
आचार्य सम्राट् डॉ. श्री शिवमुनि जी महाराज
युवाचार्य श्री महेन्द्र ऋषि जी महाराज

उपाध्याय मण्डलः
श्री विशाल मुनि जी महाराज 'वाचनाचार्य'
श्री मूलचंद जी महाराज
श्री रमेश मुनि जी महाराज
श्री जितेन्द्र मुनि जी महाराज
श्री प्रवीण ऋषि जी महाराज
श्री रवीन्द्र मुनि जी महाराज

प्रवर्तक मण्डलः
श्री रूपचंद जी महाराज 'रजत'
श्री रमेश मुनि जी महाराज
श्री कुन्दन ऋषि जी महाराज
श्री सुमन मुनि जी महाराज
श्री रतन मुनि जी महाराज
श्री मदन मुनि जी महाराज
श्री प्रकाश मुनि जी महाराज 'निर्भय'
डॉ. श्री राजेन्द्र मुनि जी महाराज

महामंत्री - श्री सौभाग्य मुनि जी महाराज 'कुमुद'

मंत्री मण्डलः
श्री शिरीष मुनि जी महाराज
(शिवाचार्य मुख्य सचिव)
श्री आशीष मुनि जी महाराज
श्री कमल मुनि जी महाराज 'कमलेश'

सलाहकार मण्डलः
श्री सुमतिप्रकाश मुनि जी महाराज
श्री सहज मुनि जी महाराज
श्री सुकन मुनि जी महाराज
श्री सुरेश मुनि जी महाराज 'शास्त्री'
श्री तारक ऋषि जी महाराज
श्री रमणीक मुनि जी महाराज
श्री दिनेश मुनि जी महाराज
श्री विनय मुनि जी महाराज 'भीम'
श्री राम मुनि जी महाराज 'निर्भय'

प्रवर्तिनी मण्डलः
श्री ज्ञानप्रभा जी महाराज
श्री चंदना जी महाराज
श्री सुधा जी महाराज
श्री सुप्रभा जी महाराज
श्री सरिता जी महाराज

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली

विश्वस्त मण्डल (2011-2017)

1. श्री केसरीमल बुरड़ जैन, बैंगलोर - चेयरमैन
2. श्री कांतिलाल जैन, मुंबई - सदस्य
3. श्री नेमीचंद चोपड़ा जैन, पाली - सदस्य
4. श्री राजेन्द्र कीमती जैन, हैदराबाद - सदस्य
5. श्री राजेन्द्र प्रसाद कोठारी जैन, बैंगलोर - सदस्य
6. श्री शेर सिंह जैन, दिल्ली - सदस्य
7. श्री चन्दनमल चोरड़िया जैन, इन्दौर - सदस्य
8. श्री मोहनलाल चोपड़ा जैन, नासिक - सदस्य
9. श्री पारस छाजेड़ जैन, मुंबई - सदस्य
10. श्री रमेश चंद जैन (काहनी), दिल्ली - सदस्य

पदेन सदस्य -

11. श्री अविनाश चोरड़िया जैन - पदेन सदस्य
12. श्री बालचंद खरवड़ जैन - पदेन सदस्य
13. श्री नेमनाथ जैन, इन्दौर - पदेन सदस्य
14. श्री रमेश भण्डारी जैन, इन्दौर - पदेन सदस्य
15. डॉ. अशोककुमार एन. पगारिया जैन - पदेन सदस्य

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली के पदाधिकारीगण (वर्ष 2016-2018)

	एस.टी.डी.	दूरभाष कार्यालय	दूरभाष निवास	मोबाइल	फैक्स
राष्ट्रीय अध्यक्ष :					
श्री मोहनलाल चोपड़ा जैन, नाशिक	0253	2461546, 2465569	2460026, 2461546	09423962818 09423963100	2461546
निवर्तमान अध्यक्ष :					
श्री नेमनाथ जैन, इंदौर	0731	401157, 4011111		09303232777	4011110
चेयरमैन विश्वस्त मण्डल :					
श्री केसरीमल बुरड़ जैन, बैंगलोर	080	25475895, 25478567	25475901, 25475695	09844152853	41250211
पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्षगण :					
श्री जे. डी. जैन, गाजियाबाद	0120	2706100	2750100	09810006462	
श्री नेमीचन्द चोपड़ा जैन, पाली	02932	280898,280899	222125,325125	09829025729	222125
श्री सुवालाल बाफना जैन, धुले	02562	232033, 233133	235544, 235555	09422296155	
प्रमुख मार्गदर्शक :					
श्री कान्तिलाल एच. जैन, मुंबई	022	26398752	26352434	09821033225	26356983
श्री अविनाश चोरड़िया जैन, दिल्ली	011	43573099,43573499		09313813899	23346899
श्री रामकुमार जैन, लुधियाना	0161	2449493, 2447538	2448714, 4413040	09814002335	2449957
श्री चंदनमल चोरड़िया जैन, इन्दौर	0731	2540914	2540900	09826022621	
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष :					
श्री विलास लोढा जैन (वरिष्ठ), अहमदनगर				09960666065	
श्री बालचंद खरवड़ जैन, मुंबई	022	29255921, 29250508	25222104	09821668548	29200223
श्री भंवरलाल डी. बोहरा जैन, मोलेला (राज.)				09324556349	
श्री ओंकारसिंह सिरोया जैन, उदयपुर	0294	2414033	2410374	09414167574	
श्री बालासाहेब चोरड़िया जैन, मुंबई	022	26367681	26367381	09324122233	
श्री तनसुख झामड़ जैन, औरंगाबाद	0240	2337015, 2324811	2480979	09822659910	
श्री रमेश भण्डारी जैन, इंदौर	0731	460069 4070069		09302103817	2460069
श्री विमलप्रकाश जैन, जालंधर	0181	5001111, 5019611		09815184311	
श्री भंवरलाल भण्डारी जैन, हैदराबाद				09440897417	
श्री बी. शांतिलाल पोखरना जैन, बैंगलोर			9845155799	09342535887	
श्री जगदीश चन्द्र जैन, पानीपत	0180	4009181		09896200081	
राष्ट्रीय महामंत्री :					
डॉ. अशोककुमार एन. पगारिया जैन, पुणे	020	46703433	09422036831	09028736831	
राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष :					
श्री महेन्द्र बोकरिया जैन, दिल्ली	011	43573099, 43573499		09868125710	23346899
राष्ट्रीय मंत्री :					
श्री विमल जैन, अम्बाला	0171	3294322	09216701008	09466701008	
श्री संजय जैन, 'निशा' लुधियाना	0161	2621237		09417253101	
श्री कंवरलाल सूर्या जैन, भीलवाड़ा	01482	236641	239104	09414113056	
श्री सोहनलाल भण्डारी जैन, नाशिक				09823079708	
श्री ललित मोदी जैन, नाशिक	0253	2599400	2599500	09422246500	
श्री जयकुमार जैन, दिल्ली	011	27372290		09810672111	
श्री विजय डागा जैन, मुंबई	022	28470384	28398165	09821095976	
श्री पारस दुग्गड़ जैन, धुले	02562	278519		09423193447	
श्री सुशील जैन, गाजियाबाद				09810078214	
श्री आनंद कोठारी जैन, बैंगलोर	080	28538338		09341234176	
श्री प्रसन्नकुमार संचेती जैन, चेन्नई				09035010666	
श्री सागर सांखला जैन, भोसरी				08888090999	

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली के पदाधिकारीगण (वर्ष 2016-2018)

राष्ट्रीय कानूनी सलाहकार मंत्री **श्री दिनेश एम. सुराणा जैन,** दिल्ली	011	27296131		09310054428	
राष्ट्रीय प्रचार - प्रसार मंत्री : **श्री सुभाष जैन 'लिली',** मंगलदेश (पंजाब) **श्री रिखवलाल सांखला जैन,** मुंबई				09814699393 09820668898	
राष्ट्रीय युवा शाखा : अध्यक्ष- **श्री शशिकुमार कर्नावट जैन 'पिन्टू',** मालेगांव महामंत्री- **श्री रवि मदनलाल लोढ़ा जैन,** औरंगाबाद	0240		2338224	09823955515 09822276008	
राष्ट्रीय महिला शाखा : अध्यक्षा - **श्रीमती रूचिरा ललित सुराणा जैन,** मुंबई महामंत्री - **श्रीमती विनिता राजेन्द्र ओरड़िया जैन,** सूरत			09423966963	09820004079 09426115241	
जीवन प्रकाश योजना : अध्यक्ष - **संजय बोथरा जैन,** घोटी मंत्री - **श्री लादुलाल बाफना जैन,** मुंबई				09822596781 09833866852	
जीव दया योजना : अध्यक्ष - **श्री प्रकाश सिंघवी जैन,** सूरत मंत्री - **श्री छितरमल रांका जैन,** सूरत				09879550981 08980018801	
मानव सेवा योजना : अध्यक्ष - **श्री महेश डाकोलिया जैन,** इंदौर मंत्री - **श्री राजेन्द्र लोढ़ा जैन,** इन्दौर	0731 0731	2531066 28753681	2970666 2780090, 2785232	07773866000 09425062147	531066
ज्ञान प्रकाश योजना : अध्यक्ष - **श्री भंवरलाल पगारिया जैन,** बैंगलोर मंत्री - **श्री अशोक कुमार धोका जैन,** बैंगलोर				09448238429 09844058123	
वैय्यावच्च समिति : अध्यक्ष - **श्री कांतिलाल चोपड़ा जैन,** नाशिक मंत्री - **श्री महावीर नाहर जैन,** वड़गांवशेरी, पुणे	0253	2575799		09422944800 09822283538	

:: सम्माननीय प्रांतीय अध्यक्ष मण्डल ::

श्री आनन्दमल छल्लानी जैन (तमिलनाडु)	मो. : 098410 30035
श्री महावीरचंद अलिजार जैन (आंध्र प्रदेश)	मो. : 094924 44444
श्री सुरेशचन्द छल्लाणी जैन (कर्नाटक)	मो. : 093412 32573
श्री अतुल जैन (दिल्ली)	मो. : 098110 75336
श्री विनय जैन (हरियाणा)	मो. : 086075 00001
श्री राकेश जैन 'लक्की' (पंजाब)	मो. : 098150 20661
श्री मनमोहन जैन (उत्तर प्रदेश)	मो. : 098370 67082
श्री विमल तातेड़ जैन (मध्य प्रदेश)	मो. : 098260 62838
श्री नेमीचंद धाकड़ जैन (राजस्थान)	मो. : 094220 74172
डॉ. गुमानसिंह पीपाड़ा जैन (पश्चिम बंगाल)	मो. : 098300 30774
श्री सतीश नारायणदास लोढ़ा जैन (महाराष्ट्र)	मो. : 094222 22138
श्री कांतिलाल बोथरा जैन (मुंबई-पुणे)	मो. : 094223 05755
श्री चन्द्रेश आर. कच्छारा जैन (गुजरात)	मो. : 095958 91111

:: सम्माननीय प्रांतीय महामंत्री मण्डल ::

श्री महावीरचन्द बोहरा जैन (तमिलनाडु)	मो. : 096772 47246
श्री दिलीप कुमार धारीवाल जैन (आन्ध्र प्रदेश)	मो. : 098480 54130
श्री मनोहरलाल लुकड़ जैन (कर्नाटक)	मो. : 098806 28555
श्री जसवंत जैन (दिल्ली)	मो. : 098104 35108
श्री राजेन्द्र जैन (हरियाणा)	मो. : 099963 33388
श्री अरुण जैन (पंजाब)	मो. : 098155 66885
डॉ. रश्मिकांत जैन (उत्तर प्रदेश)	मो. : 098083 79242
श्री संजय नवलखा जैन (मध्य प्रदेश)	मो. : 094251 01230
श्री बलवंत सिंह हींगड़ जैन (राजस्थान)	मो. : 098297 85197
श्री आनंद मेहता जैन (पश्चिम बंगाल)	मो. : 098302 49151
श्री मनोजकुमार एम. सेटिया जैन (महाराष्ट्र)	मो. : 094222 21511
श्री रविन्द्र रमनलाल लुकड़ जैन (मुंबई-पुणे)	मो. : 098231 29411
श्री दिनेश संचेती जैन (गुजरात)	मो. : 093769 01329

सम्पादकीय

संत पधारे जैसे, भगवंत पधारे !

– **डॉ. अशोककुमार एन. पगारिया जैन,** राष्ट्रीय महामंत्री, जैन कॉन्फ्रेंस
E-mail : ashokpagariyaandco@gmail.com

प्रिय पाठक भाईयों एवं बहनों !

सादर जय जिनेन्द्र !

सभी ओर संत-सतियों के चातुर्मास प्रवेश समारोह का माहौल है। दिनांक 24 जून से दिनांक 8 जुलाई तक चातुर्मास प्रवेश का कार्यक्रम बड़े हर्षोल्लास से सम्पन्न होगा। **"साधु-संत येती घरा, तोची दिवाली दशरा"** ऐसी मराठी में कहावत है और वह सही है कि संत-सतियाँ जब हमारे गाँव में आती हैं तो पूरा महौल पवित्र, पावन, मंगलमय और खुशहाल होता है संत पधारे जैसे भगवान पधारे' यह भाव हर श्रावक-श्राविका के मन में होता है। बड़े उमंग और उत्साह के साथ-साथ संत-सतियों का स्वागत हम चातुर्मास प्रवेश के सुनहरे अवसर पर करते हैं।

चातुर्मास जैन धर्म की बहुत बड़ी उपलब्धी है। भारतीय संस्कृति विश्व में सबसे पवित्र और महान संस्कृति है। इस देश में अनेकों धर्मों के माध्यम से संस्कृति का निर्ववहन होता है। हमें सबसे महान, त्याग, तपस्या, जप और अहिंसा, अनेकांतवाद का संदेश देने वाले जैन धर्म में जन्म मिला है। यह हमारे सौभाग्य की बात है और यही ऐसा एक धर्म है जिसमें चातुर्मास में लगातार 120 दिन संत-सतियों की अमृतवाणी जिनवाणी, सुनने का अवसर हमें मिलता है।

भगवान महावीर की वाणी में आज भी हर समस्या का समाधान है। भ्रष्टाचार के अपरिग्रह, वाद-विवाद संघर्ष के लिए अनेकांतवाद, हिंसावाद के लिए अहिंसा, शरीर स्वास्थ्य के लिए तपस्या, मन की शांति के लिए सामायिक, प्रतिक्रमण एवं ध्यान जैसी धार्मिक क्रियाएं इन समस्याओं का समाधान है। बस जरुरत है इन सभी मूल्यों को आचरण में लाने की। चलो हम संकल्प करें, थोड़ा सा प्रयास करें, भगवान महावीर को अंशतः क्यों न हो आचरण में उतारें और जीवन को सफल बनाये।

जहाँ पर भी संत-सतियों के चातुर्मास हो रहे हैं उन सभी श्रावक संघों के अध्यक्ष एवं पदाधिकारियों को सफल चातुर्मास के लिए ढ़ेर सारी शुभकामनाएँ।

आप सभी ध्यान रखिएः-

i. चातुर्मास में आड़म्बर एवं दिखावा न हो।

ii. तपस्वी तथा दानदाता छोड़कर किसी का सम्मान शाल एवं माला से न हो, शाब्दिक रुप से एवं जय जिनेन्द्र के माध्यम से हो तो बेहतर है।

iii. गौतम प्रसादी का आयोजन केवल आवश्यकतानुसार ही हो।

iv. प्रवचन की व्यवस्था सुचारु रुप से हो, ताकि श्रावक-श्राविकाएं प्रवचन का लाभ ठीक तरह से ले सकें।

vi. युवा साथियों को स्थानक की ओर, जिनवाणी की ओर, धर्म की ओर आकर्षित करने हेतु उनके लिए उपयुक्त ऐसे कार्यक्रमों का विशेष आयोजन हो।

vii. निमंत्रण-पत्र, पत्रिकाएँ केवल जानकारी के

लिए हो, ना कि दिखावे के लिए।

संत-सतियाँ, जैन कॉन्फ्रेंस तथा श्रावक-श्राविकाओं ने चातुर्मास हेतु ऐसे कुछ नियमों का गठन किया है उनका पालन हो। अपने यहाँ के चातुर्मास की प्रमुख कार्यक्रमों की जानकारी 'प्रेस नोट' के माध्यम से हमें भेजने का कष्ट करें ताकि यथा समय जगह की उपलब्धि के अनुसार हम प्रकाशित करा सके। पुनश्चः आप सभी को वर्षावास की ढ़ेर सारी शुभकानानाएं

"बसंत आने से बहारें खिल जाती हैं और संतों की अमृतवाणी से मन की कली खिल जाती है"

सभी छात्र-छात्राओं ने अलग-अलग विद्यालयों में प्रवेश लिया होगा? नियमित रुप से अध्यापन भी शुरु हुआ होगा। इस अंक में एस. एस. सी. के पश्चात मिलने वाली सभी स्कॉलरशिप योजनाओं की जानकारी भी दी गई है। अल्पसंख्यक समाज के लिए सरकार की योजनाओं के बारे में श्री संदीप भंडारी जी का लेख अवश्य पढ़िए और स्कॉलरशिप के आवेदन-पत्र सही समय पर दाखिल करिए। जैन कॉन्फ्रेंस की जीवन प्रकाश योजना के माध्यम से छात्रों को उच्च शिक्षा हेतु प्रवेश फीस भरने हेतु अर्थ-सहायता की जाती है और जैन कॉन्फ्रेंस की वेबसाईट (www.jainconference.org) से **'जीवन प्रकाश योजना'** का आवेदन-पत्र की प्रति निकालिए और साथ में मार्कशीट, जहाँ पर प्रवेश लिया है उस कॉलेज की फीस के बारे में पत्र एवं एडमिशन रसीद के साथ जैन भवन, नई दिल्ली में भेजिए। आपके आवेदन को हम तुरंत जीवन प्रकाश योजना के अध्यक्ष जी एवं मंत्री जी को भेजकर, उनसे सिफारिश लेकर आपको धनादेश भेजेंगे। मैं सभी छात्र-छात्राओं को इस वर्ष की पढ़ाई के लिए ढ़ेर सारी शुभकामनाएँ देता हूँ।

दिनांक 1 जुलाई 2017 से जीएसटी शुरु हो रहा है। वस्तु सेवा कर (GST) शुरु करने का क्रांतिकारी निर्णय माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्रजी ने लिया। १०३ देशों ने जीएसटी की प्रणाली लगू की है और ३७ देश जीएसटी प्रणाली लागू करने के पथ पर है। **'एक देश एक कर'** यह जीएसटी के माध्यम से होने वाला है। लेकिन जीएसटी के कई प्रावधान तो कठिन एवम् व्यापारियों के लिए तकलीफ देने वाले है।

जैसे सेट ऑफ, 37 रिटर्न, रिफण्ड़ की पद्धति, अलग-अलग प्रावधानों में लगाया गया जुर्माना आदि प्रावधानों को सुलभ बनाने की आवश्यकता है। शुरु-शुरु में तकलीफ होगी, लेकिन कुछ समय के बाद जीएसटी वरदान साबित होगी। सभी व्यापारी, उद्यमी एवं करदाताओं को जीएसटी के लिए शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ। अगले अंक में जीएसटी विषय पर विशेष लेख प्रकाशित किया जाएगा, इस बात का ध्यान रखें।

इस पखवाड़े में पू. श्री शुक्लचंद जी म. सा. दीक्षा दिवस, मालव केसरी पू. श्री सौभाग्यमल जी म.सा. स्मृति दिवस है। सभी गुरु-भगवंतों को वंदन-नमन और अभिवादन!!!

।।नमो लाए सव्व साहूणं।। ✧✧

जैन अल्पसंख्यक छात्रों के लिए आवश्यक सूचना

सभी जानते होंगे अभी नूतन विद्यार्थियों के स्कूल/कालेज में प्रवेश प्रक्रिया शुरू हो चुकी है। सभी माता-पिता ध्यान रखें नीचे दिये गये कुछ बातें

1. बच्चे के प्रवेश के वक्त बच्चों का दाखला (एल. सी.) बहुत जरुरी है। उसमें बच्चों की सम्पूर्ण जानकारी जैन धर्म के साथ-साथ लिखी होती है। सबसे पहले सभी जैन छात्रों के लिये उनके नाम के पहले जैन लगायें ना कि गौत्र। उदाहरण के लिये छात्र का नाम - माता और पिता के नाम के साथ 'जैन' शब्द जुड़ा होना चाहिए।

- डॉ. प्रो. अशोककुमार एन पगारिया जैन

अध्यक्षीय उद्गार

इस चातुर्मास काल में रचनात्मक बनें

– **मोहनलाल चोपड़ा जैन,** राष्ट्रीय अध्यक्ष, जैन कॉन्फ्रेंस
E-mail : chopdagroup@gmail.com

सम सम्माननीय बन्धुओं बहिनों!
सादर जय जिनेन्द्र!

स्थानकवासी जैन समाज प्रतिवर्ष की भांति स्वाभाविक रुप से तैयार है, वर्ष 2017 के चातुर्मास काल के स्वागत के लिए। स्वागत मन से है, तन से है तथा विचारों से भी है। तन-मन-धन विचारों की समर्पणता की बातों का एहसास कितना सुखद होता है। चातुर्मास शब्द की अभिव्यक्ति जहां धार्मिक उन्माद को तरंगित करती हैं, वहीं हमें साामाजिक मूल्यों के प्रति सजग भी करती है। चातुर्मास काल में साधु-साध्वी वर्ग धर्म संदेशों के माध्यम से समाज को जहां सराबोर करता है, वहीं तप-जप की श्रेष्ठ क्रियायें भी इस दौरान अपने चरम पर रहती हैं। संपूर्ण जैन समाज इस दौरान लौकिक व अलौकिक दृष्टि से आध्यात्मिकता के वातावरण में समाविष्ट हो जाता है। मानसिकताएं धार्मिक उन्माद से आच्छादित होने लगती हैं। चातुर्मास काल की यह एक उत्कृष्ट उपलब्धि मानी जा सकती है। सत्य, अहिंसा, मैत्री व त्याग भावना की मानसिकता की परख भी इस दौरान विशेष रूप से श्रावक-श्राविका वर्ग में होने लगती है। तन-मन में स्फूर्ति एवं नवीन उर्जा का संचार होने लगता है, परन्तु विचारणीय पहलू यह है कि यह स्फूर्ति व ऊर्जा इस पावन चातुर्मास काल के पश्चात् नदारद सी क्यों होने लगती है? बहुत जरुरी है कि उस ऊर्जा को संचित किया जाए तथा इसे कदापि जीवन मूल्यों के बीच से नदारद न होने दिया जाए, क्योंकि धर्म आराधना द्वारा ही व्यक्ति की सोच विनम्र व सम्यक् बनती है।

क्षेत्रों में विराजित साधु-साध्वी जी महाराज समाज की अंतर्चेतना को उद्वेलित करते हैं कि वे साधना द्वारा स्वयं को श्रेष्ठ बनाएं। जैन कॉन्फ्रेंस के अध्यक्ष पद पर होने के नाते मैं समस्त श्रमण-श्रमणी वर्ग से निवेदन करता हूँ कि वे वर्ष 2017 के इस चातुर्मास में समाज को ऐसी दृष्टि प्रदान करें कि विकृत होती मानसिकता को सदृष्टि मिले। आज के युवा वर्ग को सतत् प्रेरणा के साथ रचनात्मक कार्यों की प्रेरणा भी मिले, ताकि उनके कदम बढ़ चलें, सामाजिकता की ओर। चातुर्मास की शुरुआत होने जा रही है, आप सभी बंधुवर स्वयं को आध्यात्मिकता के आलोक में प्ररुपित तो करें, साथ ही देखें व आत्म चिंतन करें कि अध्यात्म के इस आलोक में समाज हित के लिए आप स्वयं को किस रूप में तैयार कर चुके है। विचारें तथा समाज उत्थान की कोशिशों में हमसफर बनें, चलें, पर केवल चलें न अपितु रचनात्मक बनें।

वर्ष 2017-18 के वार्षिक शिक्षण सत्र का शुभारंभ भी चातुर्मास काल के साथ-साथ जुलाई माह से प्रारंभ हो गया है। आप सभी जहां अपने बच्चों के नई कक्षाओं में प्रवेश के लिए व्यस्त हैं, वहीं उनके भविष्य की चिंताओं आदि में भी स्वयं को डुबोये होंगे। यह माह जहां चिंताओं से भरा और कार्यों की अधिकता से भरा हुआ है, वहीं सही मार्गदर्शन, धैर्य और कार्यकुशला के द्वारा उचित निर्णय के माध्यम से सही मार्ग चुनने का भी समय यही हैं। अपने बच्चों को सही शिक्षा के साथ-साथ समय निकालकर धर्म की शिक्षा से भी जोड़े, सामाजिकता का ज्ञान उनमें रोपित करावें फिर देखिये आपके लिए गए सभी निर्णय सार्थक सिद्ध होंगे। मैं, आप सभी के बच्चों की अच्छी शिक्षा, अच्छे स्वास्थ्य और सफल भविष्य की कामना भगवान वीर प्रभु से करता हूँ। आप सभी खुश रहें, स्वस्थ रहें और धर्म मार्ग से जुड़ें रहें, इन्हीं भावनाओं के साथ अंत में सभी पूजनीय साधु-साध्वी जी महाराज के श्रीचरणों में वंदन अभिनंदन एवं चातुर्मास काल की संपूर्ण सफलाताओं के साथ सुख साता पृच्छा। ✧✧

तीनों लोकों का राज्य भी छोटा है आत्म दृष्टि के सामने

- युग प्रधान आचार्य सम्राट पू. श्री शिव मुनि जी म.

भगवान महावीर की साधना क्या है? मुझे कैसे प्राप्त हो? उसकी प्यास मुझे दीक्षा लेने से पूर्व, घर में रहते ही थी। मुझे भगवान महावीर की साधना की प्यास ने ही दीक्षा ग्रहण करने की प्रबल भावना उत्पन्न की। दीक्षा लेने के पश्चात मैने काफी अध्ययन भी किया, डॉक्टरेट की डिग्री भी ली परन्तु सन्तोष नहीं हुआ। मैंने ध्यान की निम्न पद्धति भी क्रियात्मक रूप से की। जैसे विपश्यना साधना शिविर बहुत की। उससे राग, द्वेष क्षीण हुई। सिद्ध-समाधि योग साधना की शिविर, Art of living, Pranic Healing, Silva Mind Control सभी से लाभ हुआ, परन्तु आत्मदर्शन साधना की प्यास बनी रही। अरिहन्त परमात्मा श्री सीमन्धर स्वामी की अनन्त कृपा शासन देव, शासन माता का सहयोग, वीतराग साधिका निशा जी के अथक पुरुषार्थ से मेरे भीतर आत्म दृष्टि का बीज वपन हुआ। स्वरूप बोध की साधना मिली। हर शिविर स्वयं के अनूठा, अनुपम विलक्षण अनुभूति से परिपूर्ण लगने लगा।

स्वरूप बोध की साधना से मेरे भीतर समस्त भेद रेखाओं का अन्त होने लगा। मैं एक शुद्ध आत्मा हूँ। स्वयं में सम्पन्ना परिपूर्ण, अजर, अमर, अविनाशी, त्रिकाल सत्य, अटल सत्य, परम सत्य की अनुभूति होने लगी। मैं आत्मा अष्ट गुण से युत्त अष्ट कर्म से बंध होने के कारण मैं स्वयं में सम्पन्न हूँ, मुझें किसी की आवश्यकता नहीं। स्व-पर का भेद मालूम हुआ। स्व यानि आत्मा। आत्मा मे केवल ज्ञान, अरिहंत प्रभु एवं सिद्धालय मेरे भीतर ही है। पर यानि शरीर - शरीर से जुड़े सारे संबंध। पाँचों इन्द्रियों के विषय, मन, बुद्धि, संस्कार, धारणा कुल परंपरा इत्यादि। माता-पिता परिवार, संघ समाज, गुरु, शिष्य के संबंध सभी पर है। मैं एक आत्मा परिपूर्ण शुद्ध, बुद्धि हूँ। स्वरूप बोध से अनादिकाल का मिथ्यातत्व टूटा। पाँच आड्डवों का निरोध होने लगा। अब प्रतीत होता है कि जीव सबसे अधिक कर्मों का बंधन मिथ्यात्व मे ही बांधता है।

धर्म का शुद्ध स्वरूप आत्मदर्शन से ही प्राप्त होता है। जीव धर्म के नाम पर क्रियाएं की परन्तु आत्मधर्म को नहीं समझा। आत्मदृष्टि आने पर जीव हर श्वांस, हर पल, हर घड़ी में कर्म निर्जरा करता है। आत्म दृष्टि विहीन पुण्य का बन्ध करता है। कभी पुण्य, कभी पाप, कभी देवलोक, कभी मनुष्य, कभी पशु, कभी नरक की यात्रा मिथ्यात्व के कारण हुई। राजा श्रेणिक का जीव आत्मदृष्टि से, भेद विज्ञान से नरक में भी निर्जरा कर रहा है। फिर पहले तीर्थंकर होगें।

जे एगं जाणई, से सव्वं जाणई समत्त दंसी न करेई पावगं मैं शुद्धात्मा हूँ, आत्म वत सर्वभूतेषु न मैं बड़ा हूँ, न मैं छोटा हूँ न मैं निर्धन, न मैं धनवान न मैं बुद्धिमान, न मैं बुद्धिहीन, न मैं सर्वश्रेष्ठ, न मैं हीन, मैं सिर्फ-सिर्फ एक शुद्ध आत्मा हूँ शुद्ध, बुद्धि, निरजंन, निराकार, अजर, अमर, शाश्वत, त्रिकाल सत्य हूँ। इसी में हर श्वास में कर्म निर्जरा ही निर्जरा है। जीवन में प्रतिपल नमन, कृतज्ञता संपन्नता, अहोभाव रहता है। मैं तृप्त हूँ, आनंदित हूँ। तीन लोकों का राज्य भी छोटा है। आत्म दृष्टि के सामने।

भगवान महावीर निर्वाण कल्याणक दीपावली की आत्म-ध्यान साधना के पश्चात वीर संवत् 2540 पर चतुर्विध संघ के लिए हार्दिक मंगलकामना। आपका जीवन उत्तरोत्तर विकास की ओर बढ़े। आपके जीवन में आत्म दृष्टि आये। चातुर्मास समापन के दौर में है। शीतकालीन चातुर्मास में विचरण के साथ व्यक्तिगत साधना बढ़े। ऐसी हार्दिक भावना । ✧✧

अखिल भारतीय श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ के चतुर्थ पट्टधर जैन धर्म दिवाकर, तपसूर्य, युग-प्रधान, आचार्य सम्राट पूज्य श्री शिव मुनि जी म. सा. के आज्ञानुवर्ती संत-सतीवृंद की वर्ष 2017 की चातुर्मास सूची में प्राप्त सुधार

हरियाणा प्रांत

जनता कॉलोनी रोहतक

प्रवचन प्रभाविका महासाध्वी पू. डॉ. श्री शिवा जी म. सा., पू. साध्वी श्री शैली जी म.सा., पू. साध्वी श्री शिवांगी जी म.सा., पू. साध्वी श्री शैलजा जी म.सा., पू. साध्वी श्री शुचिता जी म.सा. आदि ठाणा-5
श्री एस. एस. जैन सभा (रजि.), जैन स्थानक
नजदीक मयूर पार्क डाक घर, जनता कॉलोनी
रोहतक - 124001 (हरियाणा)
प्रधान : श्री संजय जैन दलाल : 098120 45244

दिल्ली प्रांत

वीर अपार्टमेन्ट

महासाध्वी पू. श्री यशा जी म.सा., साध्वी पू. श्री कौमुदी जी म.सा. आदि ठाणा-2 (सकारण)
श्री एस.एस. जैन सभा, जैन स्थानक,
प्लाट नं. 28, सेक्टर-13, जापानी पार्क के सामने,
वीर अपार्टमेंट, रोहिणी, दिल्ली-110085
प्रधान : श्री यशपाल जैन : 09999024455
महामंत्री : श्री दिनेश जैन : 09810000207

राजस्थान प्रांत

निम्बाहेड़ा

उपप्रवर्तक पू. श्री गौतम मुनि जी म.सा., 'प्रथम', पू. श्री वैभव मुनि जी म.सा., पू. श्री पदममुनि जी म.सा. ,'प्रेमशिष्य' पू. श्री शालीभद्र मुनि जी म.सा. आदि ठाणा-4
श्री व. स्थानक जैन श्रावक संघ
जैन स्थानक, दिवाकर भवन, आदर्श कॉलानी,
मु.पो.: निम्बाहेड़ा, जिला : चित्तौड़गढ (राजस्थान)
श्री विजय कुमार जैन 01477-221874

धामणिया

मधुर वक्त पू. श्री रविन्द्र मुनि म.सा. 'नीरज' आदि ठाणा-1 (सकारण)
श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक
मु.पो. धामणिया वाया बिगोद,
जिला भीलवाड़ा (राजस्थान)
श्री ज्ञान पामेचा : 098284 20861

मेड़ता सिटी

विदुषी महासाध्वी पू. श्री मनोहर कुंवर जी म.सा., साध्वी पू. श्री मनीषा जी म.सा., साध्वी पू. श्री सुमंगलप्रभा जी म.सा, साध्वी पू. श्री सुवृद्धिप्रभा जी म.सा., साध्वी पू. श्री रजतप्रभा जी म.सा., नवदीक्षिता साध्वी पू. श्री प्रांजलश्री म.सा. आदि ठाणा-6
श्री वर्धमान श्वे. स्था. जैन श्रावक संघ
जैन स्थानक, जयमल जैन छात्रवास,
राजकीय हॉस्पिटल के पास, पो.: मेड़तासिटी,
जिला : नागौर (राजस्थान)
श्री लूणकरण कोठारी : 093744 77700

बांदनवाड़ा

महाश्रमणी महासाध्वी पू. श्री पुष्पवती जी म.सा., उपप्रवर्तिनी महासाध्वी पू. श्री राजमती जी म.सा.,साध्वी पू. श्री राजरश्मी जी म.सा., साध्वी पू. श्री राजरिद्धि जी म.सा., साध्वी श्री राजलक्ष्मी जी म.सा., साध्वी पू. श्री राजवृद्धि जी म.सा. आदि ठाणा-6
श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ
जतन स्मारक, पोस्ट बांदनवाड़ा
तहसील : भिनाय, जिला : अजमेर (राजस्थान)
अध्यक्ष : श्री ज्ञानचंद डुंगरवाल : 094133 02935
मंत्री : श्री राजेश पिपाड़ा : 094140 06751

राशमी

पू. श्री तिलकमुनि जी म.सा. आदि ठाणा-1
श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ
जैन स्थानक, मु.पो. राशमी - 312 203
जिला : चित्तौड़गढ़ (राजस्थान)
श्री दौलत जी पोखरना : 09413595348

उत्तर प्रदेश प्रांत

नोएड़ा

श्रुतप्रेमी महासाध्वी पू. श्री निधिश्री जी म.सा., श्रुतप्रेमी पू. साध्वी कृपाश्री जी म.सा. आदि ठाणा-2 (सकारण)
श्री एस. एस. जैन सभा (रजि.)
सी-42 ए, कम्यूनिटी सेन्टर के पास, सेक्टर-23
नोएडा - 201 301 (उत्तर प्रदेश)
श्री सुरेश कुमार जैन : 098103 39331
श्री अनिल जैन : 098100 32707

गुजरात प्रांत

पालीताणा

मधुर व्याख्यानी महासाध्वी पू. श्री अमितज्योति जी म.सा., साध्वी पू. श्री अंतरज्योति जी म.सा., साध्वी पू. श्री सुदर्शना जी म.सा. आदि ठाणा-3
श्री सुन्नतर भवन, हस्तगीरी क्रॉस रोड, तलहटी के नजदीक, पालीताणा - 364 270 (गुजरात)
फोन : 02848-252626, 09512252626

महाराष्ट्र प्रांत

राहाता

महाराष्ट्र केसरी पू. श्री पराग मुनि जी म.सा., सरलमना पू. श्री मनोहर मुनि जी म. सा., मधुर भाषी पू. श्री संयम मुनि जी म. सा. आदि ठाणा-3
श्री वर्धमान स्था. जैन श्रावक संघ
जैन स्थानक, महावीर चौक, पुरानी पोस्ट गली, मु.पो. ता. राहाता, जिला : अहमदनगर - 423 107 (महाराष्ट्र)
अध्यक्ष : श्री खुशहाल चन्द रायसोनी : 09822283881

लोणीकंद

सेवाभावी पू. श्री विशालऋषि जी म. आदि ठाणा-1
उज्ज्वल गौरक्षण, क्षेत्रपाल प्रतिष्ठान,
पुणे नगर रोड, पावर हाऊस के सामने,
पो. लोणीकंद, 412 216 ता. हवेली,
जिला पुणे (महाराष्ट्र)
श्री नीमा दीदी : 093260 13882

राहुरी

महासाध्वी पू. श्री आराधना जी म.सा., साध्वी पू. श्री अवंती जी म.सा. आदि ठाणा-2 (सकारण)
श्री वर्धमान स्था. जैन श्रावक संघ,
जैन स्थानक, मु.पो.ता. राहुरी - 413 705
जिला अहमदनगर (महाराष्ट्र)
अध्यक्ष : श्री चंदनमल जी सुराणा : 092723 69053

सटाणा

महासाध्वी पू. श्री विजयाश्री जी म.सा. 'सुमन', साध्वी पू. श्री विनीता जी म.सा. आदि ठाणा-2 (सकारण)
श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ
श्री शान्तीलाल माणकचंद जी रांका,
मु.पो. : सटाणा, जिला : नाशिक (महाराष्ट)
मो. 094222 54079

तमिलनाडु प्रांत

पट्टाभीराम, चेन्नई

शासनप्रभाविका महासाध्वी पू. श्री प्रतिभा जी म.सा., ओजस्वी वक्ता साध्वी पू. श्री अमित सुधा जी म.सा., साध्वी पू. श्री दिक्षिता जी म.सा., साध्वी पू. श्री प्रेक्षाश्री जी म.सा., साध्वी पू. श्री प्रेरणाश्री जी म.सा. आदि ठाणा-5
Sri Vardhaman Sthanakwasi Jain Sangh
Mahaveer Bhavan, Mahatma Gandhi Road,
Opp. Satyam Hospital, North Bazar
Pattabiram, Chennai – 600 072 (Tamil Nadu)
Sh. Dharmi Chand Kanthed : 099520 70087
Sh. Jawarilal Ranka : 093817 72003

श्रमण संघ के सम्पूर्ण भारत में विराजमान साधु-साध्वीवृन्द की तालिका

राज्य	सन्तवृन्द		साध्वीवृन्द		कुल	
	संघाड़े	संख्या	संघाडे	संख्या	कुल संघाडे	कुल योग
मध्य प्रदेश	6	26	18	55	24	**81**
पंजाब	10	24	28	103	38	**127**
हरियाणा	5	13	18	64	23	**77**
हिमाचल	1	2	3	10	4	**12**
उत्तर प्रदेश	2	7	5	22	7	**29**
उत्तराखंड	1	3	0	0	1	**3**
चण्डीगढ़	1	4	0	0	1	**4**
दिल्ली	5	14	34	132	39	**146**
राजस्थान	10	42	40	158	50	**200**
गुजरात	1	3	8	25	9	**28**
महाराष्ट्र	13	34	66	261	79	**295**
छत्तीसगढ़	1	5	1	8	2	**13**
उड़ीसा	0	0	1	2	1	**2**
पश्चिम बंगाल	**1**	2	0	0	1	**2**
आन्ध्र प्रदेश	1	1	1	4	2	**5**
तेलंगाना	1	4	2	7	3	**11**
कर्नाटक	4	18	13	46	17	**64**
तमिलनाडु	6	12	6	23	12	**35**
नेपाल	1	2	0	0	1	**2**
कुल	**70**	**216**	**244**	**920**	**314**	**1136**

वर्ष 2016-2017 में श्रमण संघ में हुई नई दीक्षाएं

वैरागी/वैरागन	नवदीक्षित नाम	गुरु/गुरुणी	दीक्षा स्थल	दिनांक
सुश्री आरती जैन	नवदीक्षिता साध्वी पूज्य श्री वाग्मी जी म.सा.	महासाध्वी पूज्य श्री डॉ अर्चना जी म.सा.	बरनाला, पंजाब	12.4.2016
श्री सतीश जैन	नवदीक्षित पूज्य श्री आत्मज्ञाता मुनि जी म.सा.	प्रज्ञा महर्षि पूज्य श्री उदयमुनि जी म.सा.	अशोक विहार, दिल्ली	12.5.2016
श्री महेन्द्र जैन	नवदीक्षित पूज्य श्री आत्मदृष्टा मुनिजी म.सा.	प्रज्ञा महर्षि पूज्य श्री उदयमुनि जी म.सा.	अशोक विहार, दिल्ली	12.5.2016
श्रीमति रवेष जैन	नवदीक्षिता साध्वी पूज्य श्री आत्मरमणी जी म.सा.	प्रवर्तिनी पूज्य श्री डॉ श्री सरिता जी म.सा.	अशोक विहार, दिल्ली	12.5.2016
श्री रविन्द्र जैन	नवदीक्षित पूज्य श्री शौर्यमुनि जी म.सा.	आचार्य सम्राट पूज्य श्री डॉ. शिवमुनि जी म.सा.	उदयपुर, राजस्थान	2.1.2017
श्रीमती राजरानी जैन	नवदीक्षिता साध्वी पूज्य श्री राजश्री जी म.सा.	महासाध्वी पूज्य श्री कुसुमप्रभा जी म.सा.	पानीपत, हरियाणा	2.1.2017
सुश्री एकता जैन	नवदीक्षिता साध्वी पूज्य श्री लक्षिता जी म.सा.	महासाध्वी पूज्य श्री ज्ञानप्रभा जी म.सा.	पानीपत, हरियाणा	2.1.2017
सुश्री पूनम जैन	नवदीक्षिता साध्वी पूज्य श्री आराधिका जी म.सा.	महासाध्वी पूज्य श्री शक्तिप्रभा जी म.सा.	पानीपत, हरियाणा	2.1.2017
सुश्री कोमल जैन	नवदीक्षिता साध्वी पूज्य श्री सीयल जी म.सा.	महासाध्वी पूज्य श्री समता जी म.सा.	पानीपत, हरियाणा	2.1.2017
सुश्री चारु जैन	नवदीक्षिता साध्वी पूज्य श्री सीयल जी म.सा.	महासाध्वी पूज्य श्री श्रेष्ठा जी म.सा.	रायकोट,	3.2.2017
सुश्री मोना जैन	नवदीक्षिता साध्वी पूज्य श्री चूलिका जी म.सा.	महासाध्वी पूज्य श्री समता जी म.सा.	रायकोट,	3.2.2017
सुश्री ऋद्धि जैन	नवदीक्षिता साध्वी पूज्य श्री उत्कर्षश्री जी म.सा.	महासाध्वी पूज्य श्री मुक्ता जी म.सा.	पंचकुला हरियाणा	4.28.2017
सुश्री अंजली जैन	नवदीक्षिता साध्वी पूज्य श्री कृपाश्री जी म.सा.	महासाध्वी पूज्य श्री कमलेश जी म.सा.	ऋषभ विहार, दिल्ली	5.7.2017
सुश्री रूचि नाहर	नवदीक्षिता साध्वी पूज्य श्री प्रांशुश्रीजी म.सा.	प्रवर्तिनी पूज्य श्री डॉ ज्ञानप्रभा जी म.सा.	मालेगांव महाराष्ट्र	5.7.2017
श्री अभय चोरड़िया	नवदीक्षित पूज्य श्री जयंत मुनिजी म.सा.	महाश्रमण पूज्य श्री जिनेन्द्र मुनि जी	उदयपुर राजस्थान	5.18.2017
सुश्री अंजली जैन	नवदीक्षिता साध्वी पूज्य श्री मृगान्तरश्मिजी म.सा.	महासाध्वी पूज्य श्री रविरश्मी जी म.सा.	मावली जंक्शन	5.28.2017
सुश्री पिंकी बाफना	नवदीक्षिता साध्वी पूज्य श्री प्रणतिश्री जी म.सा.	महासाध्वी पूज्य श्री डॉ प्रतिभा जी म.सा.	चित्रदुर्गा	5.7.2017
सुश्री श्रुति लुंकड़	नवदीक्षिता साध्वी पूज्य श्री मोक्षदाश्री जी म.सा.	महासाध्वी पूज्य श्री प्रियदर्शना जी म.सा.	इंचलकरंजी	2.6.2017

श्रमण संघ में वर्ष 2016-2017 में देवलोक हुए संत/साध्वीवृन्द

दिनांक	साधु/साध्वीवृन्द का नाम	स्थान	कारण
08.31.2016	उपप्रवर्तिनी डॉ सरोज श्री जी म.सा.	अहिंसा विहार, दिल्ली	36 घंटे संथारा
09.10.2016	उपप्रवर्तिनी सरलात्मा महासाध्वी पू. श्री सुमन कुमारी जी म.सा.	शालीमार बाग, दिल्ली	संथारा
09.13.2016	महासाध्वी पू. श्री संयम प्रभा जी	इन्दौर मध्यं प्रदेश	अचानक
09.30.2016	सरलमना पू. श्री सरपंच मुनि जी म.सा.	समाना	दीर्घ आयु
11.17.2016	श्रुताचार्या महासाध्वी पू. श्री मुक्ताप्रभा जी म.सा.	माउण्ट आबू राजस्थान	अचानक
01.24.2017	महासाध्वी पू. श्री केशर कंवर जी म.सा.	डूंगला,	संथारा
05.15.2017	महासाध्वी पू. श्री चेतना जी म.सा.	जोधपुर, राजस्थान	संथारा
	पू. श्री दर्शन मुनि जी म.सा.	खन्ना, पंजाब	अस्वस्थता

निम्न साधु-साध्वीयों के चातुर्मास अभी तक संप्राप्त नहीं हुए

1.	1. ज्योतिषाचार्य पू. श्री राजाराम मुनि जी म.सा. 2. पू.श्री रितेश मुनि जी म.सा.	आदि ठाणा
2.	पू. श्री तिलक मुनि जी म.सा.	आदि ठाणा-1
3.	पू. श्री प्रकाश मुनि जी म.सा.	आदि ठाणा-2
4.	पू. श्री रविन्द्र मुनि जी म.सा.	आदि ठाणा-1
5.	पू. श्री विशालऋषि जी म.सा.	आदि ठाणा-1
1.	1. महासाध्वी पू. श्री तारा जी म.सा. 2. साध्वी पू. श्री पुष्पा जी म.सा.	आदि ठाणा-1 (सकारण)
2.	1. महासाध्वी पू. श्री विजयाश्री जी 'सुमन' म.सा. 2. साध्वी पू. श्री विनीता जी म.सा.	आदि ठाणा-2 (सकारण)

गुरु के प्रति श्रद्धा होना अति आवश्यक

- पू. श्री डॉ. पुष्पेन्द्र मुनि जी म.

श्रद्धावानं लभते ज्ञानम्। आत्म-ज्ञान के लिए गुरु के प्रति श्रद्धा का होना बड़ा आवश्यक है। गुरु के प्रति श्रद्धा होने से गुरु द्वारा दिया गया ज्ञान शिष्य के हृदय में उतरने लगता है, अन्यथा श्रद्धा के बिना वह ज्ञान, शब्दों के रुप में बुद्धि में इकट्ठा हो जाता है। शिष्य में जब ज्ञान की जिज्ञासा होती है तब उसकी गुरु में श्रद्धा जगने लगती है। जब व्यक्ति को लगे कि मुझे ज्ञान, प्रेम और आनंद चाहिए, तब गुरु में श्रद्धा जगती है। जब व्यक्ति को लगे कि मुझे हर पल खुशी से जीने की कला सीखनी चाहिए और यह मुझे गुरु ही सिखा सकता है, तब गुरु में श्रद्धा जगती है। जब प्रकृति की तरफ व्यक्ति की पकड़ ढीली और गुरु की तरफ ज्यादा होने लगती है, तब श्रद्धा जगती है। यदि व्यक्ति को प्रकृति में रस आता है और गुरु केवल नाम के लिए है तब शिष्य की श्रद्धा हिलती-डुलती रहती है। जब गुरु का पलड़ा भारी हो जाए, तब श्रद्धा जगती है। जब जीवन में गुरु ही महत्वपूर्ण लगे, तब श्रद्धा जगती है।

शुरू में व्यक्ति गुरु के पास अपनी घर-गृहस्थी की प्रकृति को सुलभ करने के लिए आता है और गुरु से वैसे ही प्रश्न करता है। लेकिन गुरु अपने शिष्य की प्रकृति को सुलभ नहीं करता, बल्कि आत्मज्ञान देता है, जिससे शिष्य की प्रकृति अपने आप सुलभ हो जाती है। श्रद्धा का शिष्य की घर-गृहस्थी की उलझन से सीधे लेना-देना नहीं है। श्रद्धा केवल ज्ञान से बढ़ती है। इसलिए शिष्य का प्रश्न प्रकृति का होता है और गुरु केवल ज्ञान बोलते हैं। प्रकृति का प्रश्न होने पर भी गुरु उत्तर ज्ञान का ही देते हैं। गुरु के ज्ञान से शिष्य की बुद्धि का विकास होने लगता है, जिससे प्रकृति में उलझी बुद्धि खुल जाती है। गुरु का ज्ञान हमारी बुद्धि को बड़ा करता है। जैसे 50 लीटर के पात्र में आधा लीटर दूध बहुत कम लगता है, लेकिन आधा लीटर के पात्र में वह दूध ज्यादा दिखता है, ऐसे ही प्रकृति में उलझी बुद्धि छोटी होती है लेकिन जब गुरु बुद्धि का विकास करते हैं, तब प्रकृति की उलझन परेशान नहीं करती। गुरु के पास जब व्यक्ति आता है तब वह ज्ञान के हिसाब से अल्पबुद्धि या बुद्धिहीन होता है, गुरु के ज्ञान से बुद्धि खुलती जाती है। गुरु प्रकृति को सुलझाने के लिए नहीं है बल्कि गुरु के ज्ञान से प्रकृति सुलझ जाती है। गुरु जानते हैं कि शिष्य की प्रकृति आज सुलभ हो जाएगी, लेकिन कल फिर उलझ जाएगी। इसलिए गुरु प्रकृति को सुलझाने वाला ज्ञान ही देते हैं।

यदि प्रकृति को सुलभ करने से श्रद्धा जगती तो तलाक से पहले जो मध्यस्थ होते हैं या मनोवैज्ञानिक जो परिवार की उलझन को सुलझाते हैं उनके प्रति भी श्रद्धा जग जाती, लेकिन ऐसा नहीं होता। पहले शिष्य गुरु में श्रद्धा बढ़ाता है फिर गुरु, शिष्य की श्रद्धा को सींचते हैं। तो आइये 'गुरु पूर्णिमा' के पावन दिवस पर गुरु के श्रीचरणों में श्रद्धा से नत्मस्तक होकर जीवन कल्याण करें। ✧✧

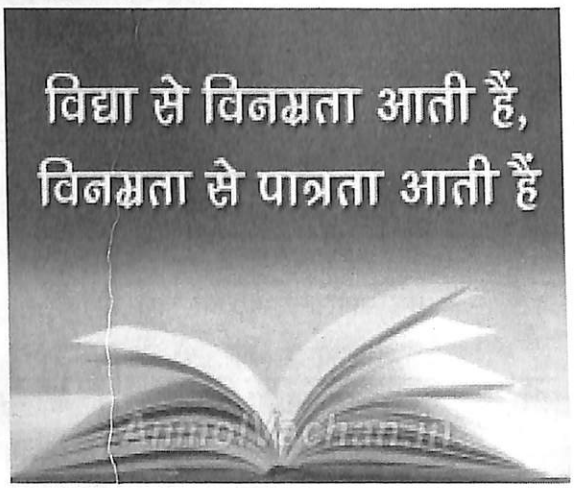

52वीं जन्म जयंती पर विशेष...

जिनकी सेवाओं ने किया सेवा के नवीन अर्थों का सृजन

- 'अमर शिष्य' पू. श्री वरुण मुनि म.

संयम यात्रा के एक ऐसे अविश्रान्त एवं अडिग पथिक, जिन्होंने अपनी 33 वर्ष की संयम यात्रा में अपने गुरु भगवंतों की सेवा में जो समर्पण भाव दिखाए हैं और जिस प्रकार आडम्बर रहित सेवाएँ की हैं, उनके द्वारा किए गए उन कार्यों ने सेवा शब्द के मायनों का शायद नवीन अर्थों में सृजन कर लिया है।

वर्तमान में आप अपना साधुत्व सही अर्थों में निभा रहे हैं। अति विनम्रता, निःस्वार्थ भावना इनके हृदय में कुछ इस प्रकार से समाविष्ट है कि आप जहाँ वरिष्ठ संतजनों की सेवा करने को अपना परम सौभाग्य मानते हैं वहीं आप अपने से छोटी दीक्षावय वाले संतों की सेवा करने एवं उनका ध्यान रखने को अपना उत्तरदायित्व समझते हैं। ऐसे आत्मनिष्ठ गुणों से परिपूर्ण हैं, **मेरे ज्येष्ठ गुरुभ्राता परम पूज्य उप-प्रवर्तक श्री पंकज मुनि जी महाराज।** जिन्होंने अपने श्रमण जीवन को पूर्णतया मर्यादाओं के साथ न केवल निभाया अपितु संयम जीवन को उन मर्यादाओं के साथ आत्मसात् भी किए हुए हैं। 26 जून 1966 को सढौरा, जिला यमुना नगर (हरियाणा) में लाला चानन लाल जी जैन एवं माता श्रीमती कृष्णा देवी जी जैन के प्रतिष्ठित परिवार में जन्मे श्री पंकज मुनि जी म. का सांसारिक नाम "राकेश जैन" था। आप कुल मिलाकर आठ भाई हैं, जिनमें आप श्रमणसंघ में दीक्षित होकर मौन अपितु निष्ठा भावों के साथ अपनी सेवाएँ दे रहे हैं। लगभग 18 वर्ष की आयु में आप परम पूज्य प्रवर्तक, भण्डारी श्री पद्मचन्द्र जी महाराज तथा श्रुताचार्य, वाणी भूषण परम पूज्य उ.भा. प्रवर्तक श्री अमर मुनि जी महाराज के श्रीचरणों में संसार से असारता के भाव और दीक्षा की अंतस भावना लेकर आए। इन महान गुरुदेवों ने आपकी आत्मीय भावनाओं की गहनता को देखा, जाना व समझा और आपको 15 जनवरी 1984 को पूज्य भण्डारी श्री पद्म चन्द्र जी महाराज के मुखारविन्द से दिल्ली के अशोक विहार क्षेत्र में जैन भागवती दीक्षा प्रदान की गई तथा आप पूज्य श्री अमर मुनि जी महाराज के शिष्य घोषित किए गए तथा दीक्षा उपरान्त आप श्री पंकज मुनि जी महाराज के नाम से विश्रुत हुए।

'श्रमण सूर्य', 'सेवा सुमेरु', 'उत्तर भारत गौरव', 'भोले बाबा', 'धर्म विभूषण', 'परम सेवा भावी', 'तपस्वी रत्न' जैसी विशिष्ट उपाधियों से सुसज्जित आपश्री जी का श्रमण जीवन वास्तव में आपश्री जी की गौरव गाथा को स्वतः ही दर्शाता है। आज मानव जहाँ साधु शब्द के बाहरी आवरण के भीतर कुछ और खोजना चाहता है वहीं वह ऐसे साधु की खोज में रहता है जिसके अंतस में, आचरण में साधुत्व भरा हो। साधुत्व की इसी परिभाषा के आपश्री जी जीवंत स्वरुप हैं। मेरी दृष्टि में महान चारित्र का निर्माण महान और उज्ज्वल विचारों से होता है, जिसका आपश्री जी साक्षात् उदाहरण हैं। दूसरों की सेवा करना और उसमें ज़रा भी अहंकार न करना, यह विशेषताएँ गुरुदेवों द्वारा प्रदत्त ऐसी शिक्षाएँ हैं, जिन्हें आपश्री जी ने न केवल अपने हृदय में भली-भांति संजोया है

अपितु उन शिक्षाओं को आचरण में उतार कर वस्तुतः जीया भी है।

आपश्री जी द्वारा दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजस्थान, हिमाचल प्रदेश आदि राज्यों में गुरु चरणों में रहकर धर्मप्रभावना की गई। वर्तमान में आपश्री जी अपने संतमण्डल के साथ महाराष्ट्र, दक्षिण भारत के राज्यों तमिलनाडु, कर्नाटक में अपने प्रवचनों के माध्यम से श्रेष्ठ धर्म प्रभावना करते हुए अपने महान गुरुदेवों की विशिष्ट साधना एवं श्रमणसंघीय योगदान से समग्र समाज को परिचित करा रहे हैं। आप समाजजनों की अपेक्षाओं, उत्कंठाओं एवं जिज्ञासाओं का जहाँ सारगर्भित समाधान प्रस्तुत कर रहे हैं, वहीं पंजाब परम्परा के महान गुरुदेवों की उत्कृष्टता का परचम भी लहरा रहे हैं।

पू. श्री पंकज मुनि जी महाराज की 52वीं जन्म जयंती के मंगलमय अवसर पर यही कामना है कि आपश्री जी का तेजोमय श्रमणत्व अपने उच्च लक्ष्यों को प्राप्त करे। कोटिशः बधाई एवं शुभकामनाएँ।

✧✧

आत्म गौरव और नियति

- साध्वी-रत्ना पू. डॉ. श्री प्रमोदकुंवर जी म.

श्रीपाल महामंत्र नवपद की आराधना कर कुष्ठ रोग से मुक्त हो गए। वे राजपुत्र थे, कंचन वर्णी काया और मुखमंडल से उनकी विराट कद काठी और भी सुन्दर लगने लगी। उज्जयिनी के राजा के दामाद थे और वहीं ठहरे हुए थे। एक दिन राजप्रसाद से घोड़े पर सवार होकर एवं संध्या सैर करने जा रहे थे। एक नन्हीं बालिका ने सहज उत्सुकतावश अपनी माँ से पूछ लिया, यह देव समान पुरुष कौन है? इन्हें नगरी में प्रथम बार देखा है। माता ने तनिक जोर लगाकर बालिका के प्रश्न का उत्तर दिया कि - ये प्रजापाल के दामाद हैं। श्री पाल ने बालिका का प्रश्न और उस पर माता से उत्तर प्राप्त किए जाने को ध्यान से सुना। वे सोचने लगे कि माता ने कुछ अनुचित नहीं कहा, वे राजा के जमाता बनकर यहाँ रह रहे हैं और उनकी पहचान नगरवासियों में अब इसी रूप में हो रही है। वे विचार करने लगे कि उत्तम पुरुष स्वयं के नाम से जाना जाता है, मध्यम पुरुष पिता के नाम से जाना जाता है, अधम पुरुष मामा के नाम से जाना जाता है और जो अधम से अधम होता है, वह उसके श्वसुर के नाम से जाना जाता है।

श्रीपाल को आत्मग्लानि होने लगी। वे सोचने लगे कि राजवंश और राजकुल की मर्यादा को भूलकर एक साधारण पुरुष की तरह पत्नी के मायके में ठहरे हुए हैं, इस तरह कुल एवं वंश की प्रतिष्ठा को भी निरंतर आँच आ रही है, कुछ ऐसा किया जाना चाहिए, जो राजवंश के लिए वीरोचित हो और राजकुल में इस तरह रहने से अपेक्षा है कि परदेश में जाकर भाग्य आजमाया जाएं। श्रीपाल के मन में यह विचार आते ही महारानी मैना सुंदरी से विदा ली और विदा लेने से पूर्व श्रीपाल ने महारानी मैना सुन्दरी और माता कमलप्रभा का अनुग्रह ज्ञापित किया और वे चल पड़े। पर्यटन और कई देशों में धवल सेठ के साथ यात्रा करते हुए अनेक राजा महाराजाओं से जय-विजय प्राप्त कर अनेक राजकुमारियों से विवाह किया और वचन अनुसार उज्जयिनी नगरी की ओर चल पड़े। उन्हें 12 वर्ष की अवधि पूर्ण होने पर महारानी मैना सुंदरी को दिए गए वचन अनुसार उज्जयिनी नगरी पहुंचना था और उसकी स्मृति होते ही उज्जयिनी

नगरी की ओर चल पड़े।

उज्जयिनी नगरी में बारह वर्ष पश्चात् प्रवेश किया, उनके साथ विशाल सेना राज-रानियों, सुभट और अथाह संपदा थी। उज्जयिनी के बाहर पड़ाव डाल दिया। सब ओर विशाल सैन्य दल के साथ परदेशी राजा के आगमन का समाचार फैल गया। उज्जयिनी नगरी पर आक्रमण की संभावना से भयभीत नगरजन शहर पर युद्ध के बादल मंडराते देखने लगे।

महारानी मैना सुंदरी बारह वर्ष से निरंतर तपस्विनी का जीवन व्यतीत कर रहीं थीं, श्रीपाल ने महल का द्वार खटखटाया और माता कमलप्रभा की चरणरज लेकर सर्वप्रथम माता का अभिवादन किया। महारानी मैना सुन्दरी द्वार पर श्रीपाल को देखकर अति हर्षित हुईं। माता एवं पुत्र के मध्य निरंतर संवाद चलता रहा और प्रभात होते ही श्रीपाल अपने सैनिक पड़ाव पर लौट आए। उनके साथ माता कमलप्रभा और महारानी मैना सुंदरी थीं।

श्रीपाल ने माता कमलप्रभा को उज्जयिनी के बाहर सैन्य पड़ाव में स्वर्ण रत्न जड़ित सिंहासन पर बैठाया, भाव वंदन किया। मैना सुंदरी की ओर मधु स्मित मुस्कान बिखेरे हुए अन्य राज-रानियों का परिचय दिया। वे संकेत पाकर माता कमलप्रभा एवं मैना सुंदरी के पाद-पंकजों से लिपट गई। श्रीपाल और मैना सुंदरी के मध्य उज्जयिनी के राजा प्रजापाल को वीरोचित परिचय देने का विचार आया।

राजा प्रजापाल ने पुत्री का विवाह एक कुष्ठ रोगी से विवाह कर उसे अपमानित किया था। अपने राज्य वैभव, पितृत्व एवं अहंकार की सत्ता और आत्म-प्रवंचना में उसका जीवन व भाग्य दोनों ही दांव पर लगा दिए थे। आज पति के उन्नत ललाट पर आत्म पुरुष की रेखाएँ उभर आई, वह अति हर्षित थी। पिता को अभिमान और आत्म-ज्ञान में भेद कराने, कर्म-पौरुष की सत्ता का भान कराने के लिए इससे अच्छा अवसर और नहीं था।

श्रीपाल राजा चंपापुरी के घोषित राजा थे, वे उज्जयिनी के राजा प्रजापाल को यह बल पौरुष दिखा देना चाहते थे कि वे अधम व्यक्ति नहीं है, बल्कि प्रतिष्ठित आत्म पुरुष हैं। राजा प्रजापाल कंधे पर कुल्हाड़ा रखकर आया, वह श्रीपाल राजा की विराट सेना और युद्ध रचना देखकर आश्चर्यचकित हो गया, ज्यों उन्हें यह ज्ञात हुआ कि यह कोई शत्रु राजा नहीं है। उनके देश पर चढ़ाई करने नहीं आया है, अपितु यह उसके राज जमाता श्रीपाल है। प्रजापाल हर्षित हुआ और संपूर्ण व्यवस्था को देखकर युद्ध की व्यूह रचना एवं बुद्धि चातुर्य का बोध हुआ।

श्रीपाल उज्जयिनी नगरी से पैतृक चंपा नगरी की ओर चले, काका वीरदमन से राज्य वापस किए जाने हेतु संदेश भिजवाया, परंतु काका ने युद्ध के लिए ललकारा। श्रीपाल के पौरुष बल के सम्मुख काका और उनकी सेना परास्त हो गई। श्रीपाल ने वीरदमन को पिता तुल्य मानकर अभय दान दिया। वीरदमन पराजय से इतना दुःखी हुआ कि उसने संत जीवन अंगीकार कर लिया और दीक्षा लेकर कठोर तप साधना की। केवल्य ज्ञान को प्राप्त किया। श्रीपाल और मैना सुंदरी ने संत मुनि राज से पूर्व भव का वर्णन जाना और साधनारत् हुए, अंतिम समय संथारा संलेखना सहित पंडित मरण को प्राप्त किया और सिद्ध बुद्ध हुए। ✧✧

क्षमा याचना ...

जैन प्रकाश जून द्वितीय पक्ष के रंगीन पृष्ठ पर जिन परम पूज्य साधु-संतों के फोटो प्रकाशित होने से रह गये थे, उसके लिए हम हृदय से क्षमा याचना करते हैं, मिच्छामि दुक्कड्म। जुलाई प्रथम पक्ष के अंक में रह गए साधु-संतों के फोटो प्रकाशित किए जा रहे है।

- सम्पादक मण्ड़ल

किसान का आत्मविश्वास

- पू. साध्वी श्री युगल निधि-कृपा जी म.

एक किसान एक गांव में मेला देखने के लिए गया। वहाँ विविध प्रकार की चीजें देख लेने के बाद उसे एक चीज बहुत पंसद आई। वह था बकरी का नन्हा सा बच्चा। उसने दुकानदार से उस बकरी के बच्चे की कीमत पूछी, बह बोला सिर्फ पांच रुपये का है। उसने झट से पांच रुपये देकर वह बकरी का बच्चा खरीद लिया।

किसान ने बड़े प्यार से उसे अपने कंधे पर बिठाया और अपने गांव की ओर चल पड़ा। उसी मेले में कुछ एक बदमाश भी शामिल थे। बदमाशों ने देखा कि यह किसान तो बेचारा बहुत ही भोला और बुद्धु है। अच्छा मौका है कि हम सब मिलकर के वह बकरी का बच्चा उससे छीन लेते हैं, परन्तु उससे हम लड़कर नहीं छीन सकते, क्योंकि वह किसान शरीर से अत्यंत मजबूत है। इसके साथ तो होशियारी से काम लेना चाहिए। अतः चार बदमाशों ने मिलकर एक तरकीब खोज ली।

किसान उस बकरी के बच्चे को बड़े उत्साह और उल्लास से लेकर अपने गांव की ओर ले जा रहा था। इतने में सामने से एक बदमाश आया और नमस्कार करते हुए किसान से बोला - अरे! इस कुत्ते के बच्चे को आपने कहाँ पर बिठाया है। बड़ा प्यारा कुत्ता है। यह कहाँ से खरीदा है?

यह सुनकर किसान ने झल्लाकर कहा - अरे! आप कहीं पागल तो नहीं हो गये? यह तो बकरी का बच्चा है। इसे अभी-अभी मैंने खरीदा है।

बदमाश ने कहा - भैया! जैसी तुम्हारी इच्छा वरना है तो ये कुत्ते का बच्चा। इतना कहकर वह आगे निकल गया।

थोड़ी ही देर में किसान को दूसरा बदमाश मिला। वह बड़ी तरकीब से बोला - भैया! राम-राम! इस कुत्ते के बच्चे के इतने क्या लाड़ लड़ा रहे हो? यदि इस प्रकार तुम गांव में पहुंच गये तो तुम्हें लोग पागल समझेंगे। इतना कहकर वह आगे निकल गया। अब किसान को थोड़ी सी शंका पैदा हुई इसलिये उसने बकरी के बच्चे को कंधे से नीचे उतारा और बड़े ध्यान से देखा और फिर मन ही मन बोला - यह तो बकरी का ही बच्चा है।

थोड़ा आगे बढ़ा ही था कि तीसरा बदमाश मिला। उसने किसान को राम-राम करते हुए कहा - बड़ा अच्छा कुत्ता लाये हो। मैं, भी ऐसा ही कुत्ता खरीदना चाहता हूँ कहाँ से तुमने खरीदा है? यह सुनते ही किसान के मन में फिर से शंका पैदा हो गई। अब उसे लगा कि क्या ये बकरी का बच्चा है? जवाब देने की हिम्मत नहीं रही, क्योंकि वह मन ही मन सोचने लगा कि तीन व्यक्ति ने मुझे इस प्रकार टोका है तो जरुर कोई बात है। एक आदमी झूठ बोल सकता है पर अलग-अलग तीन आदमी ने जो मुझे कहा है तो कहीं कुछ जरुर गड़बड़ है। तीन-तीन आदमी की आंखें धोखा नहीं खा सकती।

अब किसान के मन में एक डर सा पैदा हो गया कि मैं, यही भ्रम में तो नहीं हूं? फिर से बकरी के बच्चे को नीचे उतारा। अब वह बकरी का बच्चा उसे भी कुत्ते के बच्चे की भांति दिखाई देने लगा। ऐसी असमंजस की स्थिति में वह आगे चल पड़ा।

इतने में चौथा बदमाश आया और बोला - अरे देहाती! यह क्या गजब किया तुमने इस छोटे से कुत्ते के बच्चे को कंधे पर उठाकर रखा है। आज तक

मैंने किसी किसान को कुत्ते का बच्चा कंधे पर उठाते हुए नहीं देखा है। अच्छा है कि गांव पहुंचने से पहले इसे इस जंगल में ही छोड़ दो वरना हंसी के पात्र बन जाओगे। इतना कहकर वह आगे चल पड़ा।

अब किसान का विश्वास पूरा टूट चुका था। उसमें और आगे चलने की हिम्मत नहीं रही। वह सिर पर हाथ रखकर गहरी सोच में डूब गया कि क्या बात है सब क्यों इसे कुत्ते का बच्चा कह रहे है। जरुर मुझे उस दुकान वाले ने ठगा है वरना रास्ते में मिलने वाले सब झूठ नहीं बोल सकते। चलो, यदि अब भी मैं, संभल जाता हूं तब भी अच्छा रहेगा। वरना गांव तो अब आने ही वाला है। सारे गांव वाले मुझ पर हंसेंगे। मुझे पागल कहेंगे। इससे तो अच्छा है कि यहाँ एकांत भी है इसे यहीं छोड़ देता हूं। सिर्फ पांच रुपये का ही नुकसान होगा, परन्तु इज्जत तो बनी रहेगी।

उसने शीघ्र ही बच्चे को नीचे उतारा और जंगल में छोड़ दिया। लंबे-लंबे कदम भरते हुए वह अपने गांव की ओर चल पड़ा। वे चारों बदमाश बकरी के बच्चे को उठाकर ले गये। वह बड़े खुश थे कि हमारी तरकीब कितनी अच्छी तरह से सफल हुई।

इस कहानी से हमें ज्ञात होता है कि कोई भी असत्य यदि बार-बार दोहराया जाये तो सत्य जैसा प्रतीत होने लगता है फिर सत्य चाहे सामने भी हो तब भी उस पर असत्य का परदा पड़ जाता है। हमारे जीवन में ऐसा बहुत बार होता है कि जब हमारे भीतर आत्म-विश्वास की कमी आ जाती है तब दूसरा जो कुछ कह देता है उसे हम मानने को तैयार हो जाते हैं। अतः जीवन में आत्म-विश्वास को बढ़ाना होगा ताकि हम सभी प्रकार के संशयों से मुक्त हो सकें।

✧✧

गरीबों का मसीहा

ईसाई धर्म के संस्थापक जीसस क्राइस्ट (ईसा मसीह) एक बार केपर नगर में गरीबों के मोहल्ले में रहने लगे। उनके ही साथ भोजन करने लगे, तो कुछ सिरफिरे लोगों ने आपत्ति की। इस पर ईसा ने कहा - 'वैद्य मरीजों को देखने जाएगा या स्वस्थ लोगों को, मैं पीड़ित और पतितों की सेवा करना चाहता हूं, इसलिए मेरा स्थान इन्हीं के बीच है।'

एक गांव से गुजरते हुए कुछ लोगों ने उन्हें गालियां देनी शुरू कर दीं। जिस पर ईसा ने ईश्वर से प्रार्थना की कि - 'हे प्रभु इन सबका भलो हो।' एक ग्रामीण ने पूछा - 'आप गालियों के बदले दुष्टों के लिए प्रार्थना कर रहे हैं।' ईसा बोले - 'मैं बदले में वही दे रहा हूं, जो मेरी गांठ में है, जो चीज मेरे पास है ही नहीं, वह मैं कहां से दूं?' एक बार एक सिरफिरे द्वारा धर्म क्या है? पूछने पर ईसा ने बताया - 'अपने आप में अवस्थित रहना ही धर्म है।' उनकी शिक्षा थी तन-मन-धन से कार्य करने के साथ-साथ मनुष्य को धैर्य भी रखना चाहिए। तभी परिश्रम के फल की प्राप्ति होगी।

33 वर्ष की आयु में उन्हें सूली पर चढ़ा दिया गया। कहते हैं, वे तीन दिन बाद पुनः जीवित हो गए और फिर 12 शिष्यों के साथ 40 दिनों तक निर्जन प्रदेशों में रहे। अंत मे शुक्रवार के दिन उनका स्वर्गारोहण हुआ। संध्या समय उनका शरीर कफन से लपेट कर चट्टान में खोदी कब्र में दफनाया गया और प्रभु ईसा स्वर्ग में आरोहित कर लिए गए। वे ईश्वर के दाहिने विराजमान हो गए। उनके द्वारा स्थापित ईसाई धर्म विश्व भर में फैला बाइबिल उनका पवित्र ग्रंथ है। इसमें ईसा की यह प्रतिज्ञा चरितार्थ है कि - 'मैं संसार के अंत तक सदा तुम्हारे साथ हूं।' ईसवी सन् की शुरूआत ईसा के जन्म से ही हुई।

-रमेश जैन (दिल्ली)

आगामी चातुर्मास के शुभ अवसर पर उमंग की तरंग

- मनोहर काँठेड जैन, वरिष्ठ मार्गदर्शक, जैन कॉन्फ्रेंस

भीषण गर्मी मार्ग उष्ण कंकर चुभते ही रहते हैं,
कभी-कभी तो जल न अन्न पा कायिक संकट सहते हैं,
मन में है संकल्प कि चातुर्मास-स्थल तक जाना है,
साधु-महासतियों का लक्ष्य कि तप्प त्याग करवाना है।।

बस, अब समय आ रहा है ऐसा खुशहाली आने वाली है,
कृषकों के मन में उमंग है हरियाली छाने वाली है,
इसी तरह हम वचनामृत के प्यासे खुद को पाते हैं,
कब दर्शन आचार्य हमें दें आशा यही जगाते है।।

गाँव-गाँव में, नगर-नगर में तैयारी दिखलाती है,
संतों-सतियों के विहार से भी आशा बल पाती है,
हरा-भरा ही दृश्य यहाँ पतझड़ के बाद दिखना है,
मानव-मन की उमंग को सत्संग-त्याग सीखना है।।

चौरासी में भटक-भटक मुश्किल से यह भव पाया है,
अब भटकाव मिटाने का ही यह शुभ अवसर आया है,
चार माह का यह अनमोल सुसमय सामने छाया है,
चंचल मन को बस में करने का असर मन भाया है।।

वचनामृत पीने पर व्यर्थ न बाकि उम्र गवाना है,
खूब करें तप-त्याग दान से महापुण्य उपजाना है,
यह जीवन हो पूर्ण सफल ऐसी कृति करके जाना है,
भूखा-प्यासा कोई व्यक्ति अतृप्त नहीं रह पाना है।

झड़ी तपस्या की लग जाये दान धर्म अपनाना है,
वचनामृत सुन प्रेरित बनकर जीवन हमें सजाना है,
आर्शीवाद कृपा करके गुरुदेव यहाँ बरसाएंगे,
धन्य हमारा जीवन होगा इस भव से तिर जाएंगे।।

राजस्थान प्र. पू. गुरुमाता श्री यशकंवर जी म. का जन्म शताब्दी वर्ष (26 मार्च 2017 से 15 मार्च 2018)

- सुशील कुमार सुराणा जैन, चित्तौड़गढ़ (राजस्थान)

मेवाड़ सिंहनी शासन प्रभाविक गुरणी मैया पू. श्री यश कंवर जी म. सा. का जन्म चेत बद्दी 13 संवत 1974 को मध्य प्रदेश के जाट(यश नगर) ग्राम में हुआ ।जन्मोत्सव एक माह तक चला था उनके पिता काशीराम जी वैष्णव ने चारों दिशाओं में चार स्तम्भ गड़वाये,घर-घर मिठाईयाँ बांटी, माता घीसा बाई ने हर्ष मनाया। जन्म नाम जानकी था 20 वर्ष की उम्र में गुरुदेव पू. श्री भूरालाल जी म. सा. एवं गुरणी पू. श्री हुलासकंवर जी म. सा. के सान्निध्य में दीक्षा अंगीकार की। शुरु से नवकार मंत्र पर अटूट श्रद्धा थी संयमी जीवन में अनेक एतिहासिक कार्य किये जिसमे जोगणिया माता में पशु बलि रोकना तथा फुलिया कंला में आनंद यश जैन छात्रावास, जाट में यश जैन चिकित्सालय, तथा भीलवाड़ा में स्वाध्याय संघ की स्थापना जैसे अनेक महत्वपूर्ण कार्य किये। जोगणिया माता में 4 वर्षावास अनेक कीर्तिमान के साथ सानन्द संपन्न हुए जोगणिया माता में जैन समाज का एक भी घर नहीं है। प्रथम वर्षावास 1980 में हुआ जिसकी आज्ञा लेने श्री विजय सिंह जी सुराणा कदवासा वाले प्रतिनिधि मंडल के साथ आचार्य सम्राट 1008 श्री आनंद ऋषि जी मारासा के पास बीजापुर (महाराष्ट्र) गए थे आचार्य सम्राट ने सेवा में रहने वाले श्रद्धालुओं के चौके से आहार लेने की अनुमति देकर चातुर्मास की आज्ञा फरमायी द्वितीय चातुर्मास सन 1997, तृतीय चातुर्मास 2005 तथा चौथा चातुर्मास 2011 में सानन्द सम्पन्न हुए।

पू. श्री यश कंवर जी म. सा. बहुत ही सरल स्वभावी व संयम के प्रति सजग प्रहरी थे वाणी में सिद्धि थी अंतिम समय बीगोद (जिला-भीलवाडा) में व्यतीत हुआ हर समय समता में रहते थे। पुज्या श्री की मेरे ऊपर व पूरे परिवार पर असीम कृपा बरसती रहती थी। बैसाख सुदी 12 संवत 2072 दिनांक 30 अप्रैल 2015 की प्रातः वेला में दो घण्टे के संथारे के साथ अंतिम सांस ली ।

शत शत वन्दन नमन अभिनन्दनः- इस वर्ष शताब्दी समारोह में 108 वर्षीतप का लक्ष्य रखा है जो की लगभग 108 से अधिक की संख्या में प्रारंभ होकर सानन्द गतिमान है तथा एक प्रत्याख्यान की पुस्तक भी निकली जिसके माध्यम से वर्ष भर में अनेक त्याग तपस्यायें होने की सँभावना है त्याग तपस्याओं की भेंट ही सच्ची श्रद्धांजलि होगी। ✧✧

आप जैसे विचार करेंगे,
वैसे ही बन जायेंगे।
अगर आप अपने को कमजोर मानेंगे तो, आप कमजोर बन जायेंगे और यदि आप अपने को ताकतवर मानेंगे तो ताकतवर बन जायेंगे। यही प्रकृति का नियम है। जिसकी जैसी भावना होती है,
वह वैसा ही हो जाता है।

स्वतंत्रता का आनंद

- डॉ. दिलीप धींग, चेन्नई (तमिलनाडु)

राजस्थान के उदयपुर जिलान्तर्गत ग्राम बम्बोरा में केलू से आच्छादित घर में मेरा जन्म हुआ। घर की दीवारें और आंगन गोबर-मिट्टी (गारे) से पुते हुए रहते थे। रसोई घर (रसोड़े) का आँगन भी गारे से पुता हुआ था। मेरी माँ उमराव (बाईजी) यतनापूर्वक उसे साफ-सुथरा रखती थीं। रसोड़े के एक कोने में मिट्टी का चूल्हा था, जिसमें ईंधन के लिए जलाऊ लकड़ी और छाणों (गोबर के कण्डों) का उपयोग किया जाता था। वहीं एक-दो समतल पत्थरों से चौका बना रखा था। बाईजी नीचे बैठकर ही मिट्टी की केलड़ी में स्वादिष्ट रोटियाँ बनाती थीं। सामने परात में गूंथा हुआ आटा होता था। गौरैया (चरकली या चिड़िया) आकर गूंथे हुए आटे में निडर होकर चोंचें मारतीं और चहकती हुई अपना आहार करती। बाईजी जब गूंथे हुए आटे को भीगे हुए गरणे (पानी छानने का कपड़ा) से ढँककर इधर-उधर के दूसरे काम निपटाती, तब भी गौरैया गरणे के सिरे को ऊपर करके आटा चुरा ले जाती। गौरैया की यह शरारत बाईजी को अच्छी लगती और हम भाई-बहिनों को भी।

जब रोटियाँ बन रही होती थीं, तब कुछ गौरैया उड़-उड़कर बारी-बारी से बाईजी के चौके में चली आती थीं। पास ही हम भाई-बहिन रोटी खा रहे होते थे। बाईजी के कहने पर रोटी के छोटे-छोटे टुकड़े गौरैया की ओर फेंक देते। गौरैया को तो मजा आ जाता। वे खुश होकर फुदकती हुई रोटी के टुकड़े अपनी चोंच में पकड़ लेतीं। कोई वहीं बैठी-बैठी अपनी रोटी खाती, तो कोई दूर जाकर; तो कोई घोंसले में प्रतीक्षारत अपने बच्चों के लिए रोटी ले जाती। बाँटकर खाने का वैसा आनन्द तो किसी पाँच सितारा होटल में भी नामुमकिन है।

पुराने घरों में ऐसे स्थान सुलभ होते थे, जहाँ गौरैया अपना घोंसला बना सके। गौरैया और कबूतर, मानव-आवासों के भीतर या आसपास कोई उपयुक्त स्थान देखकर अपना नीड़ सदियों से बनाते आ रहे हैं। मेरे घर में भी और घर के आसपास गौरैया के घोंसले हुआ करते थे। दीपावली या अन्य दिनों में सफाई करते समय बाईजी और हम बच्चे इस बात का ध्यान रखते थे कि गौरैया का घोंसला नहीं टूटे। बाईजी कहा करती थीं कि घोंसले ही पक्षियों के घर होते हैं, इन्हें उजाड़ने से भयंकर पाप लगता है। सह-अस्तित्व और जीव-रक्षा की ऐसी जीवन्त शिक्षा और कहाँ मिल सकती थी?

इधर, एक सुरक्षित चबूतरे पर चिड़िया के लिए चीणा तथा छोटे अनाज के दाने ड़ाले जाते थे। वहाँ गौरैया सहित दो-चार प्रजातियों की सैकड़ों की संख्या में चिड़ियाँ आती थीं। चतुर चिड़ियाँ अपनी चोंच से चीणा का छिलका उतारकर चीणा खाती थीं। वर्षा ऋतु में चिड़ियाँ न जाने कहाँ से अपने पंख रंग लेती थीं। ऐसी रंग-बिरंगी चहचहाती चिड़ियों को एक साथ दाना चुगते देख हमारा मन नहीं भरता था। गाँव की नीरवता को पक्षियों की कलरव जब भंग करती थी तो कोई व्यवधान नहीं महसूस होता था। अपितु ऐसा लगता था, मानो प्रकृति अपना गीत-संगीत गाकर वातावरण में रस घोल रही है।

ये सारे दृश्य मुझे उस समय तो अच्छे लगते ही थे और अब, जब वो बीते दिन याद करता हूँ तो मेरे स्मृति-लोक में उस दृश्यों की सुन्दरता कई गुना बढ़ जाती है। आज के बालक चिड़ियों को अपनी पाठ्य पुस्तकों में देखते हैं। उन्हें देखकर रंग-बिरंगी चिड़ियों के चित्र भी बना लेते हैं। लेकिन चिड़ियों की वह असली व लम्बी उड़ान, मनमोहक अठखेलियाँ और कर्णप्रिय चहचहाट उन्हें प्रायः देखने-सुनने को नहीं मिलती हैं। चिड़ियों की उड़ान व अठखेलियाँ देखने तथा चहचहाट सुनने के लिए उन्हें चिड़ियाघर जाना पड़ता है। लेकिन, वहाँ पिंजरे में बन्द चिड़ियों की उड़ान का सौन्दर्य तथा चहचहाट का माधुर्य वैसा नहीं होता है, जैसा स्वतंत्र रहने वाली चिड़ियों का होता हैं। परतंत्रता से सहज विकास अवरुद्ध हो जाता है। स्वतंत्रता का आनन्द कुछ अलग और अनूठा होता है। सभी प्राणियों को स्वतंत्रता प्रिय है। इसलिए किसी भी प्राणी की स्वतंत्रता नहीं छीननी चाहिये। ✧✧

उकृष्ट कला

अयोध्या नगरी में एक चमत्कारी यक्ष का मंदिर था। हर वर्ष बड़ा मेला लगता था, वहां की परंपरा के अनुसार हर वर्ष चित्रकारों द्वारा उस यक्ष का चित्र बनाया जाता था। लेकिन उत्सव समाप्त होते ही यक्ष अपने चित्रकार को मार डालता था। इसका परिणाम यह हुआ कि चित्रकार नगरी छोड़-छोड़कर भागने लगे।

राजा को यह मालूम हुआ तो उसने सोचा कि इस तरह से सब चित्रकार भाग जाएंगे, फिर यक्ष को कौन चित्रित करेगा? राजा ने एक नियम बना दिया कि सबके नाम पर्तों पर लिखकर एक घड़े में डाल दिए जाते। एक-एक नाम निकला जाता। जिसका नाम निकलता, उसे यक्ष को चित्रित करना पड़ता। एक बार कौशाम्बी का एक चित्रकार अयोध्या आया और किसी चित्रकार के घर रहने लगा। यह चित्रकार अपनी वृद्धा मां का इकलौता बेटा था। संयोगवश इस वर्ष इस चित्रकार की बारी आई। वृद्धा को जब यह मालूम हुआ तो वह बहुत दुःखी हुई।

कौशाम्बी के चित्रकार ने कहा - 'मां तुम क्यों रोती हो? यक्ष को चित्रित करने मैं जाऊंगा।' नवयुवक चित्रकार ने दो दिन का उपवास किया, नए-नए वस्त्र पहने, नए कलशों के जल से स्नान किया, नई तूलिकाएं लीं, नए रंग और नए पात्र लिए और वह यक्ष को चित्रित करने चल दिया। उस चित्रकार ने यक्ष को इतने भक्तिभाव से, अपनी संपूर्ण क्षमताओं का उपयोग करके चित्रित किया कि यक्ष का रूप पूरी तरह निखरकर सामने आ गया। यक्ष ने प्रकट होकर चित्रकार के हुनर की प्रशंसा की और कहा - 'आज तक मेरा चित्र जिसने भी बनाया उसने मृत्यु के भय से उसे विक्रित कर दिया, इसलिये मैं आज तक अपना चित्र बनाने वाले प्रत्येक चित्रकार का वध करता आया हूं। तुम पहले चित्रकार हो जिसने मृत्यु के भय को त्यागकर अपनी उत्कृष्ट कला का नमूना प्रस्तुत किया है, तुमसे प्रसन्न होकर मैं तुम्हें तुम्हारा मुंह मांगा वर देने को तैयार हूं। यक्ष ने वर मांगने को कहा।' चित्रकार ने भक्तिभाव से हाथ जोड़कर यक्ष से विनम्रतापूर्वक कहा - 'देव यदि आप मुझ पर प्रसन्न ही हैं तो आप चित्रकारों का वध करना बंद कर दें। यक्ष ने तथाअस्तु कहा और उसे वरदान दिया कि वह किसी के भी शरीर का एक अंग देखकर पूरा चित्र बना देगा। चित्रकार ने यक्ष के वरदान का सदुपयोग किया और उसने आगे चलकर अपनी चित्रकला और यक्ष से मिले वरदान से मान प्रतिष्ठा के साथ-साथ अपार धन अर्जित किया। साथ ही साथ उसने समाज के दबे कुचले लोगों का भी भरपूर साथ दिया। ✧✧

चातुर्मास महापर्व

- प्रफुल्ल कुमार सी कोटेचा, मदुरांतकम (तमिलनाडु)

भारतीय संस्कार और संस्कृति में जितने भी पर्व आते हें उन सभी में चातुर्मास का पर्व महापर्व है। अध्यात्म का पर्व, आत्म-उत्थान का पर्व, अपने आपको समझने का पर्व, प्रफुल्ल से प्रफुल्लित होने का पर्व। दया, अहिंसा व करुणा प्रेम का महापर्व है। धर्म का अर्थ भी यही होता है। इसमें त्याग, संयम, तप और ध्यान किया जाता है। इस महापर्व में रक्षा-बंधन, नाग पंचमी, गुरु-पूर्णिमा, दशहरा, दीपावली आदि पर्व आते हैं। चातुर्मास का उद्देश्य भी दया भाव से है। वर्षाकाल में जीवों की उत्पत्ति अधिक होती है, हिंसा होने की आशंका रहती है। संत चातुर्मास इसलिए करते हैं कि हिंसा न हो। दूसरा गृहस्थ पर दया करते हैं, ताकि हमारे अंदर मानवता की भावना जागृत हो जाए। गृहस्थ और संत को जोड़ने का काम करता है पर्व। सर्वव्यापी अनंत चेतना से योगरुप समन्वय करने का महापर्व है चातुर्मास।

The 'Chaturmas' or 'Chaumasi Chaudas' which is the festival of jain community people belonging to Jainism follow the teachings given by Lor Mahavira. Chaturmas commences from Ashadi Purnima to end of on Kartik Purnima. And for this reason, chaturmas is also known as '**Varshavass**'. According to jain muni vegetation is something that has life in it. Ahimsa is strictly emphasized in Jainism, be it on anyone or anythings to awaken theirs internal powr of soul. Spirituality is practiced. Chaturmas is the time when they engage in worshipping the lord and carry out many religious acts. It is very beautiful festival of jain relgion, it is became a part of Marwadi Jain's Lite begin your journey on the path of wisdom by the following principles given by Lord Mahavira.

चातुर्मास ही एक ऐसा समय हैजब संत एक जगह इतने समय तक रह सकता है नहीं तो संत एक बहती नदी के समान होते हैं। पाप के बिना पुण्य रात के बिना दिन, सुख के बिना दुःख का अस्तित्व नहीं हो सकता। उसी प्रकार संत के बिना श्रावक का अस्तित्व नहीं हो सकता। दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं। इन दोनों के होने पर ही धर्म है। शास्त्रों में गृहस्थ धर्म और संत बताए गए हैं। देव-वंदना, गुरु-वंदना, स्वाध्याय, संयम, तप-दान यह श्रज्ञवक की आवश्यक क्रिया नहीं होती तो वह पुण्य का अर्जन कैसे करेगा। इसलिए चातुर्मास महापुण्य का अर्ज करने साधन ह। चातुर्मास काल में संत अपने प्रवचनों से आमजन में धार्मिक भावना का प्रसार करते हैं। चातुर्मास में मुनि-आर्यिकाएं, श्रावक-श्राविका आदि तप-त्याग, संयम, आनंद, उत्साह का अहसास कर सकते हैं।

चातुर्मास के नाम अनेक जैसे :- ज्ञान-दर्शन चारित्र की आराधना का नाम है। स्वयं पर कल्याण की साध ना का नाम। एक स्थान पर मुनिजन चार माह स्थिरत रहे उसका नाम है। दुगुणों को दूर कर सद्गुणों के विकास का नाम है। आत्मतत्व को पहचानने का नाम है। भगवान की वाणी श्रवण का नाम है। धर्म और समाज में जागृति लाने का नाम है। समय के सद्पयोग का नाम है। व्यसन मुक्ति जीवन जीने का नाम है। यातना व विवेक रखने का नाम है। वैराग्य में 'रम' जाने का नाम। आत्मा से परमात्मा बनने का नाम। ऐसे कोटि-कोटि नाम हैं चातुर्मास के।

आपकी आत्मा से परे कोई भी शत्रु नहीं है, असली शत्रु आपके भीतर है, **शत्रु हैं क्रोध, घमंड, लालच, आशक्ति और नफरत,** हर व्यक्ति जीवित प्राणी के प्रति दया रखें। घृणा से विनाश होता है। **जय जिनेन्द्र! जय महावीर! जय आनंद बाबा!** ✧✧

उपाध्याय पू. श्री केवल मुनि जी म.सा. का परिचय

- अशोक कुमार जैन, मुम्बई (महाराष्ट्र)

आपक जन्म श्रावण सुदी 13 वि.स. 1970 को कोशीथल (मेवाड़) राजस्थान में धर्मनिष्ठ श्राविका श्री ककुंबाई धर्मपत्नी श्री जवाहरलाल जी. कोठारी के यहाँ हुआ। आपने 11वर्ष की आयु में माता ककुंबाई भाई श्री बंशीलाल सहित फागण सुदी 5वि.स. 1981 को ब्यावर (राजस्थान) में जैन दिवाकर पू. श्री चौथमल जी म. के दीक्षा ग्रहण की, आप पू. श्री चौथमल जी म. के अंतिम शिष्य बने। आपने जैन आगम के कठिन से कठिन विषय का मार्मिक व सरल सुबोध किया आप संस्कृत, प्राकृत, व्याकरण, हिन्दी, गुजराती व अन्य भाषाओं के विद्ववान थे। आपकी प्रवचन शैली प्रभावशाली, प्रेरणादायी के साथ-साथ प्रश्नों के तर्कसहित उत्तर से समाज पर व्यापक प्रभाव पड़ा अपने-अपने काफी भजनों का संकलन किया जो आम सकल श्रीसंघ में गाये जाते हैं। आपकी विचक्षण, प्रतिभा, योग्यता, को देखकर श्रीसंघ ने समय-समय पर आपको कविरत्न, उपाध्याय, वाणी के जादुगर, कलम के कलाकार जैस पदों की विशेषता देकर आपके यश को बढ़ाया। आपने 72वर्ष के संयमी जीवन में जिनशासन का प्रचार सम्पूर्ण भारत वर्ष में कश्मीर से कन्याकुमारी तक तीन लाख किलोमीटर का पदविहार किया, प्रथम चातुर्मास धाणेराव (सादड़ी) व अंतिम अलसुर (बैंगलोर) में हुआ।

अपने संयमी जीवन में 84 पुस्तकों का लेखन किया अंतिम पुस्तक का नाम **'जीवन की अंतिम मुस्कान'** रखा यह नाम सत्य ही निकला। आप शिक्षा के प्रबल प्रेमी थे, आपकी प्रेरणा से जगह-जगह स्कूल, कॉलेज, दवाईघर, अनाथों के नाम का संचालन अब भी सुचारु रुप से जारी है। जीवन के अंतिम समय तक विचार-प्रवचन, व प्रत्याख्यान किया आपका स्वर्गवास वैशाख शुक्ल 10 वि.स. 2051 (20 मई, 1994) को अशोकनगर बाजार, स्थानक बैंगलोर में हुआ।

:- गुरुकेवल इकतासाः-

विघन हरण मंगल करण, गुरुवर के गुणगान।
विद्या, बुद्धिबल दीजिये, गुरुवल दयानिधान।।
जय, जय श्री ककुं के नंदा, दूर करो कर्मों का फंदा।
जवाहर पुत्र की है बलिहारी, कोठारी कुलके थे परिहारी।
गाँव कोशीथल के अवतारी, सद्गुण से कुल नैया तारी।
श्रावणवद तेरस सुखदाई, जन्म तिथि सबके मन भाई।
गुरुचौथ से गुण था पाया, फागण सुद पांचम हरसाया।
ब्यावर शहर में पाई संयम शिक्षा, माँ-बेटों ने संग लिनी दीक्षा।
बाल ब्रह्मचारी बने आप, रजोहरण को लिया हाथ।
दिवाकर के प्रिय शिष्य बने, भव्यजनों के भाव सने।
जनमानस को आप सुहाते, गुणीजन नितमील गौरव गाते।
गुरुवर हमको उपदेश सुनाते, भव्य भाव के पाठ पढ़ाते।
प्रवचन शैली जादुगर जैसी, जनमानस को लागे चातक जैसी
तात्वीक था व्याखान निराला, मानो जैसे अमृत का प्याला।
कविरत्न वक्ता थे भारी, क्षमाशील करुणा के धारी।
ज्ञान क्रिया के बने प्रतापी, सुंदरतम था जीवन व्यापी
अग्रविहारी बने आप, कश्मीर से कन्याकुमारी पड़ी छाप।
महकाते जैन उपवन प्यारा, मानों नभ का दिव्य सितारा।
अनुशासन में रहते पूरे, रखते नहीं कर्त्तव्य अधूरे।
जीवों के थे परम दयालु, आत्म-साधना के प्रतिपालु।
गुरु का नाम खूब दिजाया, उपाध्याय पद से हरसाया।
गुण पच्चीस पूरण समसाजे, साधु-साध्वी को ज्ञान पढ़ाते।
विनय देखकर मन हुलसाता, दर्शन करने को मन ललचाता।
जीवन था मन मोहक ऐसा, मीठा होता मोदक जैसा।
राग द्वेष को दूर हटाते, आत्म शांति का पाठ पढ़ाते।
भक्त देखकर शीश झुकाते, मन मनोरथ अनुपम पाते।
भक्तों से बहते थे गुरुवर, दृढ़ श्रद्धावान हो यह जीवन।
जो शरण में है अरिहंतो के, उनके मंगल का क्या कहना।
मंगलम हैं नाम तुम्हारा। सारे दुःख का मेटन हारा।
सुरलो अब गुरुदेव हमारी, हमारी है हम सब शरण तुम्हारी।
कृपा-दृष्टि हम पर बरसाओ, मोक्षपुरी की राह बतलाओ।
अशाख शुक्ल दशम का दिन आया, जिसने हमको बहुत रुलाया।
वीर प्रभुके सच्चे पुजारी, छोड़ चले हमें पंच महाव्रतधारी।
निशदिन में करता रहूं, चरण-शरण की सेव।
शुभाशीष मोहि दीजिये, 'गुरुकेवल', गुरुदेव।।

मैट्रिकोत्तर छात्रवृत्ति

- संदीप भण्डारी जैन, अखिल भारतीय जैन अल्पसंख्यक सेल

मैट्रिक पूर्व छात्रवृत्ति अल्पसंख्यक समुदाय के कक्षा एक से दसवीं के छात्रों को प्रदान की जाती है।

पात्रताः- मैट्रिक पूर्व छात्रवृत्ति की पात्रता के लिए निम्नलिखित अनिवार्य आवश्यकताएं हैं।

i. छात्र के माता-पिता की वार्षिक आय एक लाख रुपये (वार्षिक) से कम होनी चाहिए।

ii. छात्र को राज्य सरकार की और संघ राज्य प्रशासन द्वारा मान्यता प्राप्त संस्थानों, निजी स्कूलों/ सरकारी संस्था में अध्ययनरत होना चाहिए।

iii. छात्रवृत्ति देना जारी रखा जाना चाहिए पिछली परीक्षा में 50% अंक प्राप्त करने पर निर्भर है।

iv. इस योजना के तहत लाभ प्राप्त कर रहे छात्रों को इस प्रयोजन हेतु किसी अन्य योजना के तहत लाभ प्राप्त करने की अनुमति नहीं होगी।

हकदारीः-

i. कक्षा VI से X तक के छात्रावासों में रहने वाले औश्र छात्रावासों में न रहने वाले छात्रों को प्रतिवर्ष 500 रु. की दर से प्रवेश शुल्क।

ii. कक्षा VI से X तक के छात्रावासों में रहने वाले और छात्रावासों में न रहने वाले छात्रों को प्रतिवर्ष 350/-रु. की दर से शिक्षण शुल्क।

iii. किसी क्षैक्षिक वर्ष में कक्षा I से V तक के छात्रावासों में न रहने वाले छात्रों को अधिकतम 10 माह तक की अवधि तक प्रतिमाह 100/ - रु. की दर से अनुरक्षण भत्तें का भुगतान किया जाएगा।

iv. कक्षा VI से X तक के छात्रों को प्रतिमाह 600/- रु. की दर से और छात्रावासों में न रहने वाले छात्रों को प्रतिमाह 100/-रु. की दर से अनुरक्षण भत्ता।

30% छात्रवृत्तियाँ छात्राओं के लिए निर्धारित है।

मैट्रिक पूर्व छात्रवृत्ति प्राप्त करने के लिए आप अपने जिला के स्कूल के प्रधानाचार्य और जिला अल्पसंख्यक कल्याण अधिकारी या अल्पसंख्यकों के लिए प्रभारी अधिकारी से आवेदन फार्म प्राप्त कर सकते हैं।

मैरिट-सह-साधधन (एमसीएम) आधारित छात्रवृत्ति अल्पसंख्यक समुदाय के छात्रों को समुचित प्राधिकरण से मान्यता प्राप्त संस्थान में स्नातक और स्नातकोत्तर स्तर के व्यावसायिक एवक तकनीकि पाठ्यक्रमों में अध्यन के लिए अल्पसंख्यक समुदाय के छात्रों को छात्रवृत्ति प्रदान की जाती है।

पात्रताः- मैरिट-सह-साधन आधारित छात्रवृत्ति की पात्रताके लिए निम्नलिखित अनिवार्य आवश्यकताएं हैं:-

i. छात्र के माता-पिता की वार्षिक आय 2.5लाख रु. से अधिक नहीं होनी चाहिए।

ii. छात्र को उच्च माध्यमिक/स्नातक स्तर पर 50% अभवा उससे अधिक अंक प्राप्त किया होना चाहिए।

हकदारीः- इस योजना के तहत निम्नलिखित सहायता उपलब्ध कराई जाएगी।

i. छात्रावासों में रहने वाले छात्रों को 10,000/ -रु. प्रतिवर्ष तथा छात्रावासों में न रहने वालो छात्रों को 5,000/- रु. की दर से (केवल दस माह के लिए) अनुरक्षण भत्ता।

ii. छात्रावासों में रहने वाले छात्रों के साथ-साथ छात्रावासों में न रहने वाले छात्रों को योजना के तहत सूचीबद्ध 85 संस्थानों के लिए पूर्णरुप से पाठ्यक्रम शुल्क की प्रतिपूर्ति और

अन्यों के लिए 20,000/- रु. प्रतिवर्ष अथवा वास्तविक, जो भी कम हो, की प्रतिपूर्ति।

30% छात्रवृत्तियां छात्राओं के लिए निर्धारित है।

पात्रताः- मैट्रिक पूर्व छात्रवृत्ति की पात्रता के लिये निम्नलिखित अनिवार्य आवश्यकताएं हैं।

i. अभिभावकों की वार्षिक आय दो लाख से कम होना चाहिए।

ii. छात्र को औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थानों, प्रशिक्षण केन्द्र में कक्षा दस औश्र दसवीं स्तर के तकनीकी और व्यावसायिक पाठ्यक्रमों सहित सरकारी स्कूलों/कॉलेजो/ संस्थानों और किसी समुचित प्राधिकरण द्वारा मान्यता प्राप्त नीजि स्कूलों, संस्थानों में अध्ययनस्त होना चाहिए।

iii. छात्रवृत्ति देना जारी रखा जाना पिछली परीक्षा में पचास प्रतिशत अंक प्राप्त करने पर निर्भर है।

iv. इस योजना के तहत लाभ प्राप्त कर रहे छात्रों को इस प्रयोजन हेतु किसी अन्य योजना के तहत लाभ प्राप्त करने की अनुमति नहीं होगी।

हकदारीः- इस योजना के तहत छात्रों को निम्नलिखित सहायता उपलब्ध कराई जाएगी।

i. कक्षा XI से XII तक के छात्रावासों में रहने वाले एवं छात्रावासों में न रहने वाले छात्रों को अधिकतम सात हजार रुपये प्रतिवर्ष की दर से भुगतान किए गए वास्तविक प्रवेश एवं प्रशिण एवं शिक्षण शुल्क।

ii. कक्षा XI से XII स्तर के तकनीकि और व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के लिए छात्रवासों में रहने वाले एवं छात्रावासें में न रहने वाले छात्रों को अधिकतम दस हजार रुपये वार्षिक की दर से अथवा वास्तविक प्रवेश एवं पाठ्यक्रम शिक्षण शुल्क।

iii. कक्षा XI से XII के तथा इस स्तर के तकनीकि एवं व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के छात्रावासों में न रहने वाले छात्रों को 360/ -रु. प्रतिमाह और छात्रावासों में न रहने वाले छात्रों को 230/- रु. प्रतिमाह का अनुरक्षण भत्ता।

iv. स्नातक पूर्व और स्नातकोत्तर स्तर के तकनीकि और व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के अलावा अन्य पाठ्यक्रमों के लिए छात्रावासों में रहने वाले छात्रों को 570/-रु. प्रतिमाह और छात्रावासों में न रहने वाले छात्रों को प्रतिमाह 300/- रु. प्रतिमाह अनुरक्षण भत्ता।

v. एम.फिल और पीएच.डी. पाठ्यक्रमों के छात्रावासों में रहने वाले उन छात्रों जैसे शोध छात्र, जिन्हें विश्वविद्यालय अथवा अन्य किसी प्राधिकरण से कोई अध्येतावृत्ति न प्रदान की जाती हो को 1200/- रु. प्रतिमाह तथा छात्रावासों में न रहने वाले छात्रों को 550/ - रु. प्रतिमाह प्रदान करने का प्रावधान है। 30% छात्रवृत्तियां छात्राओं के लिए निर्धारित है।

मैट्रिकोत्तर छात्रवृत्ति के लिए आवेदन देने हेतु छात्र संस्था website:ww.jainminoritycell.org अथवा मंत्रालय की www.minorityaffairs.gov.in पर जा सकते हैं और सीधे online छात्रवृत्ति प्रणाली OSMS के माध्यम से अपने आवेदन online जमा करा सकते हैं। छात्रों द्वारा जिला के स्कूल के प्राधानाचार्य और जिला अल्पसंख्यक कल्याण अधिकारी या अल्पसंख्यकों के लिए प्रभारी अधिकारी से संपर्क किया जा सकता है। सामान्यतः इस प्रयोजन के लिए संबंधित राज्य सरकार/संघ राज्य प्रशासन द्वारा मार्च के महीने में विज्ञापन प्रकाशित किये जाते हैं। जरुरी दस्तावेजः- पासपोर्ट आकार का फोटो, पिछले वर्ष की छात्रवृत्ति रसीद जो स्कूल/संस्था द्वारा प्रतिहस्ताक्षरित हो। आय की घोषणा का प्रमाण-पत्र, निवास प्रमाण-पत्र, जाति प्रमाण पत्र आदि।

सामान्यतः इस योजना के लिए संबंधित राज्य सरकार/ संघ राज्य प्रशासन द्वारा मार्च के महीने में विज्ञापन प्रकाशित किये जाते हैं। ✧✧

भगवान महावीर मैमोरियल समिति के पुर्नउत्थान में जैन कॉन्फ्रेंस की भूमिका

प्रस्तुति - राष्ट्रीय अध्यक्ष मोहनलाल चोपड़ा जैन की आज्ञा से श्री राजीव जैन 'सीए'

भगवान महावीर मैमोरियल समिति (बी.एम.एम.एस.) की वर्तमान स्थिति के संबंध में दिनांक 19 मई 2017 को स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस व दिगम्बर समाज के प्रतिनिधि मंडल की एक विशेष बैठक नई दिल्ली में संपन्न हुई। इस बैठक में श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का नेतृत्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मोहनलाल जी चोपड़ा जैन ने किया। जिसमें पूर्व अध्यक्ष श्री जे.डी. जैन जी, श्री केसरीमल जी बुरड़ जैन, श्री अविनाश जी चोरड़िया जैन, पूर्व चेयरमैन श्री आनंद प्रकाश जी जैन, पूर्व उपाध्यक्ष श्री सुभाष ओसवाल जी जैन, पूर्व महामंत्री श्री बालचंद जी खरबड़ जैन व श्री राजीव जैन 'सीए; सम्मिलित हुए।

ज्ञात रहे कि बी.एम.एम.एस. की स्थापना वर्ष 1974 में भगवान महावीर के 2500वें निर्वाणोत्सव के आयोजन के लिये हुई थी और ऐसे संगठन की परिकल्पना की गई जो विश्व भर के जैन समाज को एकसूत्र में पिरोकर संगठित नेतृत्व प्रदान कर सके। उस समय देश भर से कुल 16 महानुभाव संस्थापक के रुप में सम्मिलित हुए जिसमें से श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस के चार प्रतिनिधि उपस्थित थे।

इस संस्था को ये जिम्मेदारी सौंपी गई कि यह दिल्ली में एक विश्व स्तरीय भगवान महावीर के मैमोरियल की स्थापना करे। जिसके लिये भारत सरकार ने आर्थिक योगदान के साथ-साथ दिल्ली के धौला कुआँ में करीब चार एकड़ भूमि संस्था को प्रदान की। कालांतर में संस्था अपने उद्देश्यों को पूर्ण करने व समाज को अपने साथ जोड़ने में असफल रही व सभी संस्थापक भी आयुषकर्म के आधीन इस संसार से महाप्रयाण कर गये।

पुनः जब वर्ष 2001 में भगवान महावीर का 2600वें जन्म कल्याणक महोत्सव राष्ट्रीय स्तर पर बी.एम.एम.एस. के नेतृत्व में मनाया जाना था उस समय उसमें कॉन्फ्रेंस को उसमें सम्मिलित नहीं किया गया था। जिसका उस समय कॉन्फ्रेंस के अध्यक्ष श्री जे.डी. जैन ने खुलकर विरोध किया। बी.एम.एम.एस. के क्रियाकलापों को अपने संज्ञान में लेते हुए उन्होंने पाया कि संस्था के मूलस्वरुप के साथ अवांछनीय व गैर कानूनी छेड़छाड़ की गई है तथा संस्था में से स्थानकवासी कॉन्फ्रेंस का प्रतिनिधित्व समाप्त कर, श्री एम.सी. शाह, मुम्बई को स्थानकवासी समाज का मुखौटा बनाकर संस्था में बैठाया हुआ है। उस समय श्री जे.डी. जैन साहिब ने उस विषय में कॉन्फ्रेंस का बड़ी स्पष्टता व निर्भीकता के साथ पक्ष रखते हुए जन्म कल्याणक आयोजन समिति में कॉन्फ्रेंस को उचित प्रतिनिधित्व दिलवाया। श्री जे.डी. जैन साहिब के कार्यकाल के बाद यह संस्था पुनः निष्क्रिय हो गई व लोग भी इसे फिर से भूल गये।

तद्उपरांत वर्ष 2014 में पुनः कॉन्फ्रेंस के निवर्तमान अध्यक्ष श्री नेमनाथ जी जैन के संज्ञान में पूरा विषय आया तो पुनः स्थानकवासी कॉन्फ्रेंस की ओर से अपने अधिकारों की मांग करते हुए इस संस्था के पुर्नउत्थान व इसमें स्थानकवासी समाज की भूमिका को लेकर अपनी प्रतिबद्धता व्यक्त की गई तथा विभिन्न पक्षों से बातचीत का सिलसिला प्रारंभ किया गया। दिगम्बर जैन समाज में उस समय बी.एम.एम.एस. की स्थापना में कॉन्फ्रेंस की भूमिका तथा भागीदारीता पर अपनी स्पष्ट सहमति प्रदान की और यह माना कि स्थानकवासी समाज का प्रतिनिधित्व जैन कॉन्फ्रेंस द्वारा ही किया जाना चाहिए। अन्य पक्षों से बातचीत प्रारंभ की गई परंतु अपने पूर्वाग्रहों के कारण अपेक्षित सफलता नहीं मिल पाई। पत्राचार में श्री एम.सी. शाह ने यह स्वीकार किया कि उन्होंने स्थानकवासी समाज का प्रतिनिधित्व पैसे देकर खरीदा है जिसके प्रत्युत्तर में निवर्तमान अध्यक्ष श्री नेमनाथ जी जैन ने आधिकारिक तौर पर उन्हें अपना हिसाब प्रस्तुत करने के लिये कहा और वचन दिया कि यूं तो किसी समाज का नेतृत्व व प्रतिनिधित्व बिकाऊ नहीं होता, फिर भी हिसाब समुचित पाये जाने पर उनका हिसाब कर दिया जायेगा।

जिस समय संस्था का गठन किया गया उस समय के वर्ष 1974 के मूल संविधान के अनुसार इस संस्था में पूरे विश्व का कोई भी महानुभाव बिना किसी भेदभाव के सदस्यता प्राप्त कर सकता था। लेकिन खोज करने पर यह पाया गया कि इस संस्था की सदस्यता कभी खोली ही नहीं गई और वर्ष 1992 में एक कथित रुप से फर्जी संविधान संस्था पर लागू कर दिया गया एवं संस्था के द्वार पूरे समाज के लिये सदैव के लिये बंद कर दिये गये और यह संस्था सामाजिक संस्था ना होकर एक प्राईवेट कल्ब बन गई।

निवर्तमान अध्यक्ष श्री नेमनाथ जी जैन के कार्यकाल में यह स्पष्ट निर्णय लिया गया कि बी.एम.एम.एस. के पुर्नउद्धार, उद्देश्यों की पूर्ति व इस संस्था को समाज को समर्पित करने व साथ-साथ इस संस्था में स्थानकवासी समाज का प्रतिनिधित्व एव नेतृत्व प्राप्त करने के लिये कॉन्फ्रेंस हर संभव प्रयास करेगी व किसी भी कीमत पर पीछे नहीं हटेगी। इसके लिये एक विशेषाधिकार समिति का गठन भी किया गया। उस समय बी.एम.एम.एस. में मौजूद पक्षों में आपस में खींचतान व वाद-विवाद जारी था लेकिन कॉन्फ्रेंस ने स्पष्ट निर्देश दिया कि आपसी सहमति व विचार-विमर्श से बात सुलझ जाये और मामला अदालतों के समक्ष ना ले जाया जाये। इस विषय में 11 जनवरी 2016 को दिगम्बर समाज के प्रतिनिधियों के साथ बैठक बी.एम.एम.एस. के प्रांगण में श्री निर्मल जी जैन सेठी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई, जिसमें बी.एम.एम.एस. के महामंत्री श्री एम.पी. जैन भी सम्मिलित हुए। इस बैठक में बी.एम.एम.एस. के भविष्य के लिये आगे का प्रारुप तय किया गया तथा एक दूसरे के साथ भागीदारी करते हुए दोनों समाजों ने इस संस्था को समाज समर्पित करने का संकल्प लिया। जिसे उस समय श्रीमती इंदु जी जैन (कार्याध्यक्षा- बी.एम.एम.एस.) ने भी अपनी सहमति प्रदान की।

पूर्वाग्रहों के आधीन कुछ महानुभाव बातचीत के रास्ते को छोड़कर अदालतों में चले गये और करीब सात-आठ मुकद्मे अदालतों के समक्ष दायर किये गये। जिसके परिणाम स्वरुप, कोई और हल ना देखते हुए, अंततः दिगम्बर व स्थानकवासी समाज को संस्था में हुई सभी संवैधानिक अनियमितताओं को अदालत के समक्ष रखना पड़ा व दोनों समाजों की आज्ञानुसार **श्री अनिल जैन व राजीव जैन बनाम** बी.एम.एम.एस. पटियाला हाऊस कोर्ट में मुकदमा दाखिल किया गया, जो इस समय विचाराधीन है।

दिनांक 19 मई 2017 की बैठक में कॉन्फ्रेंस की ओर से अपनी नीति व दिशा पूर्णतयाः स्पष्ट की गई कि संस्थाओं का निर्माण समाज को जोड़ने से होता है, अध्यक्ष जी की ओर से यह स्पष्ट किया गया कि या तो यह संस्था वर्ष 1974 के मूल संविधान के अनुसार चलेगी जिसमें बिना किसी भेदभाव व पंथवाद के समाज के प्रत्येक व्यक्ति को संस्था के सदस्य बनने व जुड़ने का अधिकार प्राप्त हो या फिर यदि संस्था को चार सम्प्रदायों को संयुक्त उपक्रम के रुप में चलाना है तो स्थानकवासी समाज का नेतृत्व व प्रतिनिधित्व सिर्फ और सिर्फ जैन कॉन्फ्रेंस करेगी। अध्यक्ष जी ने यह भी स्पष्ट किया कि इस विषय पर युग प्रधान आचार्य सम्राट पू. श्री शिव मुनि जी म. से समुचित मार्ग दर्शन प्राप्त कर लिया गया है। ज्ञात हुआ कि देशभर के पूरे दिगम्बर समाज ने श्रीमती इंदु जैन को बी.एम.एम.एस. में अपना नेतृत्व करने का अधिकार दिया है और उन्होंने इस बैठक में जैन कॉन्फ्रेंस के प्रतिनिधित्व को पूर्ववत स्वीकार किया।

जैन कॉन्फ्रेंस सभी पक्षों से, विशेषतौर पर श्वेताम्बर मूर्ति पूजक व तेरापंथ समाज के जो प्रतिनिधि बी.एम.एम.एस. में अपनी भूमिका निभा रहे हैं, उनसे विनम्र निवेदन करती है कि वे संस्था में सिर्फ अपने अधिकारों व प्रतिनिधित्व पर अपना ध्यान केन्द्रित करें और यदि अन्य समाज के प्रतिनिधि यह निर्णय करेंगे कि स्थानकवासी समाज का नेतृत्व कॉन्फ्रेंस की वजाय श्री एम.सी. शाह या कोई और व्यक्ति करेगा, तो इस पर कॉन्फ्रेंस को गहरी आपत्ति है और इस तरह का कोई भी प्रयास आपसी सामंजस्य व सौहार्द के हित में नहीं होगा। कॉन्फ्रेंस की ओर से सभी पूज्य मूरधन्य संतों व परम श्रद्धेय आचार्य श्री महाश्रमण जी महाराज से भी विनती है कि वो बी.एम.एम.एस. में प्रतिनिधित्व कर रहे महानुभावों को उचित दिशानिर्देश प्रदान करें।

स्थानकवासी समाज के व जैन कॉन्फ्रेंस के प्रत्येक सदस्य से भी अपेक्षा है कि वह बी.एम.एम. एस. में जैन कॉन्फ्रेंस द्वारा लिये गये निर्णयों का सम्मान करते हुए अपने व्यक्तिगत हित, स्वार्थ व पूर्वाग्रहों का त्याग करते हुए समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी व प्रतिबद्धता व्यक्त करेंगे तथा भीतरघात के किसी भी दोष से अपने आप को आरोपित नहीं होने देंगे व किसी के बहकावे में नहीं आयेंगे।

वर्तमान परिस्थितियों में हमें आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि बी.एम.एम.एस. पुनः अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिये खड़ी हो जायेगी व आने वाले समय में युगों-युगों तक पूरे विश्व के जैन समाज को एकसूत्र में पिरोकर जैन समाज को सबल नेतृत्व प्रदान करेगी तथा दिल्ली में भगवान महावीर का एक विश्वस्तीय व अनूठे स्मारक का निर्माण करेगी। ज्ञात रहे कि जैन कॉन्फ्रेंस ने इस संस्था की स्थापना में अपनी महत्त्वपूर्ण भागीदारी व भूमिका प्रदान की थी और अब इस संस्था के पुर्नउद्धार व पुर्ननिर्माण के लिये जैन कॉन्फ्रेंस पुनः अपने आपको पूर्ण तत्परता के साथ समर्पित करती है। कॉन्फ्रेंस यह मानती है कि बड़ी से बड़ी समस्याओं का समाधान सौहार्दपूर्ण वातावरण बनाकर बातचीत के द्वारा किया जा सकता है और इस कड़ी में सभी पक्षों से विवादों को सुलझाने के लिये, कोर्ट केस वापिस लेने के लिये व उचित समाधान की ओर आगे बढ़ने के लिये कॉन्फ्रेंस आगे बढ़कर महत्त्वपूर्ण भूमिका के लिये तैयार है। ✧✧

संतों से सामान्य भाषा व्यवहार कैसे करें

क्र.स.	अशुद्ध	शुद्ध
1.	आप कब आये हैं?	आप कब पधारे?
2.	आप कब आओगे?	आप कब विहार करेंगे?
3.	आप मेरे घर ठहरें।	मुझे शय्यातर का लाभ दिराएं।
4.	आप कितने लोग हैं?	आप कितने ठाणे हैं?
5.	यहाँ कितने दिन रहने का कार्यक्रम है?	यहां कितने दिन विराजने का भाव है?
6.	आप बहुत जल्दी-जल्दी चलकर आये हैं?	आप उग्र विहार करके पधारे हैं?
7.	आप का स्वाथ्य कैसा है?	आपके सुखसाता हैं?
8.	आप कहाँ ठहरे हैं?	आपका ठिकाना कहा हैं?
9.	रास्ते में कोई कष्ट तो नहीं हुआ?	विहार में कोई परिषद तो नहीं हुआ?
10.	हमारा गाँव अच्छा है?	हमारा क्षेत्र साताकारी है?
11.	हमें याद करते रहना।	हमारे पर कृपा दृष्टि रखना।
12.	हमें आर्शीवाद दें।	हमें मंगल पाठ सुनाएं।
13.	सारी मुझे खेद है।	मैं आपको खमाता हूँ।
14.	आपके संबंधी लोग कहा हैं।	आपके जन आये हैं
15.	साथ वाला आदमी कहाँ हैं?	काशीद कहाँ है?

– प्रेषकः महेश नाहटा

चातुर्मास आत्मकल्याण का महायज्ञ

- शुभांगी मनोजकुमार कात्रेला, निगडी (महाराष्ट्र)

चातुर्मास पर्व के हर पल सुहाने लगे,
धर्म की धारा हम मिलकर बहाने लगे,
त्याग-तप के फूल आज मन में खिलाने लगे,
धर्म के गीत हम गुनगुनाने लगे।।

नये के प्रति हर मनुष्य में सहज ही उल्लास होता है। नई तरंगे, नई थिरकन, नई उर्मियाँ होती है। ऐसा ही आज का चातुर्मास पर्व हमारे जीवन में नवदीप जलाने के लिए, नये संकल्पों को प्रबल बनाने के लिये, स्वर्णिम प्रभात की अगवानी लेकर, आज्ञानावरण को हटाकर ज्ञान प्रदीप करने आया है।

जा जा वच्चइ रयणी, न सा पडिनियत्तई।
धम्मं च कुणमाणस्स, सफला जन्ति राईओ।।

उत्तराध्ययन सूत्र में कहा गया है, चातुर्मास का समय वीतराग वाणी का स्वर्णिमं संयोग लेकर आया है। आप इस संयोग का लाभ उठाएं, बीते समय को अब सुधार लें। अपने आपको धर्मक्रियाओं में, शुभचिंतन में लगा लें।, हमें चातुर्मास के पावन काल में धर्मध्यान की झड़ी लगाकर आश्रवद्वारा को बंद करके संवर में समय बिताना है। नित्य जिनवाणी सुनकर उसे हमें अपने जीवन में उतारना है। भारतीय संस्कृति त्याग, संयम और अध्यात्म की संस्कृति है। धर्म हर व्यक्ति को आत्मदर्शी बनाने की प्रेरणा देता है। पवित्र मन और विचारधारा ही भारतीय संस्कृति की मूल परम्परा और मूल विचारधारा है। जैन धर्म आत्मवादी धर्म है। आत्मा का केन्द्रीय तत्व है। 'आत्मा' मूल स्वरुप में शुद्ध, अमूर्त, ज्योतिर्मय और निरामय है, उसी तरह उत्तर स्वरुप वह अशुद्ध, मूर्त, अंधकारमय भी है। आत्मा ही अपने सुख-दुःख का विधाता स्वयं है। धर्म का प्रभाव ही आत्मा में स्थित कषाय और विकारों को नष्ट करके हमारा मन पवित्र बना देता है।

जिनेन्द्रपूजा गुरुपर्युपास्तिः, सत्वानुकंपा शुभपात्रदानम।
गुणानुरागः श्रुतिरागमस्य, नृजन्मवृक्षस्य फलान्यमूनि।

चातुर्मास पर्व स्वपर कल्याण के लिए एक सुनहरा समय है। चातुर्मास साधक, साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविका हेतु धर्म आराधना, साधना व धर्म प्रेरणा संदेश के लिए विशिष्ट महत्त्व रखता है। पूरे वर्षभर में तीन चातुर्मासिक पर्व आते हैं। आषाढ़ पूर्णिमा, कार्तिक पूर्णिमा व फाल्गुन पूर्णिमा इन तीनों में आषाढ़ी पूर्णिमा वर्षाकालीन का विशेष महत्त्व है। आठ माह पद यात्रा विचरण करने वाले संत-साध्वी जी वर्षावास हेतु एक ही स्थान पर चार माह के लिए स्थित हो जाते हैं। इस समय साधु-साध्वी आत्म-कल्याण, ज्ञान, दर्शन, चरित्र, तप की आराधना व जीवों की रक्षा, धर्म अनुष्ठानों की विशेष प्रेरणा देते हैं। चातुर्मास पर्व को आत्मशोधन का पर्व भी कहा गया है। वह अपनी आत्मा पर लगे कर्म रुपी मैल की साफ-सफाई करता है। धर्म की आराधना करने के लिए यह पर्व सुंदर अवसर है। कल्पसूत्र में कहा गया है कि यह पर्व आध्यात्मिक पर्व है, आत्म-जागरण का संदेशवाहक भी है। वह सुत आत्मा को जगाकर, आत्मा द्वारा आत्मा को पहचानने की शक्ति देता है। जहां आज अनेक प्राचीन सभ्यताओं, रीति-रिवाजों, भाषाओं आदि का संसार से लोप हो रहा है, वहीं प्रेम श्रद्धा और धर्म से मैत्री करने का संदेशवाहक यह चातुर्मास पावन पर्व जैन समाज अत्यंत श्रद्धा और उल्लास से मनाता है। आज के सदर्भ में अतीव आवश्यकता है कि इस पर्व को साम्प्रदायिकता को जन-जन तक पहुंचाया जाए। वर्तमान युग में जब मानव गुस्से का व्याकरण बनता जा रहा है। मानवीय भावनाएं खोखली होती जा रही है। अपनों से दूर हम सब अपने-अपनें दायरों में कैद

होकर अकेलेपन का अभिशाप झेल रहे हैं। पाश्चात्य सभ्यता की ओर उन्मुख होकर वेलेन्टाइन डे, हग डे, रोज डे आदि पूरे जोश से मनाते हैं। इसलिए आज ज़रुरत है इस पर्व की प्रासंगिकता को पहचानते हुए अपनी सभ्यता, संस्कृति की ओर उन्मुख होने का प्रयास करें। इस चातुर्मास में हम लोगों को यह संकल्प दिलाएंगे कि हमें भ्रष्टाचारियों के विरोध में सामाजिक बहिष्कार करना है। कन्या भ्रुण हत्या को पूरी तरह रोकना है। जीवन में सात्विकता लाने का प्रयास करना है। नशे से दूर रहना है।

मनुष्य जन्म अनमोल है, जीवन क्षण भंगुर है। खुद के शिष्यकार खुद बने। दूसरों के निर्णय के भरोसे चलने वाला जीवन व्यर्थ है। समाज के प्रति हमारे दायित्व का एहसास हर वक्त होना आवश्यक है। इस चातुर्मास में हम आत्मावलोकन करें कि इससे पूर्व मैंने क्या पाया है? क्या खोया? क्या खोया हुआ मैं वापिस प्राप्त कर सकता हूँ। असंभव कुछ भी नहीं है। शक्तियाँ हमारे भीतर ही मौजूद हैं, उन्हें हमें प्रकट और जागृत करने की आवश्यकता है। हमारा संकल्प दृढ़ हो, हौसले बुलंद और समर्पित भाव हो। श्रद्धा और भक्ति हो, कुछ नये करने की तमन्ना हो।

इस पर्वकाल में आत्मशोधन करके अपने प्रकृति स्वभाव में परिवर्तन लाएंगे और दुर्गुनों का नाश करके सद्गुणों का बीज़ारोपण करेंगे। व्यसनमुक्त संस्कारयुक्त जीवन के साथ हर वर्ग को जोड़ते हुए धर्म के सही मर्म को समझाते हुए स्वाध्याय, ध्यान, तपस्या की ज्योति जलाएंगे तभी चातुर्मास का यह सुनहरा समय सार्थक होगा, तभी परम पद प्राप्ति की मंज़िल की ओर अग्रसर हम हो पाएंगे।

चातुर्मास **पर्व, आत्मा को निर्मल बनाने आया है।**
चातुर्मास पर्व, समता,
ममता के सुमन खिलाने आया है।
वीतराग प्रभु की आराधना-साधना के साथ-साथ,
चातुर्मास पर्व, प्रसुप्त आत्मा को जगाने आया है।।

✧✧

अगर आपको जैन प्रकाश पत्रिका नहीं मिल रहा है तो कृपया ध्यान दें

1. आपने आजीवन सदस्यता फार्म पर जो पता दिया था अगर वह बदल गया है तो उसकी सूचना केन्द्रीय कार्यालय को देवें।

2. आपको जैन कॉन्फ्रेंस का आई-कार्ड नहीं मिला है तो उसकी जानकारी हमें अवश्य देवें।

3. अगर आपके परिवार में एक से अधिक पत्रिका प्राप्त हो रही है तो इसकी सूचना भी हमें अवश्य देवें।

– प्रधान सम्पादक

महिला शाखा द्वारा आयोजित गतिविधियाँ

जैन कॉन्फ्रेंस राष्ट्रीय महिला शाखा द्वारा धार्मिक व सामाजिक सेवा के कार्य

नई दिल्ली : भगवान महावीर जयंती के तालकटोरा स्टेडियम समारोह में राष्ट्रीय अध्यक्षा सौ. रुचिरा सुराणा जैन द्वारा सौ. संतोष सुरेश जैन को राष्ट्रीय उपाध्यक्षा बनाने की दिल्ली में घोषणा की। तभी से सौ. संतोष जैन ने राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सदस्य बनाने के लिए सौ. रुचिरा सुराणा जी को निम्नलिखित नाम भेजे गये जिसमें:-

1. श्रीमती कमलेश जी जैन - मार्गदर्शक
2. श्रीमती वीना जैन - मंत्री
3. श्रीमती कौशल्या जैन - सदस्य
4. श्रीमती अन्नु जैन - सदस्य
5. श्रीमती उर्मिल जैन - सदस्य
6. श्रीमती निर्मल जैन - सदस्य
7. श्रीमती निर्मल जैन - सदस्य
8. श्रीमती कविता - सदस्य
9. श्रीमती शीला जैन - सदस्य
10. श्रीमती मधु जैन - सदस्य
11. श्रीमती वीना जैन - सदस्य
12. श्रीमती निर्मल जैन आदि को कार्यकारिणी सदस्य

बनाया, तभी से राष्ट्रीय महिला शाखा ने भिन्न-भिन्न कार्य किये।

1. भगवान महावीर जयंती के उपलक्ष्य में 16 अप्रैल, 2017 को विशाल आँखों का फ्री लैंस युक्त ऑपरेशन करवाये एवं निःशुल्क दवाई व चश्मे भी वितरित किये गए।
2. दो ज़रुरतमंद बच्चों को प्राईवेट स्कूल में दाखिला करवाया, जिसका सालाना खर्चा चालीस हजार से ऊपर है।
3. 7 मई, 2017 को फ्री हृदय रोग एवं कैंसर जाँच शिविर लगाया गया।
4. 19 मई, 2017 को श्रमण संघीय मंत्री पू. श्री आशीष मुनि जी म. सा. के सान्निध्य में राष्ट्रीय अध्यक्षा श्रीमती रुचिरा सुराणा जी के द्वारा जरुरतमंद बच्चों को पुस्तक-सामग्री का अन्य सामान्य वितरित किया गया। गुरुदेव के सान्निध्य में ही सभी सदस्यों को पत्र दिये गये तथा राष्ट्रीय महिला उपाध्यक्षा श्रीमती संतोष जी ने सभी सदस्यों के द्वारा राष्ट्रीय अध्यक्षा जी को माला और शॉल से सम्मानित किया गया।
5. 20 मई, 2017 से 1 जून, 2017 तक स्वयं रक्षा (self Defence) का कैम्प लगाया गया। जिसमें बहुत से बच्चों व महिलाओं ने और उपाध्यक्षा श्रीमती संतोष जैन ने भी भाग लिया।
6. 19 मई, 2017 से 21 मई, 2017 तक जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मोहनलाल चोपड़ा जी जैन, महिला अध्यक्षा सौ. रुचिरा सुराणा जैन व अन्य वरिष्ठ पदाधिकारियों के साथ पानीपत, अम्बाला व लुधियाना भी गए।
7. 11 जून, 2017 से 21 जून, 2017 तक जोधपुर (राजस्थान) वालों का धार्मिक नैतिक संस्कार शिविर लगाया गया। जिसमें अनेक बच्चों व महिलाओं ने भीषण गर्मी होने के बावजूद भी बगैर पंखे, कूलर के दो दो सामायिकें हर रोज की।
8. ज़रुरतमंद लड़की की शादी में 75 हजार से ऊपर का सामान व नकद राशि दी। **प्रेषक : संतोष जैन**

राजस्थान महिला शाखा द्वारा ज्ञान वर्द्धक प्रतियोगिता का विमोचन

भीलवाड़ा (राजस्थान) : श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थाकनकवासी जैन कॉन्फ्रेंस महिला शाखा राजस्थान द्वारा ज्ञानवर्द्धक प्रतियोगिता का प्रथम प्रश्न-पत्र निकाला गया। जिसका विमोचन जैन कॉन्फ्रेंस राजस्थान के अध्यक्ष श्री नेमीचन्द जी जैन धाकड, कार्याध्यक्ष श्री अरिहंत सिसोदिया, महामंत्री बलवंत हींगड़ जैन, कोषाध्यक्ष श्री लोकेश धाकड, वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री नवरतन बंब, उपाध्यक्ष श्री देशबन्धु हींगड, राजेन्द्र गोखरु आदि के द्वारा 1 जून 2017 को जैन कॉन्फ्रेंस राजस्थान की मीटिंग में किया गया। प्रश्न-पत्र के आयोजक वैय्यावच्च समिति की अध्यक्षा श्रीमती विजयादेवी जी डूंगरवाल जैन है। प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय को विशेष पुरस्कार एवं 31 सांत्वना पुरस्कार दिए जाएंगे। किसी को प्रश्न-पत्र भरना है तो लाड़जी मेहता जैन, अध्यक्षा, मो. 087641 22999, पुष्पा गोखरु जैन, 094141 84005 एवं नीता जी बाबेल जैन, कोषाध्यक्षा, 094141 57222 से सम्पर्क करे। प्रश्न-पत्र भरके भेजने की अंतिम तारीख 10 सितम्बर, 2017 तक है। परिणाम 3 अक्टूबर, 2017 सिद्ध जयंती भीलवाड़ा, (राज.) में घोषित किया जायेगा। **प्रेषक : लाड़जी मेहता जैन**

चेम्बूर में अम्बेश पाठशाला संस्कार शिविर सम्पन्न

मुंबई (महाराष्ट्र) : चेम्बूर नाका स्थित स्थानक भवन में गुरु अम्बेस जैन पाठशाला का संस्कार शिविर सम्पन्न हुआ। जिसमें बाल-बालिकाओं ने बड़े ही हर्षोल्लास से भाग लिया। शिक्षिका मीना डांगी ने बताया कि महामंत्र नवकार तथा 24 तीर्थंकर आज का मुख्य विषय था। ज़ोन प्रभारी पुष्पा सोनी एवं अन्य शिक्षिकाओं द्वारा पूछे गये प्रश्न के निधि खरवड़, द्रोण सोनी, गार्गी खरवड़, परि डांगी, ईशान पोखरणा, नेहल डांगी, तनिषा पोखरणा इत्यादि ने अच्छे उत्तर दिये। वरिष्ठ शिक्षिका सुधा बड़ोला ने बताया कि सभी उपसंघों में महीने में एक बार ऐसे शिविर का आयोजन अवश्य ही होना चाहिए। इस अवसर पर रींकू डांगी, स्वीटी लोढ़ा, दीपिका लोढ़ा, ज्योत्स्ना लोढ़ा इत्यादि की उपस्थिति रही। सभी बच्चों को सांत्वना पुरस्कार दिये गये।

प्रेषक : पुखराज सोनी बिनोल

समाचार - प्रकाश

उपाध्याय पू. श्री प्रवीणऋषि जी म. की प्रेरणा से राजेन्द्र-पुष्पा कीमती परिवार ने गुरु भगवंतों के ठहरने के लिए फ्लैट भेंट किया

हैदराबाद (तेलंगाना) : प्रज्ञा महर्षि उपाध्याय प्रवर पू. श्री प्रवीणऋषि जी म. आदि ठाणा के नगर विचरण कार्यक्रम के तहत बंजारा हिल्स में कीमती एन्केलव स्थित जैन रत्न श्री राजेन्द्र कुमारजी कीमती जैन, श्री विनोद जी, श्री आनंद जी, श्री विक्रम जी कीमती जैन के निवास **'पुष्पराज कुंज'** में पदार्पण हुआ। यह क्षेत्र नया डेवलप हुआ है। काफी जैन परिवार यहां आकर बसे है। इसीलिए शेषकाल में विचरण करने वाले साधु-साध्वियों जी महाराज का आवागमन रहता है। इन साधु-साध्वियों को ठहरने की सुविधा को ध्यान में रखते हुए राजेन्द्र-पुष्पा कीमती परिवार ने अपने नवनिर्मित गोकुल रेसीडेन्सी बिल्डिंग में एक फ्लैट साधु-संतों के ठहरने हेतु उपलब्ध करवाया है, जिसका उद्घाटन 21 मई 2017 को उपाध्याय पू. श्री प्रवीणऋशि जी म. के मंगलय सान्निध्य में नवकार महामंत्र के जाप के साथ हुआ। धर्मसभा को संबोधित करते हुए उपाध्याय प्रवर

ने पू. श्री अमालेकऋषि जी के जीवन पर प्रकाश डालते हुए कहा कि वे युगपुरुष थे। उनके पदार्पण से दक्षिण भारत तथा सकल जैन समाज के सौभाग्य का उदय हुआ। उन्हें दक्षिण में लाने का श्रेय श्रीमान् पन्नालालजी कीमती जैन को जाता है। धर्मसभा में पू. श्री तीर्थेश मुनि जी म. ने मंगलाचरण प्रस्तुत किया। श्राविका रत्न सौ. पुष्पाजी कीमती जैन ने स्वागत गीतिका प्रस्तुत की व सौ. वसुमति जी कीमती जैन ने स्तवन प्रस्तुत किया।

धर्मसभा का संचालन श्री स्वरूपचंदजी कोठारी ने किया। इस अवसर पर त्रयनगर की अनेक संस्थाओं के गणमान्य सज्जनों और स्नेही मित्रो, सगे सबंधियों ने राजेन्द्र-पुष्पा कीमती को बधाईयाँ प्रेषित करते हुए स्वागत सम्मान किया। इस अवसर पर सर्वश्री सुरेन्द्र जी लुणिया, कांतिलाल जी नाहर, प्रकाश ज़ी लोढ़ा, सम्पतराज जी कोठारी, सुनील जी ओस्तवाल, संतोष जी खिंवसरा, नवरतनमल जी गुंदेचा, अशोक जी संकलेचा, इन्छरचंद जी गौतमचंद जी चोरड़िया, गौतम जी गुगलिया, दिलीप जी धारीवाल, हर्षकुमार जी मुणोत, अशोक जी बोहरा, अमृत कुमार जी, सज्जनराज जी गांधी, गोविंद जी राठी तथा सौ. उर्मिला जी डंक, शोभा जी बोहरा, ममता जी सांख्ला, साधना जी सिसोदिया, मंजु जी माहेश्वरी, निशा जी शाह आदि अनेक जैन-अजैन बंधुओं ने उपस्थित होकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई।

प्रेषक : पुष्पा कीमती जैन

श्री ऑल इंडिया जैन कॉन्फ्रेंस पंचम जोन तीर्थ यात्रा एवं सीडी का विमोचन

पालीताना (गुजराज) : श्री इंडिया जैन कॉन्फ्रेंस पंचम जोन महिला विभाग द्वारा आयोजित स्व. सज्जनबाई बंकटलाल जी कटारिया जैन की स्मृति में तथा तपस्वी श्रीमती पदमाबाई गौतमचंद रायसोनी की तपस्या की अनुमोदना पालीताना शंखेश्वर सप्ततीर्थ यात्रा का आयोजन, पंचम जोन महाराष्ट्र की अध्यक्षा प्रा. सुरेखा प्रकाश कटारिया ने किया। इस तीर्थयात्रा में 101 यात्री शामिल थे। तीर्थ यात्रा शुभारंभ पुणे स्टेशन से जैनम जयती शासनम का झंडा दिखाकर श्री ऑल इंडिया जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य बालासाहेब धोका एवं कटारिया फाऊंडेशन के संस्थापक धेवरचंद जी कटारिया ने किया।

यात्रा में पालीताना की पवित्र भूमि पर जैन कॉन्फ्रेंस की राष्ट्रीय महिला अध्यक्षा सौ. रुचिरा जी सुराणा की प्रेरणा से डॉ. श्वेता राठोड, प्रा. सुरेखा कटारिया एवं डॉ. विश्वास मेहेदळे के व्याख्याण की सीडी का विमोचन डॉ. अशोक बोरा के करकमलों से हुआ।

इस अवसर पर उद्योगपति श्री मनोजजी सोलंकी, धनेश जी धाड़ीवाल, शारदाबाई शिंगवी, तपस्वी पदमबाई रायसोनी, ललित कुमार चोपड़ा, सुरेशलाल राठोड की उपस्थिती में सीडी का विमोचन हुआ। प्रो. सुरेखा कटारिया ने अपने मनोगत व्यक्त किये। इस भक्ति संध्या में सभी का दिल झूम उठा। भक्तिभाव के साथ सरस्वती की आराधना करते हुए दादा का नाम लेते-लेते शत्रुंजय पर्व की यात्रा सम्पन्न हुई। उद्योगपति प्रकाश जी कटारिया ने अहमदाबाद में श्रीसंघ को अनुमोदन देते हुए सब को शुभकामनाऐं दी।

तीर्थयात्रा शंखेश्वर पार्श्वनाथ यादी सप्ततीर्थं का दर्शन लेते हुए नया तीर्थक्षेत्र मणिलक्ष्मी जाने पर समारोह हुआ और बड़ौदा से पुणे 5 तारीख का प्रातः पहुंची। यात्रा सफल होने के लिए मा. प्रकाश जी कटारिया, राजेन्द्र कटारिया, रमेश कटारिया, श्रेयस कटारिया, शलाका कटारिया, डॉ. श्वेता राठोडद्व निलेश राठोड, महावीर देसरडा, धनेश शिंगवी आदि का बड़ा योगदान रहा। इस पंच दिवसीय यात्रा में ध्यान, आराधना, भक्तिभाव के साथ 5 जून, 2017 को श्रीसंघ पुणे पहुंचा। यहां पहुंचने पर सभी यात्रियों का तहदिल से आभार एवं अभिनंदन हुआ।

प्रेषक : डॉ. अशोककुमार एन. पगारिया जैन

पू. श्री डॉ. समकितमुनि जी म.सा. का चातुर्मास प्रवेश

जुन्नर, पुणे (महाराष्ट्र) : का यशस्वी चातुर्मास सम्पन्न कर पुणा, बैंगलुर, वेलुर के मार्ग से उग्र विहार करते हुए चेन्नई के उपनगर पेराम्बुर में इस वर्ष का चातुर्मास करने हेतु श्रमण संघीय सलाहाकार, भीष्म पितामह राजर्षि पूज्य गुरुदेव श्री सुमतिप्रकाश जी म. व नेपाल-हिन्द गौरव, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर पूज्य गुरुदेव डॉ. विशालमुनि जी म. के सुशिष्य गुरु निहाल परिवार के मेघावी संत रत्न आगमज्ञाता डॉ. श्री समकितमुनि जी म. आदि ठाणा-3 का चेन्नई महानगर प्रवेश गत 24.5.2017 को आवडी में हुआ। आप श्री चेन्नई के विभिन्न उपनगरों का विचरण करते हुए धर्मगंगा बहा रहे हैं। नित्य अनेक दर्शनार्थी प्रवचन, दर्शन का लाभ ले रहे हैं। आप श्री का चातुर्मास प्रवेश भव्य रुप से आगामी 5 जुलाई 2017 को पेरम्बूर में होगा। इसके लिये पेराम्बूर श्रीसंघ चातुर्मास की तैयारी में पूरे जोश के साथ लगा हुआ है।

प्रेषक : चेतन पटवा

आनंद नवकार परिवार द्वारा प्राईमरी विद्यालय का उद्घाटन

अहमदनगर (महाराष्ट्र) : आनंद नवकार परिवार की ओर से संचालित आनंद प्राईमरी विद्यालय का उद्घाटन प्रसिद्ध समाज सेवी एवं नेत्रतज्ज्न डॉ. प्रकाश एवं डॉ. सुधा कांकरिया के करकमलों द्वारा तथा जैन कॉन्फ्रेंस के महामंत्री डॉ. प्रो.. अशोककुमार एन. पगारिया की अध्यक्षता दिनांक 20जून, 2017 को सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर संस्था के सचिव श्री मनोज बाफना, श्री खजानजी मनोज सेठीया, एड. बोरा, सौ. शर्मिली बाफना, सौ. लता पगारिया जैन आदि उपस्थित थे।

प्रेषक : लता पगारिया

पू. श्री यश गुरुणी जी म.सा. का शताब्दी वर्ष हर्षोल्लास से मनाया

मुम्बई (महाराष्ट्र) : उपसंघ सांताक्रुज मेवाड संघ के नेतृत्व में एवं महासती प.पू. सुधाकंवरजी म. सा आदि ठाणा-5 के सानिध्य में 'यश गुरुणी' शताब्दी वर्ष हर्षोलास से मनाया गया। **इस अवसर पर जैन कॉन्फ्रेंस राष्ट्रीय महिला की ओर से 'महापुरुषों की जीवन से हम भी कुछ ले सकते हैं'** निबंध स्पर्धा का आयोजन भी किया गया। प्रतियोगिता पूर्णतः पेपरलेस थी। कोई भी पेपर, कागज, पोस्ट, कोरियर का खर्चे से रहित थी। प्रतियोगिता का टेक्नॉलॉजी के माध्यम का सहारा लेते हुए वाट्सएप और फेसबुक के सहारे प्रचार-प्रसार किया गया और निबंध भी इसी के द्वारा मंगवाए गये। सैंकड़ो प्रतियोगियों ने भाग लिया।बहुत ही सुन्दर शब्दों में सभी ने अपने भाव रखे जिनमें से लगभग 19 प्रतियोगियों के निबंध अकृष्ट थे।

प्रतियोगिता की सफलता के लिये लाजवंतीजी बड़ाला, सुनदंजी जी भंसाली, मंजुजी दर्डा एवं एकताजी डागलिया, रेणी बोहरा, सुशीला जी आदि ने परिश्रम किया। समारोह में राष्ट्रीय अध्यक्षा सौ. रुचिरा जी सुराणा जैन ने सौ०. कंचन लोकेश जी सिंघवी, सांताक्रुज को राष्ट्रीय प्रचार मंत्री के पद की घोषणा की।

समारोह में विशेष सहयोगी मांगलिक जी बड़ाला, देवीमल जी बडाला, लादुलाल जी बाफणा, पुखराज जी सिंघवी, अशोक जी कच्छारा, दिनेश विसलोत, बसंतीलाल दुगड़, दिनेश बडालमिया, दिलीप पोखर्णा मनोज जी सिंघवी रहें। साथ ही प्रमुख अतिथि श्री मिठालाल जी सिंघवी, सुरेश आचलिया, सुरेश सिंघवी, रिखब सांखला, संतोष बेन सिंघवी, मंजु सिंघवी आदि की उपस्थिति रही।

सांताक्रुज श्रीसंघ से सुरेश जी लोढ़ा, मोहन जी बड़ालमिया, कमलेश उछतारा, विनोद कोठारी, चद्रप्रकाश विस्लोन, प्रहलाद जी सिंघवी, संजय दोषी राष्ट्रीय महिला अध्यक्ष सौ. रुचिराजी सुराणा, लाजवंती

बजल, रेण बोहरा, कैलाश बाफणा, सुशील जी डागलिया, मंजु लोढ़ा, सीया बडालमिया, निशा काठोरी, भावना पोखर्णा, किरण बिहलोन, शीलजी पोखर्णा, सुशील जी पोखर्णा आदि की उपस्थिति रही। समारोह का संचालन श्री लादुलाल जी बाफणा जैन ने किया। **प्रेषक : लाजवंती बजल**

जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय प्रबंध समिति सदस्य श्री सुनील मोहनलालजी चोपड़ा जैन दी नाशिक रोड़ देवलाली सहकारी बैंक के डायरेक्टर चुने गए

नाशिक (महाराष्ट्र) : श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली के राष्ट्रीय प्रबंध समिति सदस्य श्री सुनीलजी चोपड़ा जैन रविवार दिनांक 25 जून को दी नाशिक रोड़ देवलाली सहकारी बैंक के हुए पंच वर्षीय चुनाव (2017-2022) के लिए भारी मतों से डायरेक्टर के पद पर चुने गए। गौरतलब है कि दी नाशिक रोड़ देवलाली सहकारी बैंक के लगभग 65 हजार सदस्यगण है जोकि एक जिला स्तरीय बैंक है। इस बैंक में सभी समाज के सदस्यगण शामिल होकर अपने मतों का प्रयोग करते हुए डायरेक्टर पद के अपने मतदान का प्रयोग करते हैं। रविवार को डायरेक्टर पद के लिए हुए कुल 21 पदों में श्री सुनीलजी चोपड़ा जैन के साथ-साथ श्री अशोकजी चोरड़िया जैन भी डायरेक्टर पद पर चयनित हुए। उक्त चुनाव बहुत ही नजदीकी रहा।

आपको बता दें कि बैंक की उक्त स्थापना में जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मोहनलालजी चोपड़ा जैन का अभूतपूर्व योगदान रहा है आप बैंक के चेयरमैन भी रहे चुके है। जैन समाज के दो जैन सदस्य बैंक के डायरेक्टर चुने जाने पर समाज के लोगों में हर्ष की लहर हैं, जोकि समाज के सभी वर्गों में एकजुटता का परिचायक हैं। यह काफी महत्वपूर्ण चुनाव था, जिसमें दो पैनल बने थे। श्री सुनील जी सहकार पैनल के बैनर तले चुनाव लड़े। श्री सुनील जी के डायरेक्टर पद पर चयनित होने पर बधाई प्रेषित करने वालों का तांता लगा रहा। श्री सुनील जी ने सभी लोगों का आत्मीयता से धन्यवाद प्रेषित करते हुए पूर्ण निष्ठा एवं जिम्मेदारी से अपने कर्त्तव्यों का पालन करने का भरोसा दिलाते हुए प्रबुद्धजनों का आशीर्वाद ग्रहण किया।

प्रेषक : पारस मोदी जैन

जैन फेडरेशन द्वारा डायबिटीज़ जाँच शिविर

चेन्नई (तमिलनाडु) : जैन फेडरेशन द्वारा ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस तमिलनाडु के सहयोग के डायबिटीज़ एवं बी.पी. शिविर का अयोजन दिनांक 10 जून 2017 को ट्रस्ट के प्रांगण में किया गया। पू. श्री ज्ञान मुनि जी म., पू. श्री रवीन्द्र मुनि जी म., पू. श्री कपिलमुनि जी म. ठाणा आदि के सान्निध्य में किये गये इस जांच शिविर में लगभग 160 लोगों के डायबीटीज़ एवं ब्लडप्रेशर लेब टक्नीशियन द्वारा जाँच की गई। साथ ही 25 लोगों का थायरॉइड टेस्ट भी किया गया। जाँच में जिन लोगों को शिकायत थी उन्हें योगा, डामर व डॉक्टर की सलाह से दवाई लेने की सलाह दी गई।

कार्यक्रम को सफल बनाने में श्री आनंदमल छल्लानी जैन, महावीर चन्द बोहरा जैन, दिनेश बलगट जैन, भंवरलाल जी ओस्तवाल जैन, विजय उत्तम जैन, सुशीला जैन का विशेष सहयोग रहा। संस्था के चेयरमैन श्री प्रकाश गुलेछा जैन जी ने कांफ्रेंस के पदाधिकारियों को धन्यवाद दिया। **प्रेषक : वीर प्रकाश गुलेछा**

अल्पसंख्यक फेडरेशन की राष्ट्रीय समिति में डॉ. चोरड़िया जैन मनोनीत

चेन्नई (तमिलनाडु) : अखिल भारतीय जैन अल्पसंख्यक फेडरेशन के साहुकारपेट, चेन्नई शाखाध्यक्ष तमिलविद् डॉ. एस. कृष्णचंद चोरड़िया जैन को फेडरेशन की राष्ट्रीय कार्यसमिति में सदस्य मनोनीत किया गया है। मनोनयन 2017-2020 के तीन वर्षीय कार्यकाल के लिए किया गया है। राष्ट्रीय अध्यक्ष ललित गांधी ने बताया कि डॉ. चोरड़िया पिछले 35 सालों से रिसर्च फाउंडेशन फॉर जैनोलोजी के महासचिव रहते हुए जैन दर्शन के अध्ययन व अनुसंधान को बढ़ावा दे रहे हैं। तमिलनाडु से श्री आर. पदमचंद बाघमार को भी राष्ट्रीय कार्यसमिति में सदस्य बनाया गया है।

प्रेषक : जी. सम्पत बाघमार

श्री हस्तीमल खटोड़ जैन साहुकारपेट श्रीसंघ के मंत्री एंव प्रवक्ता बने

साहुकारपेट, चेन्नई (तमिलनाडु) : श्री हस्तीमल खटोड़ जैन को श्री एस.एस. जैन संघ के मंत्री एवं जैन कॉन्फ्रेंस तमिलनाडु के प्रवक्ता मंत्री बनाया गया। साहुकारपेट श्रीसंघ तमिलनाडु का सबसे प्राचीन श्रीसंघ का है। जिसमें प्रतिवर्ष चातुर्मास होते हैं। इस वर्ष भी श्रमण संघीय उपाध्याय प्रवर श्री रवीन्द्र मुनि जी म. सा आदि ठाणा-5 का चातुर्मास है। अध्यक्ष पद पर श्री आनंदमल जी छल्लानी एवं मंत्री पद पर श्री हस्तीमल खरोड को सर्वसम्मति से नियुक्त किया गया। उपाध्यक्ष पद श्री अनूपचंद भिडकत्या, सुमेरचंद जी चोरडिया, कोषाध्यक्ष श्री सुरेशचंद डुंगरवाल व विजयराज दुग्गड़ एवं सहमंत्री श्री ज्ञानचंद काकलिया को बनाया गया।

श्री हस्तीमल खटोड़ जैन श्रीसंघ एवं समाज के अनेक पदों पर अपनी सेवायें दे रहे हैं। वर्तमान में श्री अखिल भारत नानक प्राज्ञ संघ तमिलनाडु के कार्याध्यक्ष पद पर एवं ऑल इंडिया जैन कॉन्फ्रेंस तमिलनाडु के प्रवक्ता मंत्री पद पर भी सेवा दे रहे हैं। वे मरुधर में थांवला निवासी खटोड एक कुशल संचालक एवं निडर वक्ता के रुप में पहचाने जाते हैं उन पर गुरु पन्ना व गुरुणी ज्ञान का आर्शीवाद हमेशा बना रहे।

प्रेषक : ज्ञानचंद काकलिया

पर्यावरण दिवस के अवसर पर श्रीसंघ द्वारा पौधा रोपण

बैंगलोर (कर्नाटक) : श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी बावीस सम्प्रदाय जैन संघ ट्रस्ट के परिसर मशहूर शिवाजी नगर स्थित गणेश बाग में **'एक पेड़ एक जिन्दगी'** के अंतर्गत 5 जून, 2017 को पर्यावरण दिवस के अवसर पर श्रीसंघ की ओर से 500 पौधे रोपित किये गये। जैन धर्म के सभी 24 तीर्थंकरों के अलग-अलग 24 पौधे हैं। जैन धर्म में अपने पौधों को तीर्थंकर वाटिका कहा जाता है। श्रीसंघ के सर्वश्री सुदर्शन मांडोत जैन, सुनील सांखला जैन, किशोर गादिया जैन, त्रिलोक कटारिया जैन, शांति लुनावत जैन एवं अन्य सदस्यगणों द्वारा यह कार्य सम्पन्न हुआ। परिवार में 1008 पौधे रोपित करने का लक्ष्य है। **प्रेषक : सुनील सांखला जैन**

गाजियाबाद में जैन संस्कार शिविर

गाजियाबाद (उत्तर प्रदेश) : जैन धर्म स्थानक पुफ्फभिक्खु भवन के प्रांगण में परम श्रद्धेय पूज्य गुरु श्री फूलचन्द जी म.सा के पावन आर्शीवाद से एवं परम श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री सुदर्शनलाल जी म.सा. के परम आशीष से श्री एस.एस. जैन सभा, गाजियबाद एवं श्री एस.एस. जैन सभा महिला द्वारा जैन संस्कार का आयोजन किया गया। इस शिविर को पावन सान्निध्य मिला, परम पूज्य कंठ कोकिला महासाध्वी पू. श्री रुति म. सा. एवं मधुर गायिका विद्याभिलाषी महासाध्वी पू. श्री पूर्णा जी म.सा. का जिनको श्री एस.एस. जैन सभा

गाजियबाद द्वारा एकासन तप साधिका की पदवी से अलंकृत किया गया। यह शिविर 22-06-2017 से 30-06-2017 तक लगाया गया जो आशा से अधिक सफलता पूर्वक चला। इसें 4 वर्ष की उम्र से 20 वर्ष तक के बच्चों को आमंत्रित किया। इन बच्चों को उम्र के ज्ञान, शिक्षा के अनुसार तीन कक्षाओं में विभाजित कर शिक्षा दी गई। प्रथम कक्षा : 4-7 वर्ष द्वितीय कक्षा 8-12 वर्ष तथा तृतीया कक्षा 13 से 20 वर्ष तक के बच्चों के लिये व्यवस्थित की गई। बच्चों के लिये नियमित समय तक पहुंचने पर पुरस्कार दिया जाता था। प्रतिदिन बच्चों को गरम अल्पोहार प्रदान किया जाता था। शिविर में 74 बच्चों ने जैन संस्कार की शिक्षा ली। प्रथम, द्वितीय और तृतीय कक्षा के बच्चों की किताबों में दी गई।

प्रथम कक्षाः- के बच्चों को णमोंकार महामंत्र तिक्खतों का पाठ, प्रार्थना, जैन ध्वज के रंग, पांच इन्द्रिया, जैन प्रतीक, जैन बाल की पहचान जंकफूड से हानि जैन पर्व आदि छोटे विषयों को कविता, चित्रों आदि के द्वारा सिखाया गया। **द्वितीय कक्षाः-** में मंगला चरण, जैन धर्म, भगवान पार्श्वनाथ, चंदन वाला, श्रावक के 12 व्रत, जैन साधु के 5 महाव्रत, शाकाहार लाभ आठ कर्म, जन तीर्थंकर आदि विषयों पर पठन पाठन किया गया। **तृतीय कक्षाः-** में सामयिक किसे कहते हैं जिन कोन, सामायिक को आठ पटिया आदि विषयों के विषय में विस्तार से पढ़ाया गया व याद कराया गया। जैन धर्म के सम्प्रदाय उनके साधु साध्वियों व आचार्य आदि विषयों पर प्रकाश ड़ाला गया। शिविर में सम्पूर्ण अध्यापन, व्यवस्था व संयोजन का कार्य बड़ी दक्षता के साथ श्रीमती रेनु जैन, डॉ. विद्युत जैन, श्रीमती शिखा जैन, श्रीमती साक्षी जैन, श्रीमती स्वाति जैन, श्रीमती प्रीति जैन, श्रीमती मीनू जैन, श्रीमती सुनीता जैन, श्रीमती रितु जैन, श्रीमती सीमा जैन, श्रीमती डिम्पल जैन, सरिका जैन कु. आयुषी जैन व कु. दीपाली जैन ने उत्साह वर्धक रुप से किया गया। शिविर बड़ी सफलता पूर्वक चला। बच्चों ने बड़े ही आनंदपूर्वक भाग लेकर जैन धर्म के संस्कार ग्रहण कर शुभ विचारों को पाया।

शिविर के अंतिम दिन भाग लेने वाले बच्चों को जैन संस्कार शिविर के प्रमाण-पत्र वितरित किये तथा तन,मन, धन से सहयोग देने वालों को प्रशस्ति-पत्र दिये गये। शिविर समापन समारोह में गाजियाबाद के मेयर श्री आशु वर्मा जी मुख्य अतिथि के रुप में पधारे दैनिक जागरण के ब्यूरो चीफ श्री राज कौशिक जी प्रमुख अतिथि द्वारा शिविर की भूरी-भूरी प्रशंसा की। महासाध्वी पू. श्री श्रुति जी म. ने प्रवचन फ़रमाया कि मैं आशा करती हूं कि जैन संस्कार शिविर प्रतिवर्ष इसी तरह लगता रहे। माह में एक दिन अवश्य लगना चाहिए। श्री एस.एस. जैन सभा के अध्यक्ष श्री जे.डी. जैन ने कहा कि महाराज श्री जी ने जो आदेश दिया है वह अवश्य पूरा होगा। सभा के बाद जलपान की व्यवस्था श्री अरिहंत जैन सुपुत्र श्री घनश्याम दास जैन व श्रीमती रेणु जैन द्वारा की गई। श्री सुशील कुमार जैन महामंत्री द्वारा जैन सभा के समस्त पदाधिकारियों एवं सदस्यगणों का धन्यवाद करते हुए शिविर सम्पन्न हुआ।

प्रेषक : सुशील कुमार जैन

पू. श्री मोहनमाला जी म. की दीक्षा षष्टि पूर्ति महोत्सव का ऐतिहासिक आयोजन

नई दिल्ली : श्रमणसंघ के ऐतिहासिक पृष्ठों पर अपनी श्रेष्ठ तपश्चर्या द्वारा अनेक कीर्तिमान अंकित कर देने वाली श्रमणी श्रेष्ठा, 311 व्रतों द्वारा विश्व कीर्तिमान संस्थापिका, तप सिद्धेश्वरी, तपाचार्या, तप विश्व शिरोमणि, उप-प्रवर्तिनी पूज्या महासाध्वी श्री मोहनमाला जी महाराज के उज्ज्वल संयम यात्रा की दीक्षा षष्टि पूर्ति

महोत्सव का आयोजन 4 जून 2017 को अति भव्य रूप से मानसरोवर पार्क, दिल्ली में किया गया । इस कार्यक्रम में श्रमण संघीय आचार्य प्रवर पू. श्री शिवमुनि जी म., उ.भा. प्रवर्तक, प्रज्ञा महर्षि पू. श्री सुमन मुनि जी म. के मंगलमय आशीर्वाद, श्रमणसंघीय मंत्री पू. श्री आशीष मुनि जी म. के पावन सान्निध्य का लाभ जहाँ प्राप्त हुआ वहीं उप-प्रवर्तक डॉ. सुव्रत मुनि जी म., नवकार साधक पू. श्री विचक्षण मुनि जी म., ओजस्वी वक्ता पू. श्री रमेश मुनि जी म., पू. श्री उदितराम मुनि जी म., पू. श्री मुकेश मुनि जी म., प्रवचन प्रभावक पू. श्री गौतम मुनि जी म., युवा मनीषी पू. श्री जागृत मुनि जी म. आदि ठाणा के अलावा साध्वीवृन्द में सेवा शिरोमणि महासती श्री स्नेहलता (मुन्नी) जी म., उ.प्र. महासती श्री सुशील कुमारी 'बेबी' जी म., प्रवचन प्रभाविका महासती श्री वीणा जी म., सरलमना महासती श्री गीता जी म., उ.प्र. महासती श्री राधा जी म., प्रवचन प्रभाविका महासती श्री कमलेश जी म., महासती श्री सुयशा जी म., प्रसन्नमना महासती श्री मंजुला जी म., श्रमणी ज्योति महासती श्री आरती ज्योति जी म., सेवाभावी महासती श्री मोक्षिता जी म., स्वाध्याय प्रेमिका साध्वी श्री आराध्या जी म. आदि ठाणा के दर्शन प्रवचन का लाभ भी उपस्थित जनसमुदाय को प्राप्त हुआ। इस ऐतिहासिक आयोजन के समारोह अध्यक्ष श्री सुशील कुमार जैन, मुख्य अतिथि श्री एस. एस. जैन ध्वजारोहणकर्त्ता श्री यशपाल जैन थे । जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष श्री शशिकुमार 'पिन्टू' कर्नावट जी जैन तथा राष्ट्रीय सुवा महामंत्री श्री रविन्द्र जी लोढा जैन के अलावा श्री सुभाष ओसवाल जी जैन, जैन कॉन्फ्रेंस दिल्ली प्रदेश अध्यक्ष श्री अतुल जी जैन, उत्तर प्रदेश अध्यक्ष श्री मनमोहनजी जैन, दिल्ली प्रदेश युवा अध्यक्ष श्री मनीष जी जैन व युवा महामंत्री श्री दीपक जी जैन के अलावा बड़ी संख्या में श्रद्धालुजन ने संयुक्त रूप से महासाध्वी पू. श्री मोहनमाला जी को 'श्रमण संघ गौरव निधि' अलंकरण से सम्मानित किया। इस अवसर पर दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा पंजाब से बड़ी संख्या में श्रद्धालुजनों ने भाग लिया।

इस समारोह के दौरान दिल्ली नगर निगम चुनावों में नव-निर्वाचित जैन पार्षद श्रीमती कनिका संदीप जैन (रोहिणी वार्ड सं. 25बी) तथा श्री निर्मल जैन (शाहदरा वाड़) का सार्वजनिक सम्मान भी किया गया। श्रीमती कनिका जैन ने पू. श्री मोहनमाला जी म. के आध्यात्मिक जीवन को जहाँ तनोमय जीवन की पराकाष्ठा के रूप में वर्णित करते हुए उनका गुणानुवाद किया। अनेक संत-सतीवष्न्द ने पू. श्री मोहनमाला जी म. का गुणानुवाद करते हुए जहाँ उनकी संयम यात्रा को श्रेश्ठ एवं उत्कृष्ट बताते हुए अनुकरणीय भी बताया वहीं उनकी तपः साधना को अद्वितीय रूप से उपमित किया। श्री शशिकुमार 'पिन्टू' जी जैन ने अपने विचार रखते हुए कहा कि हमारी राष्ट्रीय युवा शाखा ने इनका सम्मान नहीं किया अपितु आपके द्वारा स्वीकृत किया गया सम्मान हमारी युवा शाखा के महत्वपूर्ण क्षणों में शामिल हो गया है। आपने हमारे द्वारा प्रदत्त सम्मान को स्वीकार करके हमें एक नवीन ऊर्जा से ऊर्जित किया है। इसके लिए हम आपके आभारी हैं। आपश्री जी की संयम यात्रा अन्य अनेक उच्च सोपान को प्राप्त हो, ऐसी शुभाशंसा हम आपके प्रति प्रकट करते हैं। जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मोहनलाल चोपडा जी जैन किन्हीं व्यक्तिगत कारणों से इस महोत्सव में शामिल नहीं हो पाए लेकिन उन्होंने अपनी शुभकामनाएँ जैन कॉन्फ्रेंस की ओर से प्रेषित कीं। इस आयोजन को सफल बनाने में महासती श्री प्रवेश कुमारी जैन चैरिटेबल सोसायटी के संरक्षक श्री अशोक जैन 'जयचन्दा' व श्री पवन जैन, अध्यक्ष श्री अशोक गुप्ता, उपाध्यक्ष विंग कमांडर (रिटा.) श्री के. सी. जैन व श्री संजय जैन, महामंत्री श्री बिजेन्द्र जैन, मंत्री श्री संजय जैन व श्री कमल जैन, कोषाध्यक्ष डॉ. ए. के. सिंह तथा अन्य कार्यकारिणी सदस्य व नवयुवक मंडल सदस्यों के समर्पित सहयोग की प्रशंसा की गई। इस आयोजन की पूर्व संध्या पर 3 जून 2017 को सांय 5 बजे से, एक भक्ति संध्या का आयोजन किया गया जिसे अपने भक्ति गीतों से संगीतमय बनाया प्रसिद्ध स्वर कोकिला बबीता झांझरी ने। कार्यक्रम का संचालन श्री बिजेन्द्र जैन ने किया ।

प्रेषक : सहदेव जैन

जैन मीडिया क्लब का गठन प्रारम्भ, अगर आप जैन है तो अवश्य जुड़े

उज्जैन (मध्य प्रदेश) : समाज के ज्वलंत मुद्दों पर सक्रिय होकर कार्य करने वाली राष्ट्रव्यापी जैन मीडिया संगठन जैन मीडिया सोशल वेलफेयर सोसाइटी द्वारा देश भर में प्रत्येक शहर, जिला, तहसील, ग्राम स्तर पर जैन मीडिया क्लब का गठन करने जा रहे है। (समस्त सदस्यों को QR code verified ID card सुविधा उपलब्ध की जायेगी) जिसका मुख्य उद्देश्य जैन समाज के मुख्य आधार स्तम्भ की रक्षा करना और जैन धर्म का प्रचार प्रसार देश-दुनिया में करना होगा। जैन मीडिया सोशल वेलफेयर सोसाइटी के मुख्य मुद्दे इस प्रकार है जिनको अलग अलग स्थान के आधार पर आवश्यकतानुसार प्राथमिकता दी गयी है:-

1. संत सुरक्षा- विहार के दौरान संतो पर होने वाले हमलो से संतो को सुरक्षा प्रदान करवाने का लक्ष्य। 2. विहार के दौरान संतो के लिए विहार निवास ओर गौचरी, आहार की व्यवस्था हो सके ऐसे स्थान निर्माण या निर्धारण करना। 3. जैन समाज की मीडिया को केंद्र या राज्य सरकार द्वारा सम्मानीय नजरों से नही देखने के कारण जैन समाज की पत्र-पत्रिकाओं के पत्रकारों को सम्मान नही मिल पाता ना ही कोई शासकीय सुविधाये। हमारे पत्रकारों को भी शासकीय सुविधा और सम्मान का लाभ मिले इसके लिए प्रयासरत। 4. जैन धर्म को लेकर देश-दुनिया मे बहुत सी भ्रांतियां फैली हुई है आम जन को जैन धर्म की सच्चाई से अवगत करवाने मीडिया के माध्यम से। 5. जैन धर्म का बच्चा आज क्रिश्चियन स्कूलों में पढ़ रहा है जहां उनको आहार भोजन में मांसाहार के साथ निर्मित शाकाहार भोजन उपलब्ध करवाया जाता है एवं भोजन में अंडा आज आम हो चला है जिसको के राज्य सरकार द्वारा भी अनुमति है जिसके फलस्वरुप आज हमारे बच्चे (आने वाली पीढ़ी) रास्ता भटक रहे है। इस हेतु हमें देश भर के समस्त शहरों में जैन स्कूल का निर्माण करना एवं करवाना है। 6. आर्थिक रुप से कमजोर जैन भाईयो बहनो को रोजगार से जोड़ने हेतु प्रयास करना। 7. आर्थिक रूप से कमजोर जैन भाईयों बहनो को सस्ते इलाज उपलब्ध करवाना। 8. जैन तीर्थो को संरक्षण उपलब्ध करवाने के प्रयास करना। ताकि कोई भी जैन तीर्थ अन्य धर्म या सरकार के अधिग्रहण में ना जाये। 9. जीवदया के लिए निरंतर प्रयासरत रहेगा। 10. जैन धर्म की लड़कियों द्वारा अन्य धर्म मे जाकर शादी करना यह समाज का आज मुख्य मुद्दा है जिसके कारण समाज मे लड़कियों की कमी एवं अहिंसक समाज की बेटी एक हिंसक समाज का मुख्य अंग बन जाती है। इस हेतु संगठन निरंतर प्रयासरत।

प्रेषक : अशोक जैन लुनिया जैन

राष्ट्रीय युवा सम्मेलन हेतु प्रविष्टियां आमंत्रित

इंदौर (मध्य प्रदेश) : श्रवणबेलगोला के भगवान बाहुबली की प्रतिमा के पारंम्परिक द्वादशवर्षीय महामस्तकाभिषेक 2018 के आलोक में श्रवणबेलगोला में विविध कार्यक्रम आयोजित किये जा रहे हैं। उसी क्रम में दिनांक 28-29 अक्टूबर 2017 को "राष्ट्रीय युवा सम्मेलन" आयोजित किया गया है। इस सम्मेलन में सम्पूर्ण भारतवर्ष के समाज के युवा सादर आमंत्रित हैं। द्विदिवसीय इस युवा सम्मेलन में विद्वानों द्वारा युवाओं के व्यक्तित्व-विकास, एन्टरप्युनर डेवलपमेंट, स्टार्टअप, शाकाहार, रोजगार, अल्पसंख्यक, शिक्षा आदि अनेक विषयों पर चर्चा की जायेगी। सम्पूर्ण भारतवर्ष से विभिन्न क्षेत्रों के श्रेष्ठतम युवा प्रतिभाओं का चयन कर सम्मान किया जायगा। रात्रि में आकर्षक सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं चारुकीर्ति भट्टारक महास्वामीजी द्वारा निर्देशित "युवा महावीर 20 से 30 वर्ष" पर विशेष प्रस्तुति होगी। 29 अक्टूबर को प्रातः विंध्यागिरि पर्वत की ऐतिहासिक 5000 युवाओं

द्वारा "हेरिटेज वाक" होगी। इसमें सम्मिलित होने वाले सभी पांच हजार युवाओं को समिति द्वारा "टी-सर्ट एवं कैप" प्रदान की जायेगी। उक्त सम्मेलन के अतिरिक्त 30-31 अक्टूबर को दो-दिवसीय समीपस्थ क्षेत्रों की यात्रा करवायी जायेगी। युवाओं को अपने आवास नगर से बैंगलोर पहुंचना होगा। बैंगलोर से श्रवणबेलगोला एवं वापसी बैंगलोर तक वाहन सुविधा साथ ही आवास-भोजन व्यवस्था कमेटी द्वारा की जायेगी। समीपस्थ क्षेत्रों की यात्रा हेतु अलग से नामांकित करवाना होगा। उक्त सम्मेलन में सम्मिलित होने के इच्छुक समाज के युवा अपना नाम पूर्ण पता, मोबाइल, ई-मेल आईडी के साथ "हंसमुख जैन गांधी, संयोजक-राष्ट्रीय युवा सम्मेलन, 2017, महावीर ट्रस्ट, कीर्ति स्तंभ, रीगल चौराहा, इन्दौर (म.प्र.) मो. 93021 03513, डाक, ई-मेल hansmukhjaingandhi@gmail-com द्वारा प्रेषित करें, अपने नामांकन हो जाने की सूचना की प्रतीक्षा करें।

प्रेषक : पुनीत जैन

श्री जैनाचार्य देवेन्द्र महिला संस्थान द्वारा आयोजित दस दिवसीय 14वां शिविर सम्पन्न

उदयपुर (राजस्थान) : देवेन्द्र धाम में दस दिनों का शिविर आयोजित किया गया। विधायक श्री फूलसिंह मीणा ने कहा कि श्री जैनाचार्य देवेन्द्र महिला संस्थान ने बच्चों में जो संस्कार डालने का बीड़ा उठाया है वह आगे जाकर नये पौधे के रुप में पल्लवित होगा। बच्चों को दिये जाने वाले संस्कार उसके जीवन की दिशा तय करते है। नन्हें-नन्हें बच्चों ने शिविर के दौरान सीखें नृत्य की मनोहारी प्रस्तुति दे कर सभी का मन जीत लिया।

समारोह में बालिकाओं ने शिविर के दौरान सीखे योग एवं मार्शल आर्ट का प्रदर्शन किया। शिविरार्थी बालिका कामाख्या ने दस दिनों के दौरान अर्जित किये गये ज्ञान एवं अपने अनुभव साझा किये। समारोह में अतिथियों, सेवा सहयोगी एवं भामाशाहों सर्वश्री चन्द्र सिंह कोठारी, फूलसिंह मीणा, इन्दर सिंह मेहता, रंजना, मेहता, समाज सेवी किरणमल सावनसुखा, पूर्व जिलाधिकारी धर्मचंद नागौरी, सौ. सुशीला नागौरी, भुवाणा सरपंच सौ. संगीता जी, पूर्व संरपंच श्री अनिल जी, श्री भीमराज जी रांका, श्री सम्पत जी कोठारी, श्री गणेशलाल जी सहलोत, श्री विरेन्द्र जी डांगी, श्री गणेशलाल जी गोखरू, श्री मानसिंह जी रांका, श्री हीरालाल जी रांका को पगड़ी ओढ़ाकर एवं स्मृति चिन्ह प्रदान कर सम्मानित किया गया। महापौर श्री चन्द्रसिंह कोठारी ने कहा कि जीवन में नैतिकता नहीं है तो जीवन में संस्कार नहीं आ सकते हैं। जीवन में दिये जाये वाले संस्कार के अनुरुप ही बच्चे उसका आचरण करते हैं। दस दिवसीय शिविर में बालक-बालिकाओं द्वारा बनाये गये आर्ट एवं पेन्टिंग उत्पादों की प्रदर्शनी भी लगायी गई, जिसे आगन्तुकों ने मुक्तकंठ से सराहा। अंत में ममता रांका ने आभार ज्ञापित किया

प्रेषक : तारक गुरु जैन ग्रंथालय

धार्मिक शिविर में सीखें संस्कार

पाली (राजस्थान) : आचार्य रघुनाथ स्मृति जैन भवन, रुई कटला, पाली में श्रीवर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ की ओर से चल रहे बीस दिवसीय धार्मिक संस्कार शिविर का 5 जून 2017 को समापन समारोह आयोजित किया गया। शिविर में 135 शिविरार्थियों ने भाग लिया। जैन श्रावक संघ के श्री तारा चन्द जैन ने बताया कि शिविर में बालक-बालिकाओं को 24 तीर्थंकरों, 20 विहरमान, 63 शलाखा पुरुषों के नाम, सामायिक सूत्र, प्रतिक्रमण विधि सहित के साथ कई धार्मिक संस्कार सीखाये गये। वहीं आगमज्ञान से दशवैकालिक, उत्तराध्ययन सूत्र की गाथायें, 25 बोल, 67 बोल लघु दण्डक, गति अगति आदि थोकड़ों को सिखाया गया। शिविर में अनुशासन एवं विनयशीलता पर अत्यधिक जोर दिया गया। शिविर में प्रथम, द्वितीय और तृतीय कक्षा में रह शिविरार्थियों का सम्मान किया। तथा उत्साहवर्धन हेतु समस्त संयोजक प्रकाशचन्द

कटारिया ने कहा कि शिविर जीवन उत्थान का शानदार और जानदार अवसर है। शिविर को सफल बनाने में श्रीसंघ अध्यक्ष धनराज कांठेड़ जैन, उपाध्यक्ष, सज्जनराज गुलेच्छा, मंत्री रतनलाल लसोड कोषाध्यक्ष, नरेन्द्र पंच, केवलचंद धोका, महेन्द्र जैन कुशल सुराणा, श्रीमती मंजु कांठेड, मंजु मेहता, निर्मला तातेड़ कविता, जया, संगीता, दिव्य सालेचा, प्रिया पारख, रुचिता कांकरिया आदि ने सहयोग दिया।

प्रेषक : ताराचंद जैन

राशन वितरण समारोह का आयोजन किया गया

लुधियाना (पंजाब) : महिला शाखा भगवान महावीर सेवा सोसाईटी रजि. के द्वारा राशन वितरण समारोह सिविल लाईन्ज के जैन स्थानक में आयोजित किया गया। समारोह का शुभारंभ महामन्त्र नवकार के सामुहिक उच्चारण से शुरु हुआ। पंजाब प्रर्वतक उपाध्याय श्रमण पू. श्री फूल चन्द्र जी म. की पुण्य स्मृति पर 31 परिवारों को राशन वितरण किया गया। जिसका लाभार्थी परिवार श्रीमति पुष्पा जैन (पत्नी स्व. श्री प्रेम सागर जैन) श्री अरिम जैन-श्रीमति संगीता जैन Sharman Ji Fabrics Pvt. Ltd. है। महिला शाखा भगवान महावीर सेवा सोसाईटी की चयेरपर्सन आर्दश जैन, महामंत्री रीचा जैन ने बताया कि स्व. श्री प्रेम सागर जी का नाम अपने आप में ही एक समाज सेवा की भलाई के कार्यों में एक मिसाल कायम कर चुका है, उनके सुपुत्र श्री अरिम जैन एवं पुत्रवधु भी उसी श्रृंखला को बढ़ा रहे हैं। उन्होंने कहा यह हमारी सामाजिक जिम्मेवारी भी है जो कि परिवार आज असहाय महसूस कर रहे हैं, उनकी सहायता कर हम पुण्य का उपार्जन करें।

इस अवसर पर परिवार की ओर से पुष्पा जैन, अरिम जैन, संगीता जैन व अन्य परिवार के सदस्य एवं संस्थान के कार्यकारिणी सदस्य रीचा जैन, आदर्श जैन, रमा जैन, कविता जैन, सोनिया, रजनी, शालू, उपमा, भगवान महावीर सेवा संस्थान के उप-प्रधान राजेश जैन, सह-कोषाध्यक्ष सुनील गुप्ता आदि गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे ।

प्रेषक : रीचा जैन

हृदय जाँच कैम्प शिविर का आयोजन किया गया

लुधियाना (पंजाब) : भगवान महावीर सेवा संस्थान रजि. द्वारा आज स्व. श्रीमती पूनम गुप्ता (पत्नी डॉ. प्राण गुप्ता) की प्रथम पुण्य स्मृति पर गलोबल हार्ट के चीफ सर्जन डा ब्रजेश के. बधन, डी.एम. एवं उनकी टीम की देख-रेख में एक विशाल हार्ट कैम्प का आयोजन श्री जी शाईनिंग स्टार प्ले स्कूल, गुप्ता क्लीनिक के पीछे, हरगोबन्द नगर लुधियाना में किया गया। कैम्प में डॉ. शशिकांत एवं डॉ. प्रिक्षत ने मरीजों का चैक-अप कर अपना सहयोग दिया। जाँच कैम्प में लगभग 250 मरीजों ने कैम्प का लाभ उठाया। डॉ. ब्रजेश के. बधन डी.एम. ने कैम्प के आरम्भ में उपस्थित जनसमूह को सम्बोधित करते हुए बीमारियों से बचने के उपाय बताते हुए कहा कि एक स्वस्थ जीवन शैली अपनाएं नियमित व्यायाम करें, स्वस्थ भोजन खाएं, वजन पर नियंत्रण रखें, धुम्रपान से बचें, ब्लड प्रेशर, कोलेस्ट्राल और डॉईबेटीज़ सहित अन्य स्वास्थय स्थितियों पर निगरानी रखें, अगर परिवार में किसी को दिल की बीमारी है, तो आपकी होने की संभावना बढ़ जाती है, डाक्टर से चैक-अप करवाते रहें। डॉ. प्राण गुप्ता-अद्भुत गुप्ता परिवार की ओर से सभी डॉ. एवं स्टाफ को विशेष सम्मान चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। इस आयोजन पर अस्पताल का स्टाफ संदीप कौर, बलदीप कौर, परमिन्द्र सिंह, राहुल शर्मा, प्रमोद गुप्ता, श्री जी शाईनिंग स्टार प्ले स्कूल की प्रिंसीपल एवं स्टाफ का सहयोग रहा। इस अवसर पर भगवान महावीर सेवा संस्थान के प्रधान श्री राकेश जैन, उप-प्रधान श्री राजेश जैन, सहमंत्री श्री सुनील गुप्ता, रमा जैन एवं गुप्ता क्लीनिक के सटाफ मैंबर आदि अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

प्रेषक : राकेश जैन

श्री एस. एस. जैन सभा गुड़गांव के चुनाव सम्पन्न

गुरुग्राम (हरियाणा) : यह बड़े हर्ष की बात है कि एस. एस. जैन सभा, रेलवे रोड, गुड़गांव में आज हुए चुनाव में निम्न सज्जन सर्वसम्मति से चुने गए हैं। आगामी कार्यकारिणी के चुने गए मान्य सदस्यों का विवरणः- चेयरमैन एवं संरक्षक- श्री विजय जैन, प्रधान - समाज रत्न श्री प्रेम चंद जैन, वरिष्ठ उप प्रधान-श्री श्रीनिवास जैन, उप प्रधान - श्री विनोद जैन, श्री राम लाल जैन, श्री अनील जैन, मंत्री - श्री संदीप जैन, सह मंत्री- श्री हंसराज जैन, कोषाध्यक्ष - श्री रमेश जैन। यह कार्यकारिणी लगातार पाँच वर्षों से अपने कुशल और अथक परिश्रम से समाज के विभिन्न कार्यों को सुचारु रुप से संभाल रही हैं। विशेष सहयोग समाज के प्रधान, समाज रत्न श्री प्रेम चंद जैन का है जो न सिर्फ तन मन और धन से सेवा कर रहे हैं बल्कि समाज के हर व्यक्ति को साथ लेकर चलने मे अजब सूझबूझ रखते हैं। समाज के हर व्यक्ति ने इस कार्यकारिणी को निर्विरोध चुन कर समाज की एकता का एक सुदर उदाहरण पेश किया है। **प्रेषक : मनोज जैन**

सामाजिक एवं धार्मिक समारोहों में धन का आड़म्बर कम करें

नई दिल्ली : जैन समाज अपने समाजिक तथा धार्मिक समारोह में धन के आड़म्बर को कम करने की पहले करे। हमारे संतों के चातुर्मासों में भी हम धन का अपव्यय रोकें तथा इस बचत का उपयोग शिक्षा और सेवा के अधिक से अधिक केन्द्र स्थापित करने में करें। उपरोक्त उद्‌गार राज्सभा सदस्य श्री मेघराज जैन नें जैन महासभा दिल्ली द्वारा आयोजित अपने स्वागत समारोह में व्यक्त किए। जैन महासभा द्वारा अणुव्रत भवन नई दिल्ली में आयोजित समारोह में उन्होंने कहा कि जैन समाज को धार्मिक अल्पसंख्यक समाज के दर्जे से देश के बहुसंख्यक समाज के मन में सदेह पैदा हुआ है और यह समाज हित में नहीं है। इसलिए इस पर सार्थक चर्चा और पुनः चिंतन की जरुरत है। राजनीति में जैनों की भूमिका पर उन्होंने कहा कि समाज के प्रतिनिधि अपनी समाज सेवा, सक्रिय सम्पर्क तथा कर्मठता से ही राजनीति में आगे आ सकते हैं। आज देश के सभी वर्ग जैन संतों के संयम और त्याग से प्रभावित है। लेकिन इसमें कहीं-कहीं दोष प्रवेश करने की शिकायतें सुनने को मिलती है। इसके बारे में अपने संतों और साध्वियों को कहना चाहिए और उसमें सुधार करवाना चाहिए। श्रावक-श्राविकाओं को माता-पिता का दर्जा दिया गया है। अतः उन्हें ऐसा कहने और करवाने का हक है।

इस अवसर पर समारोह के अध्यक्ष श्री रिखबचंद जी जैन, पंजाब केसरी समूह के कार्यकारी अध्यक्ष श्री स्वदेश भूषण जी जैन, तेरा पंथ समाज के प्रमुख श्री श्री मांगीलाल जी सेठिया जैन, और श्वेताम्बर मूर्ति पूजक समाज के नेता श्री राजकुमार जी जैन आदि ने भगवान महावीर के सिद्धांतों पर अपने विचार व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि श्री मेघराज जी जैन की संसद में उपस्थिति से समाज को अपनी भावनाओं को कारगर ठंग से अभिव्यक्त करने में मदद मिलेगी।

महासभा के महासचिव प्रो. रतन जैन ने कहा कि जैन समाज सभी से मैत्री और सभी को जीने के अधिकार का पक्षधर रहा है। आज देश में गौ-हत्या बंद करने के पक्ष में सर्वसम्मति का माहौल बनता दिख रहा हैं। पूरे देश में शराब बंदी लागू हो, दिल्ली में अवैध पशु-पक्षी हत्या बंद की जाए, दिल्ली के स्कूलों में मिड-डे भोजन में अंड़ा देने के प्रस्ताव को निरस्त किया जाए।

इस अवसर पर अणुव्रत न्यास की ओर से आचार्य श्रद्धेय श्री महाप्रज्ञ जी द्वारा लिखित साहित्य न्यास के प्रमुख ट्रस्टी श्री सम्पत नाहटा, तेरापंथ सभा दिल्ली के अध्यक्ष श्री गोविंद बाफना एवं निवर्तमान अध्यक्ष श्री बिमल सुराणा द्वारा श्री मेघराज जैन जी को भेंट किया गया। समाज की ओर से श्री रिखब चंद जैन, श्री मांगी लाल सेठिया इत्यादि ने शाल उढ़ाकर उनका अभिनंदन किया। श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अविनाश जी चोरड़िया ने उन्हें पगड़ी पहनाई और प्रो. रतन जैन ने माल्यार्पण किया। सार्थक

चिंतनपूर्ण, सादे लेकिन गौरवपूर्ण कार्यक्रम में श्री शांति जैन, श्री ईश्वर भाभू, श्री विनोद बागरेचा, श्री दिनेश दोसी, श्री ललित नाहटा, श्री शुभकांत जैन, श्री अशोक जैन, श्री पंकज सेठ, श्री जय भगवान जैन, श्री नरेश जैन, श्री अमरचंद सेठिया, श्री विजय जैन, श्री राजेन्द्र जैन, श्री नानक चंद जैन, श्री संजय जैन सहित समाज के सभी वर्गों की प्रमुख संस्थाओं के पदाधिकारियों एवं सदस्यों ने भाग लिया। एक लम्बे समय के बाद दिल्ली के जैन समाज के सभी वर्गों के प्रतिनिधियों को लगभग ढ़ाई घंटे तक विभिन्न विषयों पर सार्थक और बेबाक चर्चा करने का अवसर मिला।

प्रेषक : रतन जैन

मंद बुद्धि बच्चों के लिए नेत्र जाँच शिविर का आयोजन किया गया

रोहिणी, दिल्ली : 26 मई, 2017 को चतुर्थ पट्टधर युग प्रधान आचार्य सम्राट पू. श्री डॉ. शिवमुनि म.सा. की दीक्षा जयंती पर मंद बुद्धि, आशा किरण अवंतिका रोहिणी सैक्टर-1 में गुरु शुक्ल जैन चैरिटेबल ट्रस्ट के माध्यम से लायन्स नया बाजार, चैरिटेबल सोसाइटी के सौजन्य से फ्री कैंप का आयोजन सेवा श्रमणी महासाध्वी पू. श्री श्रेया जी म.सा. के सानिध्य एवं प्रेरणा से किया गया। कैम्प का उद्घाटन दिल्ली समाज कल्याण विभाग के डिस्ट्रिक आफिसर श्री आनंद राय जी एवं श्रीमती इन्द्रा नाहर धर्मपत्नी श्री प्रकाश नाहर के कर कमलों से किया गया। इस शिविर में उन मंद-बुद्धि बच्चों की आँखों की जाँच एक विशेष आधुनिक मशीन से की गई जो कि भारत में मात्र कुछ ही अस्पतालों में उपलब्ध है। इस में लगभग 900 बच्चों के नेत्रों की जांच की गई। इस शिविर की कल्याण विभाग के उच्चाधिकारियों डॉ. रचना भारद्वाज, श्री पंकज कुमार आदि ने भूरी-भूरी प्रशंसा की। इस अवसर पर गुरु शुक्ल ट्रस्ट के पदाधिकारी एवं गुरु भक्त श्री राजपाल जैन (लायन), महामंत्री आदर्श नगर, ला. जगदीश राय जैन, श्री जे.पी. मित्तल, श्री विजय गर्ग, श्री सुशील जैन, श्री नंदीवर्धन (उप-प्रधान गुरु शुक्ल ट्रस्ट) आदि ने साक्षी बनकर अपनी-अपनी सेवाए/ सहयोग प्रदान किया।

महासाध्वी पू. श्री श्रेया म.सा. ने इस शिविर को एक महत्त्वपूर्ण प्रयास इन बंदबुद्धि बच्चों की नेत्र ज्योति सेवाओं के लिए बताया गया तथा यहां कार्यरत समस्त अधिकारियों, कर्मचारियों एवं सेवा में लीन लायन्स क्लब के सहयोगियों एवं गुरु शुक्ल ट्रस्ट के पदाधिकारियों को अपना विशेष आर्शीवाद प्रदान किया। शिविर में मोतिया बिन्द की जांच, चश्मों के नम्बर एवं दवाईयों का फ्री वितरण किया गया। डॉ. रचना ने बताया कि आशा किरण, मंद-बुद्धि गृह के बच्चों पर महासाध्वी पू. श्री श्रेया जी म. का विशेष आर्शीवाद है इन्होंने अपना जन्म दिन, दीक्षा दिवस भी इन्हीं बच्चों के साथ मनाया।

प्रेषक : नरेन्द्र जैन

पू. श्री रजतज्योति जी म. का भव्य चातुर्मास प्रवेश

अम्बाला (हरियाणा) : तपस्वी रत्ना पू. साध्वी श्री हेमकुंवर जी म. सा. की सुशिष्या, उप-प्रवर्तिनी साध्वी पू. श्री रजतरश्मि जी म. सा. आदि ठाणा 4 का **अम्बाला शहर, काशीनगरी** में भव्य चातुर्मास प्रवेश 30 जून 2017 को हुआ। इस अवसर पर लगभग 500 श्रद्धालुजनों ने शहर पहुंचने पर उनका भव्य स्वागत किया। शहर के विभिन्न मार्गों से होते हुए महाराज साहब श्री एस. एस. जैन सभा, महावीर भवन में पहुंचे, जहां पर यह जुलूस धर्मसभा में परिवर्तित हो गया।

प्रवचन सभा में महाराजश्री जी ने फरमाया कि चार महीने के लिए हम आपके शहर में वर्षावास करने हेतु आए हैं और आप सभी से निवेदन है कि पूज्य श्री कांशीराम जी म. सा. के पदचिन्हों पर चलकर अपने जीवन को सार्थक बनाएं और उनके कथन **'कम खाओ, गम खाओ, नम जाओं'** से धर्मसभा में जागृति उत्पन्न की। चातुर्मास प्रवेश के अवसर पर चातुर्मास समिति के प्रधान श्री धर्मपालजी जैन द्वारा चातुर्मास प्रवेश का भव्यातिभव्य बनाने में अहम भूमिका निभाई। प्रवेश के दौरान हरियाणा, पंजाब, उत्तर प्रदेश, दिल्ली, मंगलदेश आदि शहरों से भक्तजनों की काफी उपस्थिति सादर प्रार्थनीय रही।

प्रेषक : विमल जैन, राष्ट्रीय मंत्री

शोक समाचार

सुश्रावक श्री देवेन्द्र जी जैन स्वर्गवास

त्रिनगर, दिल्ली : धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री देवेन्द्र जी जैन सुपुत्र श्री सुरजभान जैन (ग्वालड़ा वाले) का दिनांक 09.03.2017 को देहांत हो गया। उनकी उम्र 50 वर्ष की थी। श्री देवेन्द्र जैन जी बहुत ही मिलनसार, मृदु स्वभाव के धनी थे। साधु-साध्वियों व समाज की सेवा में तत्पर रहते थे। धर्म ध्यान, सामायिक, जप-तप, धार्मिक व सामाजिक कार्यक्रमों में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेते थे। अचानक हुए आघात से ग्वालड़ा परिवार व जैन समाज को बहुत ही क्षति हुई।

शोक सभा रविवार दिनांक 12 मार्च, 2017 को जैन धर्मशाला, जैन स्थानक, वर्धमान वाटिका के सामने, त्रिनगर में आयोजित की गई, जिसमें धार्मिक, सामाजिक संगठनों के व्यक्ति अपनी श्रद्धांजलि देने आये। इस अवसर पर पू. श्री मुकेश मुनि जी म., हेमकुल दिवाकर पू. श्री ऋषभ मुनि जी म., पंडितरत्न शास्त्री पू. श्री उपेन्द्र मुनि जी. म., पू. श्री गौतम मुनि जी म., दिव्य साधिका पू. श्री रश्मि जी म., महासाध्वी पू. श्री मगनेश (गुड्डीजी) म., महासाध्वी पू. श्री रानी जी म. आदि अनेक संत-साध्वियों के शोक संदेश प्राप्त हुए, जिन्हें सभा में पढ़कर सुनाया गया। इस श्रद्धाजलि सभा में समाज के अनेक गणमान्य व्यक्तियों ने उपस्थित होकर ग्वालड़ा परिवार को अपने श्रद्धाभाव व्यक्त किये। आप अपने पीछे धर्म पत्नी श्रीमती शीला जैन, पुत्र श्री हिमांश जैन, पुत्री श्रीमती रेखा जैन एवं ध्योते से भरा पूरा परिवार छोड़ गये हैं। **प्रेषक : अशोक जैन**

डॉ.श्री पोपटलाल पन्नालाल जी कोठारी जैन का स्वर्गवास

श्रीरामपुर (महाराष्ट्र) : सेवाभावी ज्येष्ठ डॉक्टर पोपटलाल पनालाल कोठारी जी जैन का उम्र 83 वर्ष की आयु में देहांत हो गया। उनकी अंतिम इच्छानुसार कोठारी परिवार ने प्रवरा वैद्यकीय अस्पताल, लोणी, जिला अहमदनगर में देहदान किया। डॉ. पोपटलाल कोठारी नगर जिला तहसील अकोला के राजुर ग्राम आदिवासी परिसर में लगातार 41 वर्षों तक बीमारों की दिन-रात सेवा देते हुए सत्यनिकेतन संस्था के माध्यम से शिक्षण के क्षेत्र में वहां पर महाविद्यालय शुरु कराने में उनका बड़ा योगदान रहा। आदिवासी क्षेत्र में हर साल वैद्यकीय शिविर का आयोजन किया, डॉ. कोठारी जैन कॉन्फ्रेंस के सदस्य थे तथा वरिष्ठ मार्गदर्शक पत्रकार श्री रमेश कोठारी जैन के काकाश्री थे। स्व. श्री कोठारी अपने पीछे सुपुत्र सीए अतुल कोठारी, आनंद कोठारी, पुत्र वधु सौ. अनुपमा कोठारी, सौ. दीपा कोठारी, कन्या सौ. आशा बोरा, दामाद सुनिल बोरा, पोते-पोत्री से भरा पूरा परिवार है। आनंद देसर्डा और चार विवाहित बेटियां हैं। अपने पीछे भरा पूरा परिवार छोड़ गये हैं।

प्रेषक : रमेश कोठारी

श्री झंबुरलाल बंसीलाल देसर्डा जी जैन का स्वर्गवास

राहुरी, अहमदनगर (महाराष्ट्र) : जैन कॉन्फ्रेंस के सदस्य तथा सामाजिक कार्यकर्त्ता, किराणा व्यावसायिक श्रीमान झुंबरलाल बंसीलाल जी जैन देसर्डा का हृदय गति रुक जाने से निधन हो गया। उनकी उम्र 64 वर्ष की थी। स्व. झंबुरलाल देसर्डा, श्रीरामपुर जैन कॉन्फ्रेंस के वरिष्ठ मार्गदर्शक श्री मनसुखलाल उत्तमचंद

चोरडिया जी के बहनोई थे। राहुरी नगर व्यापार क्षेत्र में इनका कार्य था। इनकी पत्नी श्रीमती प्रेमकांता देसर्डा, माजी जिलाध्यक्षा, भारतीय जैन संघटना, अहमनगर तथा चिरंजीव आनंद देसर्डा और चार विवाहित बेटियां हैं। अपने पीछे भरा पूरा परिवार छोड़ गये हैं।

प्रेषक : रमेश कोठारी

धर्मनिष्ठ, सुश्रावक श्री ताराचंद जी जैन ढ़ाबरिया देवलोक गमन

अजमेर (राजस्थान) : धर्मनिष्ठ सुश्रावक, सरलमना, मिलनसार व्यक्तित्व के धनी श्री ताराचंद ढ़ाबरिया सुपुत्र स्व श्री हरकचंद जी ढ़ाबरिया जैन का स्वर्गवास दिनांक 12.06.2017 को हो गया। आपके प्रतिदिन सामायिक, प्रतिक्रमण, चौविहार आदि के त्याग थे।

देव-गुरु और धर्म के प्रति दृढ़ आस्था थी। आप सदैव साधु-संतों के दर्शनार्थ एवं सेवा-सुश्रुमा में तत्पर रहते थे। आपका सम्पूर्ण जीवन धर्ममय था। आप अपने पीछे भरा-पूरा परिवार छोड़ गये है।

प्रेषक : दिलीप ढ़ाबरिया

श्री सोहनचंद गादिया जी जैन सपुत्र स्व श्री तपसीराज गादिया (जोधपुर वाले) का स्वर्गवास

चेन्नई (तमिलनाडु) : श्री सोहनचंद गादिया सपुत्र स्व श्री तपसीराज गादिया (जोधपुर वाले) का आकस्मिक निधन 02.05.2017 को अपने कर्मक्षेत्र चेन्नई में हो गया।

साहुकारपेट में दिवंगत आत्मा को श्रद्धांजलि अर्पित की गई। श्रद्धांजलि सभा का संचालन करते हुए श्री नरेन्द्रकुमार जी कांकरिया ने श्री सोहनचंद गादिया के द्वारा स्वाध्याय भवन को प्रदान की जाने वाली निरंतर सेवा का उल्लेख करते हुए आचार्य पू. श्री हीराचन्द्र जी म. के 2005 के चेन्नई चातुर्मास काल में 121 आयम्बिल एवं उनके द्वारा की गई श्रीसंघ समाज की सेवा हेतु श्रीसंघ की ओर से हार्दिक साधुवाद ज्ञापित किया।

श्रीसंघ के पूर्व मंत्री श्री जवाहरलाल कर्नावट जैन ने दिवंगत आत्मा का जीवन परिचय सभा में रखा। श्री जयमल जैन श्रावक संघ एवं युवक परिषद की ओर से श्री के.एल. जैन दिवंगत आत्मा के विशिष्ट गुणों का उल्लेख किया। दिवंगत आत्मा ने नेत्र दान किये। पू. आचार्य श्री शुभचन्द्र जी म., आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म. उपाध्याय प्रवर पू. श्री मानचन्द्र म. व समस्त चरित्र आत्माओं के प्रति आगाढ़ आस्था थी।

प्रेषक : नरेन्द्र कांकरिया

धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती रुपकंवर बाई जी जैन का स्वर्गवास

बूंदी (राजस्थान) : धर्मनिष्ठ मृदुभाषी तपस्विनी श्राविका रत्न श्रीमती रुपकंवर बाई धर्म सहायिका श्रावक रत्न समाजसेवी श्री प्रेमचंद कोठारी जैन का 27.05.2017 को लगभग 84 वर्ष की उम्र में संथारापूर्वक समाधिमरण हो गया। काफी अरसे से अस्वस्थ थी।

आपने अपने जीवन में एक वर्षीतप सहित 31,37 व 60 उपवास की दीर्घकालीन तपस्यायें की। आप चरित्रनिष्ठ, शुद्ध व निर्मल आचार का पालन करने वाले संत-सतियों की सेवा में सदैव अग्रणी रही। एक पुत्री, तीन पुत्र, चार पौत्र व छः पौत्रियां सहित भरापूरा परिवार है। आपकी स्मृति में रु. 403000/- की राशि दान की।

प्रेषक : हेमंत डागा

दिवंगत आत्माओं के प्रति कॉन्फ्रेंस परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि

|| जय आत्म आनंद || || श्री महावीराय नमः || || जय सौभाग्य शिव ||

हार्दिक आमंत्रण

वर्षावास कल्प २०१७

प.पू.जागृतीजी म.सा.

प.पू.वत्सलश्री म.सा.

आचार्य जी ध्यानयोगी डॉ.प.पू. शिवमुनिजी म.सा. एवं आगमवेत्ता परमविदुषी प.पू.प्रवेशकुमारी जी म.सा.,
तपाचार्य तपचक्रेश्वरी उपप्रवर्तिनी श्री मोहनमाला जी महासती,
प्रवचन प्रभाविका श्री पुनितज्योति जी म.सा. इनके शिष्य परंपरासे महासाध्वी स्वाध्यायरत्न मधुरव्याख्याता
पू.श्री. जागृतिश्री जी म.सा.
तथा अध्ययनशील ध्यानसाधिका **पू.श्री. वत्सलश्री जी म.सा.** का मंगल
चातुर्मास का शुभ अवसर पिंपलगांव बसवंत श्री संघ को प्राप्त हुआ है,
जिससे श्री संघ के हर घटक में आनंद उल्हास की अनुभूती हो रही है ।
सभी संघो से श्री वर्धमान स्थानकवासी श्रमण संघीय जैन श्रावक संघ, पिंपलगांव
बसवंत की ओरसे विनम्र अनुरोध है की, सभी चातुर्मास कालीन धार्मिक आध्यात्मिक
गतिविधीयों में पधारकर जीनवाणी का अमृतपान करें तथा हमारे श्री संघ को साधर्मि सेवा
भक्ती का अवसर प्रदान करें ।

* स्वागतोत्सुक *

श्री वर्धमान स्थानकवासी श्रमणसंघीय जैन श्रावक संघ

पिंपलगांव (ब.)

राजेंद्र सोनी
महामंत्री

प्रमोद भटेवरा
उपाध्यक्ष

मनोज मुथा
अध्यक्ष

* कार्यकारीणी सदस्य *

शांतीलालजी चोरडीया, धनसुखजी भंडारी, सुभाषजी धाडीवाल, साहेबचंदजी पगारिया, शांतीलालजी धाडीवाल,
बन्सीलालजी छाजेड, शामलालजी बोरा, रविन्द्रजी चंडालिया जैन, नेमिचंद पारख,
एवं समस्त सदस्य, महिला मंडल, वृध्दी बहू मंडल, सुशील बहू मंडल
समाजभूषण स्व.सुवालालजी धाडीवाल युवक मंडल पिंपलगाँव बसवंत, जि.नाशिक (महा.)

संपर्क : 9822975631, 9822115647, 9175446311

श्रमण संघीय एवं जैन कॉन्फ्रेंस की आध्यात्मिक, सामाजिक गतिविधियाँ